।। ओ३म् ।।

पाक्षिक

परोपकारी

• वर्ष ५९ • अंक ९ • मूल्य ₹१५   महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र   • मई (प्रथम) २०१७

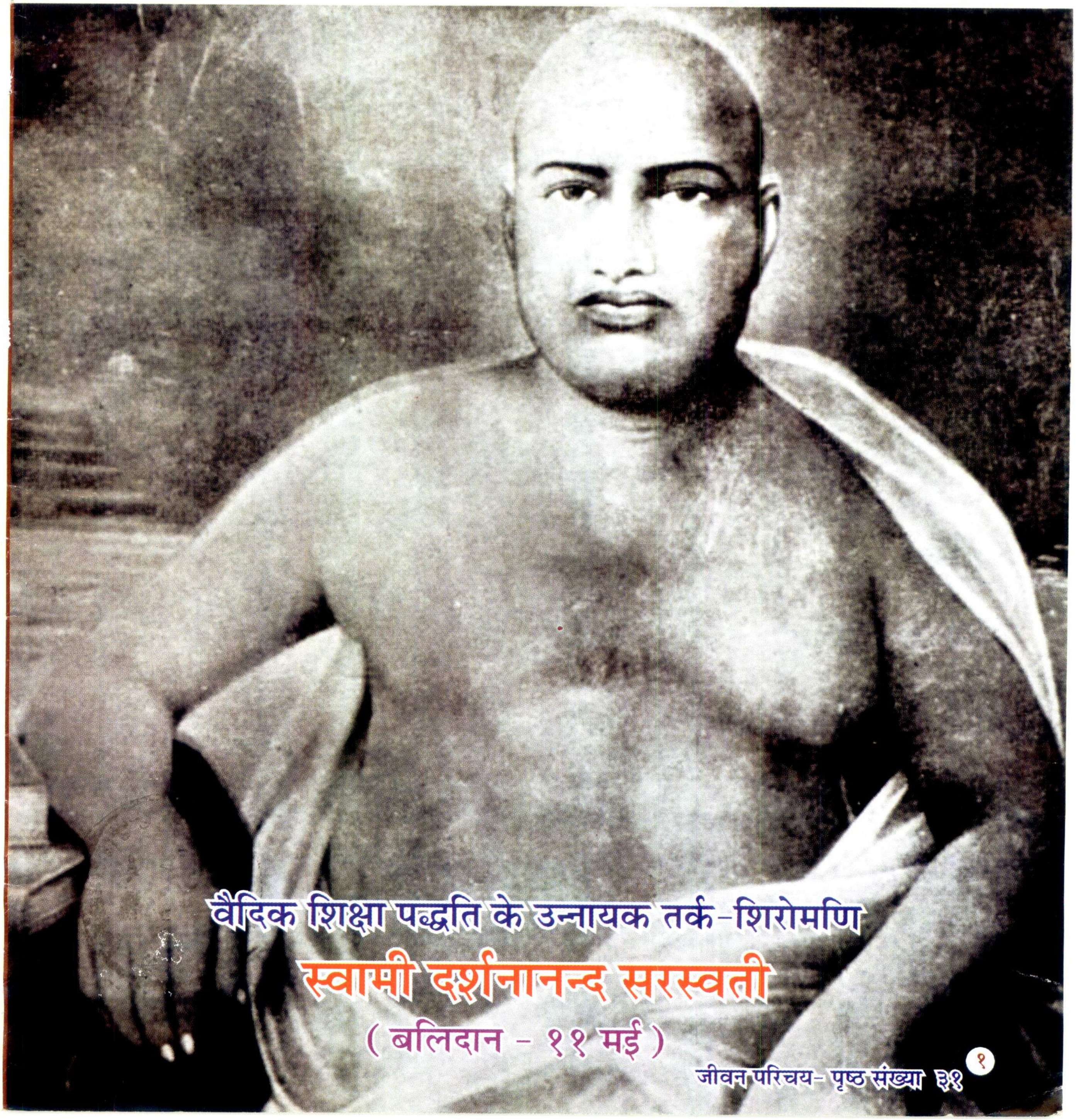

वैदिक शिक्षा पद्धति के उन्नायक तर्क-शिरोमणि

स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

(बलिदान - ११ मई)

जीवन परिचय- पृष्ठ संख्या ३१

परोपकारिणी सभा का नया प्रकाशन

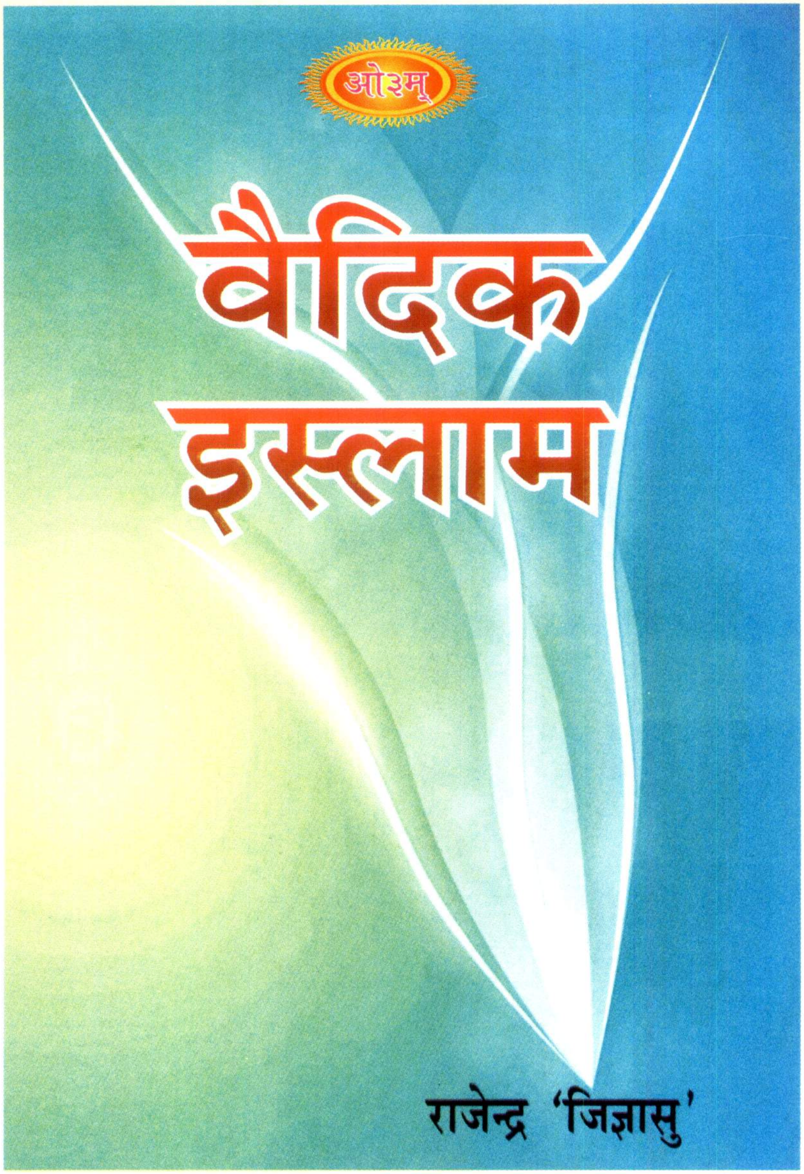

वैदिक सत्य-सिद्धान्तों को स्वीकार कर अपनी मान्यताओं में संशोधन करने वाले इस्लाम के नये रूप को उजागर करती तथा महर्षि दयानन्द का जयघोष करने वाली पुस्तक

पुस्तक परिचय- पृष्ठ संख्या ३०

महर्षि दयानन्द सरस्वती की
उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा
का मुख पत्र

वर्ष : ५९ अंक : ०९

दयानन्दाब्द: १९३

विक्रम संवत्: बैशाख शुक्ल २०७४

कलि संवत्: ५११८

सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११८

सम्पादक

डॉ. दिनेशचन्द्र शर्मा

प्रकाशक–परोपकारिणी सभा,
केसरगंज, अजमेर– ३०५००१
दूरभाष: ०१४५–२४६०१६४

मुद्रक–श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५–२४६०८३१

–परोपकारी का शुल्क–

भारत में

वार्षिक–२०० रु., **द्विवार्षिक**–३९० रु.,
त्रिवार्षिक–५८० रु.,
आजीवन–(=१५ वर्ष)–२००० रु.।
एक प्रति – १५/– रु.

विदेश में

वार्षिक–५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस.डालर
द्विवार्षिक–९५ पा./१५२ डा.,
त्रिवार्षिक–१४० पा./२२५ डा.,
आजीवन–(=१५वर्ष)–५००पा./८०० डा.
एक प्रति – ३ पाउण्ड
एक प्रति – ४ डालर

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५–२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५–२६२१२७०

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षा:,
सत्यव्रता रहितमानमलापहारा:।
संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा:।।

RNI. No. ३९५९/५९

परोपकारी

मई प्रथम २०१७

अनुक्रम

०१. ज्वलन्त प्रश्न – तीन तलाक	सम्पादकीय	०४
०२. संध्योपासना क्यों?	डॉ. धर्मवीर	०७
०३. कुछ तड़प–कुछ झड़प	प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु	११
०४. आर्यसमाज और हरिजन–समस्या	स्वामी सत्यप्रकाश	१६
०५. वह महामानव कौन था जिसने....	कन्हैयालाल आर्य	२०
०६. सफलता के सहयोगी	प्रकाश चौधरी	२६
०७. पुस्तक – समीक्षा	सोमेश पाठक	३०
०८. तर्कशिरोमणि महामुनि स्वामी.....	डॉ. वेदप्रकाश विद्यार्थी	३१
०९. संस्था–समाचार		३५
१०. शंका – समाधान – १	डॉ. वेदपाल	३८
११. आर्य–साहित्य के प्रकाशन में....	डॉ. सुरेन्द्र कुमार	४१
१२. आर्यजगत् के समाचार		४२

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

– उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं –
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

ज्वलन्त प्रश्न – तीन तलाक

भारत के संविधान के अनुच्छेद 44 में नीति निर्देशक तत्वों का उल्लेख है जिसमें कहा गया है कि भारत के सभी नागरिकों के लिए समान नागरिक कानून बनाने का दायित्व राज्य का होगा। यह एक सलाह के रूप में उल्लिखित है। यह संविधान 1950 में लागू किया गया और तब से आज तक विभिन्न प्रकार की समितियाँ, आयोग इत्यादि गठित किए गए लेकिन समर्थन और प्रतिरोध दोनों के बीच में भारत के सभी नागरिकों के लिए समान व्यवस्था का कोई भी सर्वसम्मत निर्णय नहीं लिया जा सका है।

आज का ज्वलन्त प्रश्न मुस्लिम महिलाओं के लिए तीन तलाक है। उल्लेखनीय है कि उत्तराखण्ड में काशीपुर निवासी 42 वर्षीया सायरा बानो ने सबसे पहले सर्वोच्च न्यायालय में तीन तलाक, निकाह-हलाला तथा बहु-विवाह के प्रावधानों को चुनौती दी। यही वह याचिका थी जिससे केवल मुस्लिम समाज में ही नहीं अपितु तथाकथित धर्म-निरपेक्षता का दावा करने वाली राजनीतिक पार्टियाँ और उनके पोषक बुद्धिजीवियों में हाहाकार मच गया। मुस्लिम समाज के प्रमुख मौलवी, उलेमा इस बात का दावा करते हैं कि ये परम्पराएँ शरीयत के अन्तर्गत हैं और इनमें परिवर्तन से उसके मूलभूत अधिकारों का अतिक्रमण होगा। ध्यातव्य है कि शरीयत में संशोधन आजादी से पूर्व कितनी ही बार हो चुका है। सन् 1772 में वारेन हेस्टिंग्स के समय में मुस्लिम कोड बिल तैयार किया गया तो काजी के स्थान पर अंग्रेज जजों ने उस अधिकार को लिया। सन् 1843 में शरीयत में उल्लिखित गुलाम-प्रथा को समाप्त किया गया। सन् 1860 में इस्लामी अपराध कानून के स्थान पर भारतीय दण्ड संहिता (इंडियन पेनल कोड) को लागू किया गया। सन् 1861 में जाब्ता फौजदारी कानून (क्रिमिनल प्रोसिजर कोड) तथा 1872 ई. में साक्षी अधिनियम (एविडेंस एक्ट) लागू किया गया। यही नहीं मुस्लिम महिलाओं की गवाही पुरुषों की गवाही के बराबर मानने का प्रावधान भी किया गया। पहले दो महिलाओं की समान गवाही को एक पुरुष की गवाही के बराबर माना जाता था। 1882 ई. में जाब्ता दीवानी (सिविल प्रोसिजर कोड) तथा सम्पत्ति हस्तान्तरण अधिनियम (ट्रान्सफर प्रॉपर्टी एक्ट) सभी के लिए बनाया गया। ध्यान देने योग्य बात यह है कि विश्व के कितने ही मुस्लिम देश शरीयत को विदाई दे चुके हैं। इण्डोनेशिया में एक प्रान्त को छोड़कर शेष भाग में हॉलैण्ड के डच बोर्ड के आधार पर सिविल लॉ बनाया गया। तुर्की में स्विस कोर्ट के आधार पर कानून बनाया गया। जबकि मिस्र के कानून फ्रांस के आधार पर बने हैं। ताजिकिस्तान, किर्गिस्तान, कजाकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान एवं पश्चिम अफ्रीका के कई मुस्लिम देशों में शरीयत लागू नहीं होती। ईरान, पाकिस्तान, सीरिया, लेबनान और ट्यूनीशिया में भी व्यापक स्तर पर परिवर्तन किए गए हैं और भारत के गोवा प्रान्त में तो एक समान नागरिक कानून मुसलमानों सहित सभी जनता पर लागू है..... रूस, चीन, जापान, कोरिया, श्रीलंका, म्यांमार, यूरोपीय देशों और अमेरिका को मिलाकर 150 से अधिक देशों में सब पंथों, धर्मों के लोग समान कानून के अंतर्गत रहते हैं, फिर भारत में क्यों नहीं रह सकते।

यह देखा गया है कि इस्लाम में तलाक को निन्दनीय और अवांछनीय माना गया है। जिसमें तलाक के उपरान्त तलाकशुदा स्त्री के भरण-पोषण और बच्चों के विकास के लिए उचित प्रबन्ध होना चाहिए। लेकिन वर्तमान में मोबाइल, स्पीड पोस्ट से, पत्र द्वारा या दूरभाष पर ही तलाक-तलाक-तलाक कहकर शरीयत कानून के तहत तलाक की इतिश्री समझ ली जाती है। आज मुस्लिम महिलाओं के हक-हकूकों के साथ गहराई और व्यापकता के साथ विचार-विमर्श किया जा रहा है और यह तब और प्रासंगिक हो गया है जबकि केन्द्र और उत्तर प्रदेश में भाजपा की सरकार है जिसमें उन्होंने चुनाव प्रचार के मध्य तीन तलाक पर विचार किए जाने का उल्लेख किया था। मानवीय दृष्टिकोण से विचार किया जाये तो पुरुष और नारी के मध्य बराबरी का हक है इसलिए केवल तलाक-तलाक-तलाक मात्र कह देने से जीवनसाथी को पृथक् किया जाना वर्तमान परिप्रेक्ष्य में न्यायसंगत नहीं होगा। अत: बुद्धिजीवियों, न्यायविदों, धर्म-सुधारकों और सोशल एक्टिविस्टों को इस विषय में जागरूक होकर इसका न्यायसंगत समाधान निकालना ही होगा। विधि आयोग के अध्यक्ष एवं पूर्व न्यायमूर्ति बलवीर सिंह चौहान द्वारा वर्तमान समय में इसे प्रासंगिक मानते हुए संविधान के अनुच्छेद 21 पर बहस किये जाने का सुझाव दिया गया है। क्योंकि इसके अंतर्गत नागरिकों के जीवन के संरक्षण और उनकी निजता की स्वतंत्रता सुनिश्चित की जाती है।

संविधान में जब धर्म, पंथ, जाति और लिंग के आधार पर भेदभाव न किए जाने का प्रावधान किया गया है तब

सायरा बानो की याचिका पर अक्टूबर 2015 में माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा संज्ञान लिया गया। यह आज के ज्वलंत प्रश्न की प्रासंगिकता को स्वयं रेखांकित कर देता है। यह भी आश्चर्य का विषय है कि केन्द्र सरकार के अतिरिक्त अन्य दलों ने इस विषय में लिखित में अपना मत न तो विधि आयोग को प्रस्तुत किया और न ही माननीय सर्वोच्च न्यायालय को ही प्रेषित किया है। यह स्पष्टतः उनकी इस विषय पर अवधारणा को स्पष्ट करता है, जो वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समीचीन नहीं कही जा सकती।

उपर्युक्त विवरण के आधार पर यदि भारत में समान आचार संहिता पर सर्वसम्मति से विचार किया जाता है तो कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। सायरा बानो ने सर्वोच्च न्यायालय में याचिका दायर करके मुस्लिम पर्सनल लॉ (शरीयत) एप्लिकेशन एक्ट 1937 के अनुच्छेद 2 की संवैधानिक स्थिति पर सवाल खड़ा किया है। यही वह एक्ट है जिसके जरिए शरीयत एक से ज्यादा शादियों, तीन तलाक और निकाह हलाला जैसी रवायतों को जायज ठहराती है। याचिका में मुस्लिम विवाह एक्ट 1939 के बेमानी होने की बात भी कही गई है।

यह वास्तव में चिन्तनीय प्रश्न है कि मुस्लिम महिलाओं की प्रस्थिति अन्य भारत की महिलाओं के समान क्यों नहीं होनी चाहिए, यह मानवाधिकार के अन्तर्गत आता है। भारतीय संस्कृति प्राचीन काल से महिला और पुरुषों को समान अधिकार के रूप में स्वीकार करती रही है। यहां तक कि विवाह-विच्छेद (तलाक) का स्पष्ट शब्द वहाँ उल्लिखित नहीं है। हाँ, विशेष शर्तों के साथ एक विवाह के बाद दूसरा विवाह करने की परम्परा मौर्य काल में प्रचलन में थी। सुप्रीम कोर्ट द्वारा केन्द्र सरकार से इस बाबत मांगी गई टिप्पणी में केन्द्र सरकार ने स्पष्ट सूचित किया कि तीन तलाक मुस्लिम महिलाओं की गरिमा (डिग्निटी) सामाजिक स्तर (सोशल स्टेटस) पर प्रभाव डालता है जिससे संविधान में मिले उनके मूलभूत अधिकारों की अनदेखी होती है। भारत की कुल आबादी में मुस्लिम महिलाओं की हिस्सेदारी 8 प्रतिशत है। केन्द्र सरकार ने यह भी कहा कि लैंगिक असमानता का बाकी समुदायों पर दूरगामी असर होता है। यह बराबर की साझेदारी को रोकती है और संविधान में दिए गए हक से भी रोकती है। मुस्लिम महिलाएं तीन तलाक और ज्यादा शादियों के भय से डर और खतरे में जीती हैं। केन्द्र सरकार ने तीन तलाक निकाह, हलाला और कई शादियों जैसी प्रथाओं का विरोध किया है। इस विषय में इस्लामिक देशों में अपनाये जा रहे कानून का भी केन्द्र सरकार ने उल्लेख किया है।

इस सम्बन्ध में मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड ने उक्त प्रावधानों से शरीयत का बचाव किया है। उसने तर्क दिया है कि महिला की हत्या होने की अपेक्षा उसे तलाक दिया जाये, यही ठीक है और धर्म में मिले हुए हकों पर कानून की अदालत में सवाल नहीं उठाये जा सकते। स्पष्टतः मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड तथा अन्य संस्थाएं तीन तलाक, निकाह हलाला और बहुविवाह की परम्परा को शरीयत के अनुसार ठीक मानती हैं।

यह भी जानने के योग्य है कि शिया पर्सनल लॉ बोर्ड ने केन्द्र सरकार द्वारा दी गई राय का समर्थन किया है। उन्होंने कहा है कि शिया पर्सनल लॉ बोर्ड महिलाओं की गरिमा और उनकी सामाजिक स्थिति को बराबरी की दृष्टि से मानता है।

महर्षि दयानन्द ने संस्कारविधि में 16 संस्कारों के अंतर्गत 13वें संस्कार में विवाह संस्कार का विस्तार से विवरण दिया है। जिसमें उन्होंने तलाक जैसी किसी प्रथा को स्वीकार न करते हुए एक पत्नीव्रत की परम्परा को मानते हुए नारी के सम्मान और उसकी गरिमा को अक्षुण्ण रखने का संदेश दिया है। आर्य समाज अपनी मान्यताओं में भी केवल हिन्दू महिलाओं की ही नहीं अपितु सभी नारियों के प्रति आदर और सम्मान का भाव रखते हुए उनकी गरिमा को किसी भी प्रकार क्षति पहुंचाने को स्वीकार नहीं करता। आज इसी विचार की आवश्यकता है कि हम मुस्लिम समाज के अधिकृत मौलानाओं, उलेमाओं और मुफ्तियों को वैचारिक दृष्टि से संतुष्ट करने का प्रयास करें कि वे आगे आएँ और आज 21वीं सदी में बहन-बेटियों पर होने वाले एतद्विषयक अत्याचारों एवं कष्टों से उन्हें बचायें तथा स्वेच्छा से उसमें संशोधन करें ताकि मुस्लिम महिलाएँ गरिमा और सामाजिक सम्मान की दृष्टि से अपने जीवन को समान रूप से व्यतीत कर सकें। यद्यपि 11 मई से सर्वोच्च न्यायालय की संविधान पीठ में यह सुनवाई होगी ताकि इन प्रथाओं की संवैधानिक वैधता पर विचार किया जा सके।

विधि आयोग ने भी इस बाबत सभी नागरिकों, मुस्लिम संगठनों आदि से 16 सवाल किए हैं-

1. क्या आप जानते हैं कि अनुच्छेद-44 में प्रावधान है कि सरकार समान नागरिक आचार संहिता लागू करने का प्रयास करेगी?

2. क्या समान नागरिक आचार संहिता में तमाम धर्मों के निजी कानूनों प्रथागत या उसके कुछ भाग शामिल हो

सकते हैं, जैसे शादी, तलाक, गोद लेने की प्रक्रिया, भरण-पोषण, उत्तराधिकार और विरासत से सम्बन्धित प्रावधान?

3. क्या समान अधिकार आचार संहिता में निजी कानूनों और प्रथाओं को शामिल करने से लाभ होगा?

4. क्या समान नागरिक आचार संहिता से लैंगिक समानता सुनिश्चित होगी?

5. क्या समान नागरिक आचार संहिता को वैकल्पिक किया जा सकता है?

6. क्या बहुविवाह प्रथा, बहुपति प्रथा, मैत्री करार आदि को खत्म किया जाए या फिर नियंत्रित किया जाए?

7. क्या तीन तलाक की प्रथा को खत्म किया जाए या रीति-रिवाजों में रहने दिया जाए या फिर संशोधन के साथ रहने दिया जाए?

8. क्या यह तय करने का उपाय हो कि हिन्दू स्त्री अपने सम्पत्ति के अधिकार का प्रयोग बेहतर तरीके से करे, जैसा पुरुष करते हैं? क्या इस अधिकार के लिए हिन्दू महिला को जागरूक किया जाए और तय हो कि उसके सगे-सम्बन्धी इस बात के लिए दबाव न डालें कि वह सम्पत्ति का अधिकार त्याग दे।

9. ईसाई धर्म में तलाक के लिए दो साल की प्रतीक्षा अवधि सम्बन्धित महिला के अधिकार का उल्लंघन तो नहीं है?

10. क्या तमाम निजी कानूनों में उम्र का पैमाना एक हो?

11. क्या तलाक के लिए तमाम धर्मों के लिए एक समान आधार तय होना चाहिए?

12. क्या समान नागरिक आधार संहिता के तहत तलाक का प्रावधान होने से भरण-पोषण की समस्या हल होगी?

13. शादी के पंजीकरण को बेहतर तरीके से कैसे लागू किया जा सकता है?

14. अंतरजातीय विवाह या फिर अंतर्धर्म विवाह करने वाले युगलों की रक्षा के लिए क्या उपाय हो सकते हैं?

15. क्या समान नागरिक आचार संहिता धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकार का उल्लंघन करती है?

16. समान नागरिक आचार संहिता या फिर निजी कानून के लिए समाज को संवेदनशील बनाने के लिए क्या उपाय हो सकते हैं?

ये सभी बिन्दु भी विचार-विमर्श की अपेक्षा रखते हैं।

मुस्लिम मत के विद्वानों को भी यह स्वीकार करना चाहिए कि वे यद्यपि कुरान शरीफ को ईश्वरीय ग्रन्थ मानकर उसे अपरिवर्तनीय मानते हैं, परन्तु उससे इतर मुख्यत: हदीसों के आधार पर निर्मित शरीयत कानूनों पर उन्हें हठ और दुराग्रह त्याग देना चाहिए। ऐसी स्थिति में तो और भी कि जब विश्व के अनेक इस्लामी देश और शिक्षा सम्प्रदाय इसे उचित नहीं मानता। ध्यान रहे कि प्रकृति स्वयं अन्याय सहन नहीं करती और समयानुसार स्वत: न्याय कर देती है। बहुत पहले अकबर इलाहाबादी ने कहा था-

बिठाई जाएँगी पर्दों में बीवियाँ कब तक।
बने रहोगे तुम घर में '**मियाँ**' कब तक।।

स्त्री-पुरुष समानता का उपदेश प्राकृतिक एवं शाश्वत है। अत: शास्त्रों का यह उपदेश अत्यन्त समीचीन है-

अर्धं भार्या मनुष्यस्य भार्या श्रेष्ठतमः सखा

एवम्

यस्यां भूतं समभवद् यस्यां विश्वमिदं जगत्।
तामद्य गाथां गास्यामि या स्त्रीणामुत्तमं यशः।।

- (महाभारत)

एक ही समाज में साथ-साथ रहने वाले नागरिकों (स्त्रियों) में एक को विशेष अधिकार प्राप्त हों और दूसरे को पैर की जूती समझा जाए, तो लोकतन्त्र में विद्रोह के स्वर मुखर होने और क्रान्ति होने की संभावना को कोई रोक नहीं सकता। मुस्लिम महिलाएँ हिन्दू महिलाओं और अन्य मतों की महिलाओं को गृहस्वामिनी और 'साम्राज्ञी' के पद पर आसीन देखेंगी और स्वयं को द्वितीय श्रेणी का नागरिक अपने घर में, अपने मज़हब के अनुसार पाएँगी, तो स्वाभाविकत: विद्रोह की भावना प्रबल होगी। धर्म और मज़हब यदि मनुष्य को उन्नति और समानता का पाठ नहीं पढ़ाते तो वे अप्रासंगिक हैं।

आर्यसमाज यद्यपि वेदज्ञान को शाश्वत मानता है, जिसमें सभी के यथायोग्य कर्त्तव्यों एवं अधिकारों का समुचित वर्णन है, पुनरपि आधुनिक भारत के संविधान के अंतर्गत उल्लिखित नियमों-विनियमों की बाध्यता भी स्वीकार करता है, क्योंकि यह संविधान लोककल्याणकारी और हमारे द्वारा अंगीकृत है। लेकिन यदि संविधान की कुछ धाराएँ अस्पष्ट और विभेदकारी हैं और सरकार उसमें जनकल्याण की दृष्टि से कुछ संशोधन करना/कराना चाहती है, तो हमें उसे स्वीकार करना चाहिए। इसमें असमानता के आधार पर आधी जनसंख्या को प्रताड़ित करने जैसा कुछ नहीं होना चाहिए।

- दिनेश

संध्योपासना क्यों?

प्रवचनकर्त्ता - डॉ. धर्मवीर

लेखिका - सुयशा आर्य

यह लेख आचार्य धर्मवीर जी द्वारा बिलासपुर (छत्तीसगढ़) में दिये गये प्रवचन का संकलन है। ये प्रवचन एक निश्चित विषय पर दिये गये हैं, इसलिये अति उपयोगी हैं। इन प्रवचनों को आचार्य प्रवर की ज्येष्ठ पुत्री सुयशा आर्य द्वारा लेखबद्ध किया गया है। - **सम्पादक**

आदरणीय प्रधान जी, मन्त्री जी, उपस्थित माताओ, बहनो, बन्धुओ! बनिए तो बहुत देखे, पर सुधीर जैसा नहीं मिला, आना था एक कार्यक्रम में पर वो कहने लगे कि एक दिन पहले आ रहे हो तो कार्यक्रम रख लेते हैं। मैंने कहा, खाली नहीं रहना चाहिए कोई आदमी। मैं तो इससे डरता हूँ कि मैं १० साल से आपको बता रहा हूँ, नया क्या बताऊँगा। लेकिन चलिए, दोहराने में भी कोई बुराई नहीं है। आपने प्रश्न रखा है, संध्योपासना क्यों और कैसे? कोई भी काम जब हम करते हैं तो पहले यह प्रश्न आता ही आता है कि हम यह क्यों करें? हम किसी से भी कहते हैं- संध्योपासना करो, तो वो कहता है-क्यों करें? बच्चों को भी कहते हैं तो पूछते हैं, क्यों करें? किसी दुकानदार को कहते हैं तो वह कहता है, अरे क्या संध्योपासना, दुकान पर बैठेंगे तो दो ग्राहकों का काम होगा। अत: किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व उस कार्य की आवश्यकता अनुभव होनी चाहिए। यदि आवश्यकता अनुभव नहीं होती तो न उसे आप कर सकते, न करवा सकते और यदि किसी की आवश्यकता अनुभव होने लगे तो आप उसे मना भी करेंगे और रोकेंगे तो भी वो नहीं मानेगा, उसे करेगा ही। तो पहली चीज यह देखते हैं कि क्या संध्या करने की हमें कभी आवश्यकता अनुभव होती है?

सबसे पहले देखिए कि संध्या शब्द क्या कहता है- सम् कहते हैं 'भली प्रकार' और 'ध्य' का अर्थ होता है चिन्तन करना, विचार करना, भली प्रकार से ध्यान करना और दूसरा इसका नाम इसलिए भी संध्या है कि ये सन्धिकाल में किया जाने वाला कार्य है। अब सन्धिकाल तो हर क्षण है। एक क्षण से दूसरे क्षण के बीच का जो समय है, वो उन दोनों का सन्धिकाल है। घंटे से घंटे के बीच का समय है, वो सन्धिकाल है। परन्तु जो मुख्य सन्धिकाल है, अर्थात् काल के दो बड़े विभाग हैं-एक दिन और एक रात। उन दोनों के सन्धिकाल को संध्या का काल कहा जाता है।

दोनों की सन्धि होती है इसीलिए वो संध्या है, संध्या समय है। जैसे हम कहते हैं यह काम संध्या समय करने का है, तो सायंकाल करने का है। संध्या समय तो दोनों समय हो सकता है। प्रात:काल दिन के प्रारम्भ की और रात के अन्त की सन्धि है। ये दोनों संधिकाल हमारे लिए संध्या करने के लिए चुने गए हैं। ये इसलिए चुने गए हैं कि हमारा कार्य से और समय से एक ताल-मेल है। काम का भी विभाजन है और समय का भी विभाजन है। अर्थात् जब रात शुरू होती है तो रात के काम अलग और दिन जब प्रारम्भ होता है तो दिन के काम अलग। एक व्यक्ति रात भर विश्राम करता है, घर में रहता है, दिनचर्या करता है, लेकिन सवेरे जब उठता है तो जागने के काम शुरू हो जाते हैं। वो समाज के, घर के, व्यक्ति के, व्यवसाय के कामों को करता है। दो अलग-अलग काम उसके जीवन से बन्धे हुए हैं। एक का प्रारम्भ और एक की समाप्ति उन दोनों की सन्धि है। काल की दृष्टि से '**सन्धि**' और ध्यान की दृष्टि से सम्यक् ध्यान के कारण 'संध्या' और जो दो सन्धियों का काल है इसके कारण भी संध्या। हमारे ऋषियों ने दो समयों को चुना है कि दो समय हमको संध्या करनी चाहिए। सम्यक् ध्यान करना चाहिए। पहले तो इसको यूँ समझ लीजिए कि जब एक काम पूरा हो जाए, तो उस पर विचार कर लेना चाहिए कि इसमें कोई भूल, कोई त्रुटि तो नहीं हुई। दूसरा यह होना चाहिए कि जब कोई कार्य प्रारम्भ किया जाए तो उस पर भी विचार हो जाना चाहिए कि इसको कैसे किया जाए। ताकि इसमें कोई त्रुटि न हो। यदि ये दो बातें हो जायें तो वो काम कम से कम त्रुटि वाले होंगे। एक नियम है कि आप जिस काम को करना चाहते हैं, उस पर आपने यदि चिन्तन किया हुआ है, उसकी

विधि पर विचार किया हुआ है तो आपको कोई असुविधा नहीं होगी। अकस्मात् करना पड़े तो कई समस्यायें पैदा हो सकती हैं। कुछ भूल सकता है, कुछ अतिरिक्त आ सकता है। इसी तरह जब कोई काम हो जाता है तो उसके बारे में यदि व्यक्ति चिंतन करता है, उसका सबसे बड़ा लाभ यह होता है कि उसमें यदि कोई त्रुटि हो जाती है तो भविष्य में वो त्रुटि नहीं होती है।

चिंतन का एक नियम है, जैसे आप किसी चर्चा को सुन रहे हैं, आप चर्चा सुन तो रहे हैं, लेकिन यह चर्चा आप वास्तव में ग्रहण कर रहे हैं या नहीं, इसका बोध तब होता है, जब आपके सामने कहा हुआ विचार आपके मस्तिष्क में दोबारा आ जाए। आपका ध्यान उस पर दोबारा चला जाए तो वो चीज फिर भूलती नहीं है। हम भाषण में बहुत बातें सुनते हैं, लगता है कि हम सुन रहे हैं, वास्तव में हम सुनने की परिस्थिति में होते ही नहीं, क्योंकि सुनता शरीर नहीं है, सुनता तो मन है। मतलब मन हमारी बातों में लगा है तो हम सुनते हैं और यदि मन हमारी बातों में नहीं लगा है तो उस समय हम बैठे होने पर भी सुनते नहीं हैं। जब कभी मुझे विद्यार्थियों से चर्चा करने का अवसर होता है, तो मैं उनसे एक बात कहता हूँ, अध्यापक को यह कैसे पता लगता है कि आप सुन रहे हैं या नहीं सुन रहे हैं? कान में तो यह विशेषता नहीं है कि वो उधर जाए जिधर बात हो रही हो, लेकिन आँख में एक विशेषता है, वो उधर जाती है, जिधर आप देख रहे हैं। उसी तरह से एक नियम है कि जिधर आँख होगी, आपके कान भी अपने आप उधर ही होंगे। यदि कोई व्यक्ति वक्ता की ओर दृष्टि डाले हुए है, तो एक स्वाभाविक-सी बात है कि वो सुन रहा है। इसलिए मैं छात्रों से कहता हूँ कि छात्र यदि अध्यापक को देख रहा है तो अध्यापक को सुन रहा है और यदि अध्यापक को नहीं देख रहा है तो नहीं सुनता। वो बैठा जरूर है, लेकिन सुनने से उसका कोई सम्बन्ध नहीं है। उसी तरह से जब हम किसी बात को वक्ता के बोलते-बोलते सोच लेते हैं तो हमारा उस पर ध्यान चला जाता है और वह हमें याद रह जाता है। इसलिए जो चीज आप याद करना चाहते हैं उसका आपको चिन्तन करना होगा, विचार करना होगा, ध्यान करना होगा।

आपने प्रश्न उठाया है कि संध्या क्यों करनी चाहिए। कोई कारण होना चाहिए, कोई उपयोग होना चाहिए, कोई उससे मतलब निकलना चाहिए तब ही तो हम कोई काम करेंगे। इसको आप ऐसे समझ सकते हो, आप किसी भी व्यक्ति को देखिये कि वो कहीं जाता है पूजा करने, उपासना करने, किसी की आराधना करने, मुसलमान मस्जिद की ओर जा रहा है, ईसाई चर्च की ओर जा रहा है, सिख गुरुद्वारे की ओर जा रहा है, कोई मन्दिर की ओर जा रहा है, तो आपको लगता है कि सब अलग-अलग जा रहे हैं, इसका मतलब ये एक नहीं हैं। आप विचार करके देखेंगे तो वो इस अंश में एक हैं कि वो क्यों जा रहे हैं। जो मस्जिद की ओर जा रहा है, उसके जाने का भी कारण है और जो चर्च में जा रहा है, उसके जाने का भी कारण है, जो मन्दिर में जा रहा है, उसके जाने का भी कारण है। इन सबका जो कारण है, वो समान मिलेगा। जिन इच्छाओं को लेकर वो अलग-अलग व्यक्ति जा रहे हैं, वो इच्छाएँ सबकी समान हैं। चाहे वो मुसलमान है, चाहे वो हिन्दू है, चाहे ईसाई है या कोई और है। इसका अभिप्राय यह है कि हमारी एक आवश्यकता जो मनुष्यों की है वो समान है। उसके लिए हमने उपाय अलग-अलग किए हैं। उपाय ठीक हैं या नहीं हैं। ये अलग चीज है।

हम क्यों करें उपासना, उसका उत्तर यदि हम ढूँढना चाहते हैं, खोजना चाहते हैं तो आप ये याद करें कि कोई व्यक्ति कब मन्दिर की ओर जाता है? उसे मन्दिर की याद कब आती है? इसको दूसरे शब्दों में कहें कि हम सब ईश्वर को कब याद करते हैं? जब प्रसन्न होते हैं तब तो नहीं करते, जब हम अपने कामों में व्यस्त रहते हैं, हमें कोई बाधा नहीं होती है, तब भी हम नहीं करते हैं। हम ईश्वर को याद तब करते हैं जब आपको कहीं से किसी की सहायता की आवश्यकता लगे। जब ऐसा लगे कि यह बात पूरी नहीं हो रही है या अपने पास आस-पास के साधनों से किसी काम को करने में असमर्थ हो जाते हैं। कोई व्यक्ति बीमार है, रोगी है, सामान्य रोग होता है, तो दवा ले लेता है। विशेष रोग होता है तो डॉक्टर के पास चला जाता है। लेकिन डॉक्टर से भी कुछ ऐसा लगता है कि ठीक होना कठिन है। तब उसको लगता है कि अब हमारा सामर्थ्य समाप्त है।

शेष भाग अगले अंक में.....

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग–साधना शिविर

दिनांक : १८ से २५ जून, २०१७

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान–विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों–बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग–साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक–दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।

२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।

३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य–सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।

४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।

५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि–उद्यान परिसर में ही की जायेगी।

६. बाह्य–वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे– समाचार–पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखने आदि पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।

७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा– खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।

९. किसी भी मादक द्रव्य, चाय–कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।

१०. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन–सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।

११. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ–मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता–बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्–पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है।

ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं, शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४

: मार्ग :

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेलवे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

email:psabhaa@gmail.com

-संयोजक

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को स्थान दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हों। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें। **-संपादक**

कुछ तड़प-कुछ झड़प

-प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

श्री कृष्ण पर घृणित प्रहार की यह परम्परा:- जयपुर राज्य से एक भक्त ने महर्षि दयानन्द को एक पत्र लिखकर यह सूचना दी कि यहाँ जयपुर (हिन्दू राजा के राज्य में) के गली-बाजारों में ईसाई पादरी अपने मत का प्रचार करते हुये श्री राम तथा श्री कृष्ण महाराज की बहुत निन्दा करते हैं। उस भक्त की भावना तो स्पष्ट ही थी। वह ईसाई पादरियों के दुष्प्रचार को रोकने के लिये ऋषि जी को जयपुर आने के लिये गुहार लगा रहा था। उस सज्जन के पत्र में यह समाचार पाकर प्यारे ऋषि का मन बहुत आहत हुआ। ऋषि जी ने ऐसे ही किसी प्रसंग में एक बार यहाँ तक कहा था कि सब कुछ सहा जा सकता है, परन्तु श्री राम-कृष्ण आदि महापुरुषों का अपमान नहीं सहा जा सकता।

अभी भारत के एक जाने-माने वकील श्री प्रशान्त भूषण महोदय ने श्री कृष्ण महाराज पर लड़कियों की छेड़छाड़ का दोष लगा दिया। सत्य इतिहास क्या है यह वकील जी भी भली प्रकार से जानते हैं, परन्तु कुछ लोगों को दूसरों का मन दुखाने में ही आनन्द आता है।

श्री लाला लाजपतराय जी ने महर्षि दयानन्द के एक वाक्य से प्रेरणा पाकर इस देश में श्री कृष्ण के निष्कलङ्क जीवन पर सबसे पहले एक पठनीय पुस्तक में यह लिखा था कि संसार के अन्य महापुरुषों का अपमान तो उनके विरोधियों ने किया, परन्तु श्री कृष्ण का अपमान तो उनके भक्तों ने किया। महर्षि दयानन्द ने लिखा है कि महाभारत में तो श्री कृष्ण जी के जीवन पर आक्षेप करने वाली कोई अभद्र घटना या पाप-कर्म का उल्लेख नहीं, परन्तु पुराणों में वर्णित रासलीला व गोपियों से छेड़छाड़ की मिथ्या कहानियों का भक्तों ने ही अधिक प्रचार किया। इसका लाभ विरोधियों व विधर्मियों ने जी भरकर उठाया।

ऋषि दयानन्द ने तो यहाँ तक लिखा है कि श्री कृष्ण ने जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त कोई पाप नहीं किया। महाभारत में वर्णित घटनाओं से भी यही प्रमाणित होता है। पुराणों में वर्णित कहानियाँ अस्वाभाविक, मनगढ़न्त, एक-दूसरे से भिन्न और परस्पर विरोधी भी हैं। लंदन से प्रकाशित तथा कलकत्ता से प्रचारित ईसाइयों की एक बहुत पुरानी पुस्तक हमारे पास है जो इस समय मिल नहीं रही। उसमें श्री कृष्ण के चरित्र पर भी कई गम्भीर दोष लगाये गये हैं। उस पुस्तक में वर्णित बातें उद्धृत करने से भी हमारा मन दुखता है।

वही लेखक आगे चलकर सत्यार्थप्रकाश तथा महर्षि दयानन्द जी की चर्चा न करते हुये ऋषि के वाक्य दोहराता है कि महाभारत के श्री कृष्ण नीतिमान्, विद्वान्, दार्शनिक तथा गुणी महापुरुष हैं। उस लेखक के उसी ग्रन्थ की अन्त:साक्षी से सिद्ध है कि उसने ऋषि का अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश पढ़ रखा है।

यह हो नहीं सकता कि रासलीला रचाने वाले पौराणिकों ने तथा श्री प्रशान्त भूषण सरीखे उलटी-पुलटी बातें करके विवाद खड़ा करने वालों ने यह न पढ़ा हो कि गीता में कहा गया है कि जिसने इन्द्रियों का वशीकरण किया हो उसी की संज्ञा प्रतिष्ठित है अर्थात् वही........(बड़ा व्यक्ति है)। दुर्भाग्य की बात है कि किसी भी हिन्दू लीडर ने गीता के इस प्रमाण से श्रीमान् प्रशान्त भूषण के आपत्तिजनक कथन का विरोध नहीं किया।

कभी संघ में एक गीत बड़े जोश से गाया जाता था:-

निज गौरव को निज वैभव को
क्यों हिन्दू बहादुर भूल गये?

इसी सुन्दर गीत में यह मार्मिक पंक्तियाँ गाई जाती थीं-

क्यों रास रचाना याद रहा?
क्यों चक्र चलाना भूल गये?

दु:ख का विषय है कि ऐसे ओजस्वी गीत यह देश भूल गया। किसी भी हिन्दू विद्वान् ने प्रशान्त भूषण जी को झकझोरा नहीं। पहले जेठमलानी जी के श्री राम पर प्रहार का मान्य धर्मवीर जी ने सप्रमाण प्रतिवाद किया, अब हम प्रशान्त भूषण जी के घातक कथन का प्रतिवाद करते हैं। यह स्मरण रखिये कि जब तक रासलीलायें हैं तब तक श्रीकृष्ण की निन्दा करने का दु:साहस कोई न कोई करेगा।

आर्यसमाज ऋषि दयानन्द, लाला लाजपतराय, पं. चमूपति आदि अपने पूर्वजों का अनुकरण करता है, अनर्थ अनाचार से टक्कर लेने से पीछे नहीं हटेगा।

स्वामी श्रद्धानन्द संन्यास-दीक्षा शताब्दीः- यह वर्ष महाप्रतापी संन्यासी, शूरता की शान स्वामी श्रद्धानन्द जी का संन्यास दीक्षा शताब्दी वर्ष है। वर्ष भर हम परोपकारी में स्वामी जी महाराज के जीवन व देन पर कुछ न कुछ लिखते रहेंगे। वर्ष भर परोपकारिणी सभा कई कार्यक्रम आयोजित करेगी और करवायेगी। इस लेखक द्वारा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज पर अब तक का सबसे बड़ा ग्रन्थ 'शूरता की शान-स्वामी श्रद्धानन्द' चार-पाँच मास तक छप जायेगा। इसमें पर्याप्त ऐसी सामग्री दी जा रही है जो अब तक किसी ग्रन्थ में नहीं दी गई। दस्तावेजों को स्कैन करके भी ग्रन्थ में दिया जायेगा।

आज-भारतीय इतिहास का एक स्वर्णिम पृष्ठ- स्वामी श्रद्धानन्द जी की शूरता की एक अनूठी घटना यहाँ संक्षेप में दी जाती है। सन् १९०५ के मार्च मास में पंजाब के एक देशभक्त ला. दीनानाथ जी ने अपने पत्र में एक गोरे द्वारा एक भारतीय को मारे जाने की दु:खद घटना का समाचार प्रकाशित कर दिया। तब ऐसा करना बड़े साहस का कार्य था। ऐसा ही एक समाचार प्रकाशित करने के कारण श्री लाला लाजपतराय जी पर सरकार ने अभियोग चला दिया था। ला. दीनानाथ पर भी विपत्तियों के पर्वत टूट सकते थे।

श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी ने उनकी पुष्टि में 'गोराशाही की करतूत' शीर्षक से 'सद्धर्मप्रचारक' में एक लम्बा लेख देने का जोखिम उठाया। यह दुर्लभ अंक हमारे पास है। उस समय महात्मा मुंशीराम के रूप में पूज्यपाद स्वामी जी शिमला से अम्बाला छावनी पहुँचे। उन्हें वहाँ से मुम्बई मेल से आगे की यात्रा करनी थी। ट्रेन के आने में बहुत देर थी। प्लेटफार्म पर चार गोरे सैनिकों ने शराब के नशे में उत्पात मचा रखा था। जो भी भारतीय यात्री उनको दिखाई देता उस पर वे टूट पड़ते। ठुडे (बूट पहने ठोकरें लगाते) मारते हुये, यात्रियों की पिटाई-धुनाई कर देते।

भयभीत यात्री जान बचाते भाग खड़े हुये। रेलवे के अधिकारी असहाय मूक दर्शक बने बैठे थे। गोरों ने प्लेटफार्म पर लम्बे-चौड़े, निर्भीक मुनि महात्मा मुंशीराम जी को भी देखा, परन्तु निर्भीक, वीर, आर्य तपस्वी पर हाथ उठाने की उनकी हिम्मत न हुई। न ही शूरता की शान हमारे महात्मा जी डरकर वहाँ से भागे। यह घटना तीन जून सन् १९०५ को घटी। महात्मा जी ने छ: जून १९०५ के 'सद्धर्म प्रचारक' के लेख में उक्त घटना प्रकाशित कर दी। गोरे सैनिक महात्मा जी के निकट आये और कहा, "टुम शीख है?" अर्थात् क्या तुम सिख हो? महात्माजी ने कहा, नहीं मैं सिख तो नहीं हूँ। उनके सिर के बाल व दाढ़ी देखकर गोरों ने ऐसा कहा।

फिर कहा, हमें सिखों से डर लगता है। वे हमें नदी में डुबोते हैं। महात्मा जी ने कहा, यदि वे तुम्हें शराब, व्हिस्की की नदी में डुबो दें तो कैसा लगे? उन्होंने कहा, यह तो बहुत आनन्ददायक होगा। ऐसी कुछ चर्चा नशे में डूबे उन क्रूर सैनिकों ने स्वामी जी से की। किसी राष्ट्रीय ख्याति के नेता के साथ शराब के नशे में धुत गोरे सैनिकों की यह इकलौती घटना हमारे स्वराज्य-संग्राम का स्वर्णिम पृष्ठ है।

जब सब असहाय भारतीय यात्री पिटाई के डर से प्लेटफार्म से भाग निकले तो अकेले महात्मा मुंशीराम वहीं डटकर विचरते रहे। इतने पर ही बस नहीं, श्री महात्मा जी ने घटना घटित होने के चौथे ही दिन अपने लोकप्रिय पत्र 'सद्धर्म प्रचारक' में इसे प्रकाशित करके अपनी निर्भीकता का परिचय देकर सबको चकित कर दिया। गोराशाही की उस युग में ऐसी धज्जियाँ उड़ाने वाला ऐसा शूरवीर नेता और कौन था? **इस देश के इतिहास में महर्षि दयानन्द के पश्चात् ऐसे कड़े शब्दों में गोरों के अन्याय व उत्पात की कड़े शब्दों में निन्दा करने वाला पहला साधु महात्मा यही शूरता की शान श्रद्धानन्द ही था। कोई और नहीं।**

एक और शताब्दीः- यह वर्ष देशवासियों के लिये एक और दृष्टि से भी बहुत महत्त्वपूर्ण है। आधुनिक युग में विमान का सर्वप्रथम आविष्कार करके उसकी उड़ान भरने वाले शिवकर बापू तलपदे एक देशभक्त भारतीय वैज्ञानिक की पुण्य तिथि की शताब्दी भी हम इस वर्ष मनायेंगे। मूलत: वह गुजराती थे, परन्तु मुम्बई में निवास करते थे। **वह ऋषि के सच्चे, पक्के अनुयायी-विश्व के प्रथम आर्यसमाज के सदस्य थे।** यदि उस समय देश स्वतन्त्र होता और कोई

उत्साही प्रधानमन्त्री मोदी जैसा नेता होता तो आज शिवकर बापू तलपदे जी को विमान के आविष्कारक वैज्ञानिक के रूप में जाना जाता। एक देशभक्त वैदिक विद्वान् श्री विजय उपाध्याय द्वारा लिखित व सम्पादित एक खोजपूर्ण ग्रन्थ का परोपकारिणी सभा द्वारा प्रकाशन किया जा रहा है। इसमें तलपदे जी का दुर्लभ साहित्य भी होगा। वर्षों की सतत् साधना के फलस्वरूप श्रीमान् उपाध्याय जी यह अनूठा ग्रन्थ आर्य जाति को भेंट कर रहे हैं।

क्या हम आशा करें कि गुजरात, महाराष्ट्र की देशप्रेमी जनता महर्षि दयानन्द, छत्रपति शिवाजी महाराज, शूर शिरोमणि श्याम जी भाई और सरदार पटेल से ऊर्जा प्राप्त कर इस शताब्दी को धूमधाम से मनायेगी। श्री शिवकर बापू तलपदे की जीवनी व उनके साहित्य के प्रसार में कौन सभा को आर्थिक सहयोग देने को आगे बढ़ता है-यह तो भविष्य बतायेगा।

अन्त भला सो भला:- पूज्यपाद स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज एक उपदेश देते हुए एक अत्यन्त प्रेरक दृष्टान्त सुनाया करते थे। जिसका शीर्षक या सार था- **''अन्त भला सो भला।''** श्री पं. ओमप्रकाश जी वर्मा तथा इन पंक्तियों का लेखक प्राय: यह दृष्टान्त सुनाते रहे हैं। आज यहाँ इस दृष्टान्त को तो हम नहीं देंगे। उसके सार पर कुछ निवेदन करेंगे। हमने कई लड़कों को, युवकों को व बोगस लीडरों को बड़ी-बड़ी डींगें मारते देखा । जिनको 'आर्य राष्ट्र' की डुगडुगी बजाते देखा वे भिन्न-भिन्न पार्टियों की परिक्रमा करने वाले दलबदलू निकले। हरियाणा के ओर-छोर लाल-लाल पगड़ियाँ पहने, दाढ़ीधारी दर्जनों जीवनदानी देखे। ऋषि दयानन्द के नाम की, उसके मिशन की रट लगाने वाले वे सब जीवनदानी कहाँ गये? आर्यसमाज पर वार-प्रहार हो तो हमने उस समय के और उस परम्परा के किसी जीवनदानी को कभी भी उत्तर देते नहीं देखा। हरियाणा में ही रामपाल ने महर्षि दयानन्द के विरुद्ध विषवमन करते हुये उत्पात मचाया। आचार्य बलदेव मैदान में उतरे। कई एक ने बलिदान दिया। वे जीवनदानी मौन रहे या दिखाई ही नहीं दिये।

डॉ. सुरेन्द्र जी, मान्य डॉ. धर्मवीर जी ने तथा इस लेखक ने लेखनी चलाकर उस उत्पाती को चुनौती दी। रामपाल की करतूतों पर एक विशेषाङ्क हरियाणा से छपा था। उसमें कई सज्जनों के लेख थे। **हम तीनों के दो-दो लेख उस विशेषाङ्क में छापे गये।** रामपाल को आर्यसमाज हिसार के नेता श्री हरिसिंह जी की प्रेरणा से परोपकारी में शास्त्रार्थ की हमने खुली चुनौती दी। कहाँ थे तब ये जीवनदानी?

सत्यार्थप्रकाश पर दिल्ली में विधर्मियों ने अभियोग चलाया। हमने कोर्ट में किसी जीवनदानी के दर्शन तब नहीं किये। अन्त भला सो भला। घुसपैठ करके यहाँ-वहाँ राजनीतिक उल्लू सीधा करने वाले घुसपैठिये बहुत देखे। मिशन की आग लेकर पं. शान्तिप्रकाश जैसे प्राणवीर क्यों दिखाई नहीं देते।

कोरबा से एक आर्य भाई ने हमारे एक पुराने लेख का सन्दर्भ देकर नरेन्द्रभूषण के बारे में कुछ पूछा। हमने उन्हें लिखा, भाई! क्या बतायें अन्त भला सो भला। हमारी कोमल भावनाओं का, हमारी दुर्बलता का शोषण करके वह वाणी व लेखनी का जादूगर हमें ठगता रहा। सत्यार्थप्रकाश के प्रकाशन के लिये उसे हमारे प्रधान डॉ. ओमप्रकाश जी ने धन भेजा। हमने उसे लिखा कि उनके पिता जी के नाम पर इसे छापा जावे। उसने पाँच-सात प्रतियों पर उनका फोटो व नाम देकर ग्रन्थ छापा। बिक्री का धन कहाँ गया? ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, श्रीकृष्ण, ऋषि जीवन, ऋषि के लघु ग्रन्थों के लिये धन दिया। चारों वेद संहिताओं के लिये धन दिया। गुरुकुल की स्थापना केरल में की। वहीं बैंक में स्थिर निधि रख दी। हमारे यहाँ के दो व्यक्तियों के आप ही हस्ताक्षर करके (हमें पता ही न दिया) सारा धन उसके पुत्र व पत्नी ने बैंक से निकलवाकर हड़प लिया।

हमारा महर्षि दयानन्द भवन (प्रान्तीय कार्यालय) उसके जीतेजी उसके पुत्र व पत्नी ने हड़प लिया। कई बार कई एक को चैक दिये जो बैंक से..........ऐसी धोखाधड़ी! इन दुष्कर्मों का फल उसने भोगा, उसका पुत्र व पत्नी भी भोग रहे हैं, भोगेंगे। एक बार त्रिशूर में कर्नाटक की सभा ने एक कार्यक्रम का आयोजन किया। श्री डॉ. हरिशचन्द्र जी भी वहाँ गये थे। हमें तो बाद में पता चला कि ये बाप-बेटे भी वहाँ गये। इन्होंने वहाँ भी करतूत कर के रंग में भंग

डाला। सज्जनो! अन्त भला सो भला। परमात्मा जीवन के अन्तिम श्वास तक हमें पाप कर्मों से बचायें। हमारा पतन ऐसा न हो जो नरेन्द्र भूषण के परिवार का हुआ।

तृष्णा तू न गई मेरे मन से:- आर्यसमाज के यशस्वी कवि श्री देवनारायण जी ने अलीगढ़ से चलभाष पर हमारी सेवाओं 'कुछ तड़प-कुछ झड़प' की चर्चा छेड़कर हमारे मन में नवीन ऊर्जा का संचार कर दिया। अब हम शीघ्र जीवन के ८७ वें वर्ष में प्रवेश करेंगे। पूर्वजों के आशीर्वादों की वर्षा, प्रभु की कृपा व प्रेमियों की कामनाओं का फल है कि हम प्रभु से अब कुछ नहीं माँगते। अपनी चाहना भी उसके सामने नहीं रखते। वह सर्वज्ञ प्रभु अपनी वाणी वेद के लिये-अपने ऋषि के मिशन के लिये जीवन के अन्तिम श्वास तक हमसे काम ले। हम अब यह प्रार्थना भी प्रभु से नहीं करते। अब क्या कर रहे हो? आगे क्या लिखने जा रहे हो? इन प्रश्नों का उत्तर भी देने से सकुचाना ही श्रेयस्कर है तथापि बार-बार पूछे जाने वाले इस प्रश्न का एक ही उत्तर है - **'तृष्णा तू न गई मेरे मन से'**

'अन्त भला सो भला' प्यारा प्रीतम हमारा ध्यान रख रहा है।

सरूर महाकवि का डंका बजा दो आर्यो! - हर्ष का विषय है कि उर्दू साहित्य के इतिहास लेखकों में कुछ मुसलमान देशभक्त बन्धुओं का ध्यान अब उर्दू काव्य को नई दिशा देने वाले महाकवि दुर्गासहाय सरूर की ओर गया है। सब एक स्वर से यह स्वीकार कर रहे हैं कि इस आर्य महाकवि ने ही सर्वप्रथम उर्दू साहित्य को देश-प्रेम, मातृभूमि व देश-सुधार आदि विषय दिये थे। डॉक्टर अलिफ नाज़िम जी ने श्री जितेन्द्र कुमार जी गुप्त को आठ-नौ और नई कवितायें हमारी पुस्तक 'हृदय की तड़पन' के लिये भेजने की विनती स्वीकार कर ली है। आर्य समाज बुढाना द्वार का पुराना रिकार्ड श्री सत्यपाल सिंह जी मुरादनगर और श्री धर्मपाल आर्य खंगालेंगे। सम्भव है पहली पीढ़ी के इस आर्य सेवक के बारे में कुछ और सामग्री मिल जाये। हमसे जो कुछ बन सकता है हम इस इतिहास पुरुष आर्य विचारक की देन पर पठनीय सामग्री देंगे। हम देश में इस तप:पूत की चर्चा चलाकर चैन लेंगे। हमने श्री आदित्यनाथ जी योगी तथा मान्य मोदी जी को भी पत्र लिखे हैं।

विशेष सूचना

परोपकारी-पत्रिका के सभी पाठकों एवं आर्यजनों से निवेदन है कि डॉ. धर्मवीर जी से सम्बन्धित कोई पत्र, चित्र, ऑडियो, वीडियो आदि आपके पास हों तो कृपया सभा के पते पर अवश्य ही भिजवा देवें।

डॉ. धर्मवीर जी के जीवन पर प्रकाशित होने वाली स्मारिका के लिए जिन भी महानुभावों के पास उनसे सम्बन्धित कोई भी संस्मरण, विचार या कविता आदि हों, वे भी अतिशीघ्र सभा को भेजने का कष्ट करें, ताकि आपके लेख स्मारिका में प्रकाशित किये जा सकें।

ई-मेल-psabhaa@gmail.com

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, दयानन्द आश्रम, केसरगंज,

अजमेर-३०५००१ (राज.)

अग्नि और जल संसार के सब व्यवहारों के कारण हैं, इस से गृहस्थजन विशेष कर अग्नि और जल के गुणों को जानें और गृहस्थ के सब काम सत्य व्यवहार से करें।

- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.२४

वैचारिक क्रान्ति हेतु सत्यार्थप्रकाश व ऋषि जीवन-चरित्र प्रचार-प्रसार की भव्य योजना

विचार किसी भी देश, समाज व जाति की अमूल्य निधि (सम्पत्ति) है। जिसके पास में श्रेष्ठ विचार नहीं या फिर विचार को फैलाने के साधन नहीं हैं या फिर जो व्यक्ति, समाज व राष्ट्र अपने विचारों की अवहेलना करते रहते हैं, उनका अस्तित्त्व भी एक दिन समाप्त प्राय: हो जाता है। आज हर सम्प्रदाय, समाज, समूह व देश अपने विचारों का प्रचार-प्रसार बड़ी प्रबलता से हर क्षेत्र में व हर साधन से कर रहा है, लेकिन काफी समय से आर्यसमाज में वैचारिक शिथिलता देखी जा रही है। इस शिथिलता को दूर करने का मात्र एक ही उपाय है कि हम सभी आर्य जन ऋषि दयानन्द सरस्वती कृत **अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश व ऋषि जीवन चरित्र का प्रचार नये शिक्षित लोगों में करें।** इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखकर सभा के माध्यम से अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला दिल्ली में वर्ष २०१४ से लगातार इन ग्रन्थों का नि:शुल्क वितरण किया जा रहा है।

सत्यार्थप्रकाश ही क्यों?-१. यदि कोई व्यक्ति, समाज, समूह, संस्था या राष्ट्र एक ग्रन्थ (पुस्तक) पढ़कर विस्तृत ज्ञान प्राप्त करना चाहे तो यह सत्यार्थप्रकाश से ही सम्भव है। २. आज के दूषित वातावरण में वैदिक वाङ्मय को ठीक-ठीक जानने हेतु, पढ़ने-पढ़ाने हेतु प्रथम सत्यार्थप्रकाश और महर्षि के अन्य ग्रन्थों का पढ़ना-जानना अत्यन्त आवश्यक है। ३. दर्शनशास्त्र, इतिहास, भारतीय परम्परा, कर्त्तव्य, धर्म-अधर्म, उचित-अनुचित, न्याय-अन्याय, सत्य-असत्य तथा मानवता आदि क्या हैं? - यह सारी जानकारी सत्यार्थप्रकाश से प्राप्त होती है। ४. पाखण्ड, कुरीतियों व बुराइयों का नाश भी सत्यार्थप्रकाश से सम्भव है। ५. सत्यार्थप्रकाश व ऋषि के अन्य ग्रन्थों की उपस्थिति में कोई विधर्मी अपनी शेखी नहीं मार सकता तथा किसी भी हिन्दू को बहकाकर विधर्मी नहीं बना सकता। ६. सत्यार्थप्रकाश के प्रभाव ने न जाने कितनों का जीवन ही बदल डाला। सत्यार्थप्रकाश के जोड़ की दूसरी पुस्तक दुर्लभ है, जिसमें ज्ञान का अमूल्य खजाना भरा पड़ा है। इसलिए इसका प्रचार-प्रसार अनिवार्य है। **योजना का विवरण निम्न प्रकार का होगा**-१. सत्यार्थप्रकाश हिन्दी में आकार लगभग ६०० पृष्ठ व साइज डिमाई आकार में होगा। लागत मूल्य १००/- रुपये प्रति पुस्तक। २. ऋषि जीवन चरित्र हिन्दी में लगभग १६४ पृष्ठ व साईज डिमाई आकार में। लागत मूल्य ६०/- रुपये प्रति पुस्तक। ३. महर्षि द्वारा रचित पुस्तक आर्याभिविनय हिन्दी में ६४ पृष्ठ व साइज डिमाई आकार में, लागत मूल्य ३०/- रु. प्रति पुस्तक।

नोट-यह साहित्य वैचारिक क्रान्ति के लिए व वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार के लिए गैर आर्यसमाजी सज्जनों व संस्थानों आदि को नि:शुल्क या अल्प मूल्य में वितरित किया जायेगा। साहित्य का ठीक-ठीक उपयोग हो व योग्य शिक्षित विचारवान् व्यक्तियों तथा संस्थानों तक पहुँचे इसके लिए वितरण व्यवस्था की जाएगी। योग्य प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं का चयन कर कार्य में नियुक्त किया जायेगा। प्रत्येक व्यक्ति, संस्था आदि से एक फार्म भरवाया जायेगा, जिसमें उनका पूर्ण पता सम्पर्क आदि हो, जिससे भविष्य में परिणाम का मूल्यांकन किया जा सके। ग्रन्थों की प्रामाणिकता, शुद्धता व साज-सज्जा तथा सुन्दरता का विशेष ध्यान रखा जायेगा। इस प्रचार-प्रसार योजना का उद्देश्य सत्यार्थप्रकाश व महर्षि के जीवन-चरित्र के प्रचार-प्रसार के माध्यम से मानव मात्र का कल्याण करना है। यह प्रचार-प्रसार मुख्य रूप से शिक्षित गैर आर्यसमाजी लोगों के लिए होगा। यह कार्य पूर्णरूप से महर्षि के मन्तव्यों के अनुरूप हो इसका विशेष ध्यान रखा जायेगा। इस कार्य की सफलता के लिए सभी आर्यजनों से, समाजों से व संस्थानों से निवेदन है कि इस महान् कार्य में तन-मन-धन से अपना सहयोग करने व अपने इष्ट मित्रों को भी सहयोग करने की प्रेरणा करें।

नोट-अपना आर्थिक सहयोग आप परोपकारिणी सभा अजमेर के नाम प्रेषित करते समय **सत्यार्थप्रकाश प्रचार-प्रसार शीर्षक** अवश्य लिखें। धन प्रेषित करने हेतु आप चैक, ड्राफ्ट व सीधे राशि सभा के बैंक खाते में जमा करवाकर जमा पर्ची की प्रतिलिपि प्रेषित कर देवें या फिर ईमेल, दूरभाष द्वारा सूचित कर सकते हैं। धन्यवाद।

खाता धारक का नाम-**परोपकारिणी सभा, अजमेर।**
१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**
बैंक खाता संख्या-**10158172715**
IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम-**आई.डी.बी.आइ**, पावर हाऊस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।
बैंक खाता संख्या-**09110400057530**
IFSC-IBKL0000091
email : psabhaa@gmail.com

नोट : इस योजना हेतु दिया गया दान आयकर की धारा ८० जी के अन्तर्गत कर मुक्त होगा।

सम्पर्क : मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

आर्यसमाज और हरिजन-समस्या

- स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती

सन् १९८० में १९ मार्च से ३० अप्रैल तक पाँच सप्ताह की अनुज्ञा पर मैं उत्तरी बर्मा गया था। रंगून के भव्य आर्यसमाज मन्दिर में एक वाक्य अंकित था- 'अस्पृश्यता हिन्दू-जाति का सबसे बड़ा कलङ्क है' - महात्मा गांधी। अछूतपन की कहानी देश में बड़ी पुरानी है। एक भारतीय इतिहासज्ञ की यह बात मुझे जँची थी, नितान्त सत्यता इस बात में कितनी है, यह कहना कठिन है। उस इतिहास का यह संकेत था कि देश के गरीब तबके पर ब्राह्मणों ने अत्याचार किये। यह तबका शूद्रों में से था। जब शूद्रों पर अत्याचार हुए, तो ये बौद्ध हो गये। शंकराचार्य के बाद बौद्धों का ह्रास और ब्राह्मण वर्ग का प्रभुत्व बढ़ा। इन ब्राह्मणों ने बौद्धों को नगरों से निकालकर बाहर की सीमा पर खदेड़ा और उनसे नीच से नीच काम लेने लगे, यह वर्ग ही हमारा चमार, भंगी, पासी, चाण्डाल अछूत वर्ग है। मनुस्मृति में **शुनां च पतितानां च श्वपचां** ऐसे शब्द हैं, जिनका अर्थ पापी, चाण्डाल ऋषि दयानन्द ने किया है (मनु ३/९२)। असम, बंगाल और उड़ीसा में मुसलमानों के आते ही यह वर्ग मुसलमान हो गया, वहाँ जितने बौद्धों के प्रबल केन्द्र थे, वे सब मुस्लिम-प्रभुत्व के प्रदेश बन गये। इसीलिए असम, बंगाल, उड़ीसा में मुसलमानों की संख्या आज भी अधिक है।

अत: देश के वर्तमान अछूत वे पददलित तिरस्कृत वर्ग हैं, जो बौद्ध थे और जिन पर ब्राह्मण वर्ग (द्विज) ने अत्याचार किये थे।

मेहतर या भंगी का जन्मना पेशा करने वाला वर्ग भारत में ही पैदा हुआ, अन्य देशों में नहीं। प्राचीन भारत में शौचालय किस प्रकार के होते थे और उन्हें साफ करने वाले व्यक्ति का समाज में क्या स्थान था, यह कहना कठिन है। ऐसा लगता है, छोटी-छोटी बस्तियाँ होती थीं और नर-नारी समीप के खेतों और जंगलों में शौच करने जाते थे। अछूत या अस्पृश्य कोई व्यक्ति न था। मृत पशुओं के चर्म से अनेक उपयोगी सामान बनाये जाते थे और ये चर्मकार समाज के सामान्य व्यापारी अंग थे (वैश्य)- इनका परस्पर के सम्पर्क में कोई सामाजिक तिरस्कार न था।

सामान्यतया वर्ग चार ही थे और सभी द्विजेतरों की गिनती शूद्र वर्ग में थी। शूद्र अस्पृश्य नहीं था। वह तीनों वर्गों की सेवा करता था और यजमान के परिवार में ही उसका पोषण होता था। उसमें निम्न गुण होते थे, तभी वह परिवार का अंग बन जाता था-

१. परिवार के सदस्यों में वह सबसे अधिक बलिष्ठ, निरोग और स्वस्थ था। वह परम-साहसी था- जोखम के घटनास्थलों पर वह सबसे पहले पहुँचता था।

२. रंग उसका कैसा ही हो, उसमें स्वस्थ सौन्दर्य था, अत: उसे परिवार के बच्चे नि:संकोच सौंपे जा सकते थे।

३. वह अत्यन्त विश्वसनीय और सदाचारी था, अत: परिवार में उसका निर्वाह हो सकता था और उसके विश्वास पर घर की सारी सम्पत्ति छोड़ी जा सकती थी।

४. वह अत्यन्त विनम्र और विनयशील था, अत: शूद्रसेवक अतिथियों का स्वागत शिष्टता से करता था।

द्विजों की अपेक्षा मानवीय गुण शूद्रों में अधिक थे। कमी यही थी कि वह शिक्षित-दीक्षित और मंत्र-पाठी न था।

शूद्र शब्द ऋग्वेद में एक ही बार प्रयुक्त हुआ है (१०/९०/१२) और वह भी वही प्रसिद्ध मन्त्र, जो पुरुष-सूक्त से अन्य वेदों में आया- '**ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्**' वाला मन्त्र। शूद्र विराट् पुरुष का पाद स्थानीय है- 'का ऊरू पादा उच्येते' के उत्तर में।

मेरे एक विद्वान् मित्र ने शुच्-शोकार्थक (भ्वादि.) धातु से शुचेर्दश्च (उणादि. २/१९) सूत्र से रक् प्रत्यय, उकार को दीर्घ, च को द होकर शूद्र शब्द बनाने का दुरूह प्रयास किया है-

शूद्र: शोचनीय: शोच्यां स्थितिमापन्नो वा,
सेवायां साधूरविद्यादि गुणसहितो मनुष्यो वा।

अर्थात् शूद्र वह व्यक्ति है, जो अपने अज्ञान के कारण किसी प्रकार की उन्नत स्थिति को नहीं प्राप्त कर पाया और जिसे अपनी निम्न स्थिति होने की तथा उसे उन्नत करने

की सदैव चिन्ता बनी रहती है। अथवा स्वामी के द्वारा जिसके भरण-पोषण की चिन्ता की जाती है, ऐसा सेवक मनुष्य। निम्न बातों से शूद्र की निम्नतर पदवी भी उन्नत हो जाती है-

विप्राणां वेदविदुषां गृहस्थानां यशस्विनाम्।
शुश्रुषैव तु शूद्रस्य धर्मो नैऽश्रेयसः परः।।
शुचिरुत्कृष्ट शुश्रूषूर्मृदुवागनहंकृतः।
ब्राह्मणाद्याश्रयो नित्यमुत्कृष्टां जातिमश्नुते।।

- (मनु. ९/३३४-३३५)

अच्छे कुलीन परिवारों की सेवा करके शूद्र भी प्रतिष्ठा का स्थान पाते हैं।

वर्तमान युग की सामाजिक व्यवस्था में अब चातुर्वर्ण्य का प्रश्न केवल शास्त्रीय प्रश्न रह गया है। शनैः शनैः सभी परिवार साक्षर हो रहे हैं और देश के शासन में सभी को मताधिकार देने का समान अधिकार है। हरिजन, अस्पृश्य या अछूत शब्द सब संक्रान्ति काल के लिए हैं। भविष्य में न वर्णभेद जन्मना रह जायेगा, न गुण-कर्म-विभागाश्रित। इसे आप वर्ण-संकरता कहें या वर्ण-समन्वय या वर्ण-निरपेक्ष कहें, सब कुछ कह सकते हैं। ऐसी परिस्थिति में **हरिजन** शब्द भी अब कोई अर्थ नहीं रखता है।

आर्यसमाज ने निम्नवर्ग के समाज में जागृति लाने का कार्य प्रारम्भ से किया। दलित वर्ग के लोगों का यज्ञोपवीत कराया और उन्हें समस्त धार्मिक कृत्यों में स्थान दिया। वोट के अधिकार से यह अधिकार अधिक सम्मानपूर्ण था। आर्यसमाज ने अपनी संस्था के द्वार सबके लिए खोल दिए, यज्ञ करने-कराने का अधिकार देकर अन्त्यजों में से याज्ञिक तैयार कर डाले। मैं तो दिल्ली में देखता हूँ कि हमारे याज्ञिकों से विवाह आदि संस्कार कराने में किसी पौराणिक प्रतिष्ठित व्यक्ति को भी संकोच नहीं होता। हमारे पुरोहितों से कोई नहीं पूछता कि वे जन्मना किस वर्ग के हैं।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, विश्व हिन्दू परिषद् सभी संस्थाएँ दलित वर्ग के व्यक्तियों को मन्दिरों में प्रवेश नहीं करा सकतीं। वे दलितों को पण्डित बन जाने पर भी बिड़ला जी के लक्ष्मीनारायण मन्दिर में पुजारी नहीं बना सकतीं और न वे उन्हें शंकराचार्य की गद्दी पर बिठा सकती हैं। हिन्दू मन्दिर में आप हरिजनों का एक बार बलात् प्रवेश करा भी दें, तो वे मन्दिर के प्राङ्गण को गंगाजल या गो-दुग्ध से धोकर पवित्र कर लेंगे। मैंने सुना था कि काशी के एक मन्दिर में जगजीवनराम जी के चले जाने पर ऐसा ही किया गया था।

पुरी के शंकराचार्यों ने अभी हाल में हरिजनों के सम्बन्ध में अनर्गल बातें कहीं थीं।

भाई अग्निवेश जी का मुझे २ जुलाई १९८८ का पत्र मिला है। वे चाहते हैं कि मैं उनके साथ १० जुलाई के बाद नाथद्वारा में हरिजनों के साथ प्रवेश करने के लिए उदयपुर चलूं। मैंने जो उत्तर दिया है, उसकी प्रतिलिपि परोपकारी में प्रकाशनार्थ इस लेख के साथ भेज रहा हूँ।

''भाई अग्निवेश आपका २ जुलाई का पत्र मिला। आप अपने आन्दोलनों से इन मूर्ख शंकराचार्यों को प्रोत्साहित न करें। मैं हरिजनों को मन्दिरों में ले जाकर मूर्तिपूजक नहीं बनाना चाहता। आप प्रोत्साहित करें कि आर्यसमाज मन्दिरों में ये अधिक से अधिक संख्या में आयें। आर्यसमाज में प्रतिबन्ध न होने पर भी ये अधिक संख्या में क्यों नहीं आते- हम तो इन्हें अपने संगठनों में ऊँचे-से-ऊँचा स्थान भी देते हैं- ये पुरोहित, ब्रह्मा, ऋत्विक् आदि के कर्म भी करते हैं। मूर्ख हिन्दुओं को अतिमूर्ख शंकराचार्यों से निपटने दीजिए।''

हिन्दू मन्दिरों में जाकर ये हरिजन पायेंगे भी क्या? क्या उनमें से कोई शंकराचार्य बनने का अधिकारी भी हो सकेगा?

राष्ट्रीय पौराणिकों में यदि साहस हो तो वे घोषित करें कि जिन मन्दिरों में हरिजनों का प्रवेश करने का अधिकार न होगा, उनमें वे भी कभी नहीं जावेंगे, उनका वे बायकॉट करेंगे।

दलित वर्ग की समस्या सुलझाने के कतिपय उपाय निम्न हैं-

१. हरिजन शब्द का परित्याग तत्काल परम आवश्यक है।

२. राजनीतिक संरक्षण की अवधि समाप्त होनी चाहिए। जिसके परिवार को एक बार संरक्षण मिला गया, दोबारा नहीं मिलना चाहिए।

३. नगर के बाहर की बस्तियों से इन्हें निकालकर अन्य नागरिकों के बीच में ही प्रतिष्ठापूर्वक बसाना चाहिए।

४. नगर की सड़कों और शौचालयों को साफ़ करने का काम द्विज नागरिकों को भी साधना चाहिए (कूड़ा गाड़ी, मैला गाड़ी का परिवहन शुद्धतापूर्वक सभी वर्ग के शिक्षित व्यक्ति करें।)

५. आर्यसमाज के अधिवेशनों में सम्मानपूर्वक लाना चाहिए और निर्वाचनों में इन्हें उच्चतम पद उनकी योग्यतानुसार मिलने चाहिएँ।

६. फैक्ट्रियों में अन्य श्रमिकों के साथ इनकी भी भरती होनी चाहिए।

७. इनको यज्ञोपवीत धारण करना चाहिए और इनके घरों में, संस्थाओं में सभी प्यार से सम्मिलित हों।

८. यज्ञों में इन्हें सब लोग अपने घरों में ऋत्विक् बनावें।

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगाँठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय **जन्मतिथि/वैवाहिक वर्षगाँठ आदि व दूरभाष संख्या** सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नकद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

ईश्वर का आश्रय न करके कोई भी मनुष्य प्रजा की रक्षा नहीं कर सकता। जैसे ईश्वर सनातन न्याय का आश्रय करके सब जीवों को सुख देता है, वैसे ही राजा को भी चाहिये कि प्रजा को अपनी न्याय व्यवस्था से सुख देवे।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.३९

आचार्य धर्मवीर जी की स्मृति में स्थिर-निधि

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने परोपकारिणी सभा की स्थापना करते समय तीन उद्देश्य रखे थे-

१. वेद और वेदांगादि शास्त्रों के प्रचार अर्थात् उनकी व्याख्या करने-कराने, पढ़ने-पढ़ाने, सुनने-सुनाने, छापने-छपवाने आदि में, २. वेदोक्त-धर्म के उपदेश और शिक्षा अर्थात् उपदेशक-मण्डली नियत करके देश-देशान्तर और द्वीप-द्वीपान्तर में भेजकर सत्य के ग्रहण और असत्य के त्याग कराने आदि में ३. आर्यावर्तीय अनाथ और दीन मनुष्यों के संरक्षण, पोषण और सुशिक्षा में व्यय करें और करावें।

इन कार्यों को करने के लिये सभा का वर्तमान मासिक व्यय लगभग १२ लाख रुपये है, जो कि आर्यजनों के दान पर ही निर्भर है। परोपकारिणी सभा के कार्यकारिणी अधिवेशन सं. २२९ एवं साधारण अधिवेशन सं. १२० के प्रस्ताव १३ में आचार्य धर्मवीर जी द्वारा प्रारम्भ किये गये बृहत् प्रकल्पों (प्रकाशन, प्रचार, अध्यापन आदि) के लिये आचार्य धर्मवीर जी की स्मृति में एक करोड़ रुपये की स्थिर-निधि बनाने का संकल्प लिया गया है। आर्यजनों से निवेदन है कि इस पुनीत कार्य में अपना अधिक से अधिक सहयोग प्रदान कर आचार्य जी को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करें।

आप अपना दान चैक, ड्राफ्ट या सभा के खाते में सीधे भी भेज सकते हैं। कृपया, राशि भेजने के पश्चात् सभा में दूरभाष या पत्र द्वारा अवश्य सूचित कर दें।

मन्त्री

आवश्यक-सूचना

परोपकारिणी सभा की रसीद-बुक (रसीद संख्या ४५५१ से ४६०० तक) ऋषि मेले के समय खो गई है, जिसमें संख्या ४५५१ से ४५८८ तक की रसीदें कटी हुई हैं। इन संख्याओं की रसीदें जिन भी महानुभावों के नाम से काटी गई हों वे कृपया अपनी रसीद की एक फोटो कॉपी सभा के पते पर अवश्य भेज देवें।

मन्त्री

यू-ट्यूब पर वीडियो प्रवचन उपलब्ध

वेद एवं आर्ष-साहित्य में रुचि रखने वाले आर्यजगत् एवं धार्मिक जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब यू-ट्यूब पर अनेक वैदिक आर्य विद्वानों के सैंकड़ों नये-नये प्रवचन उपलब्ध हैं। विश्व में कहीं पर भी इन्टरनेट से जुड़कर ये प्रवचन निःशुल्क सुने-देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं। आप जहाँ भी हैं, यदि आपको वैदिक आर्ष-ज्ञान की पिपासा है, वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ आप इन पर विद्वानों के प्रवचन भी सुनना चाहते हैं, तो इन्टरनेट से जुड़कर सरलता से सुन सकते हैं।

इसके लिए you tube पर जाकर playlist of paropkarini sabha लिखकर सर्च करें, तो आपको अनेक प्लेलिस्ट मिलेंगी, यथा- वेद प्रवचन, योग दर्शन, ईशोपनिषद् आदि। इनमें इच्छानुसार जाकर लाभ उठाया जा सकता है। आप अपने परिचितों को यह सूचना देकर उन्हें भी लाभ उठाने को प्रेरित कर सकते हैं। भविष्य में अन्य भी नये-नये प्रवचन इस सूची में उपलब्ध कराये जाते रहेंगे।

परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें, अन्यथा व्यक्ति के नाम से शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उन पर '**मन्त्री, परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया, राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर (PAROPKARINI SABHA AJMER)

१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावर हाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।

IFSC - IBKL0000091

२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।

IFSC - SBIN0007959

विद्वान् स्त्रियों को योग्य है कि अच्छी परीक्षा किए हुए पदार्थ को जैसे आप खायें वैसे ही अपने पति को भी खिलावें कि जिससे बुद्धि, बल और विद्या की वृद्धि हो और धनादि पदार्थों को भी बढ़ाती रहे।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४२

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

वह महामानव कौन था जिसने भगत सिंह को शहीदे आज़म भगत सिंह बना दिया

-कन्हैयालाल आय

पंजाब के ज़िला लायलपुर की धरती सचमुच वन्दनीय है, जिसने न जाने कितने ऐसे वीर पुत्रों को जन्म दिया, जिन्होंने हंसते-हंसते माँ भारती की स्वाधीनता के लिए अपने प्राणों की बलि दे दी। इसी लायलपुर के एक गाँव बंगा में एक सिख परिवार रहता था, जिसने आगे चलकर अपनी क्रांतिकारी परम्पराओं से भारतीय इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ा। इसी परिवार में सरदार अर्जुन सिंह पैदा हुए थे। सरदार अर्जुन सिंह अपने ही ढंग के क्रांतिकारी थे। वे जाट सिख थे, परन्तु स्वामी दयानन्द जी से जब उनकी भेंट हुई तो वे आर्य समाज की ओर झुक गए। यह कहा जाता है कि स्वामी दयानन्द जी ने उन्हें स्वयं दीक्षा दी और अपने हाथ से उनका यज्ञोपवीत संस्कार किया था।

यह सरदार अर्जुन सिंह जी ही थे, जिन्होंने अपने पोते भगत सिंह को क्रांतिकारी विचारों के संस्कार दिये। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के कुछ ही दिनों के उपदेशों के प्रभाव से वे स्वाधीनता संग्राम और समाज-सुधार की क्रांति के अग्रदूत बन गए थे। उन्होंने अपने वंश को देश की आज़ादी के लिए बलिदान कर दिया।

सरदार अर्जुन सिंह और शिवाजी समारोह-१२ जून १८९७ को शिवाजी समारोह पर अध्यक्ष पद से बोलते हुए लोकमान्य तिलक ने जो भाषण दिया था वह भी सरदार अर्जुन सिंह के लिए प्रेरणा का स्रोत बना। वह भाषण इस प्रकार था-

''क्या शिवाजी ने अफज़ल ख़ान को मारकर कोई पाप किया था?''

''इस प्रश्न का उत्तर महाभारत में मिल सकता है। गीता में श्री कृष्ण जी ने अपने गुरुओं तथा बान्धवों तक को (यदि वे दुष्टों का सहयोग करते हैं) मारने का उपदेश दिया है। उनके अनुसार कोई व्यक्ति निष्काम भाव से कर्म करता है तो वह किसी भी तरह पाप का भागी नहीं बनता। श्री शिवाजी ने अपनी उदरपूर्ति के लिए कुछ नहीं किया था। बहुत ही नेक इरादे के साथ, दूसरों की भलाई के लिए उन्होंने अफ़ज़ल ख़ान का वध किया था। यदि घर में चोर घुस आये और हमारे अन्दर उसको बाहर निकालने की शक्ति न हो तो हमें बेहिचक उस चोर को दरवाजा बन्द करके ज़िन्दा जला देना चाहिए। ईश्वर ने भारत के राज्य का पट्टा ताम्रपत्र पर लिखकर विदेशियों को तो नहीं दिया है। शिवाजी महाराज ने उनको अपनी जन्मभूमि से बाहर खदेड़ने का प्रयास किया। ऐसा करके उन्होंने दूसरों की वस्तु हड़पने का पाप नहीं किया। कुएँ के मेंढक की तरह अपनी दृष्टि को संकुचित मत करो, ताज़ीराते हिन्द की कैद से बाहर निकलो, श्रीमद्भगवद् गीता के अत्यन्त उच्च वातावरण में पहुँचो और महान् व्यक्तियों के कार्यों पर विचार करो।''

सरदार अर्जुन सिंह सिख परिवार के होते हुए भी संस्कारों से दृढ़ आर्य समाजी बन गए थे। वे जहाँ भी जाते, अपने साथ एक पोटली रखते थे, जिसमें यज्ञकुण्ड और यज्ञ सम्बन्धी सामान रहता था। वे प्रतिदिन यज्ञ करते थे। वे पूरी निष्ठा और गम्भीरता से महर्षि दयानन्द जी द्वारा रचित 'सत्यार्थ प्रकाश' का स्वाध्याय किया करते थे।

सरदार अर्जुन सिंह उन थोड़े लोगों में से थे जो जिस काम को हाथ में लेते थे, उसे पूरा करके दिखाते थे। साधारण व्यक्ति का जीवन एक ही लीक पर परवान चढ़ता है। जिस परिवार और परिस्थितियों में व्यक्ति उत्पन्न होता है वह आजीवन उन्हीं से चिपटा रहता है। यदि वह स्वतन्त्र चिन्तन करने का प्रयास करता है तो भी वह सीमित चारदीवारी के बीच में कैद रह कर ही रह जाता है। यदि वह चिन्तन के क्षेत्र में थोड़ा बहुत स्वतन्त्र चिन्तन प्रदर्शित करता भी है तब भी वह उसे व्यवहार में परिणत नहीं कर सकता, परन्तु सरदार अर्जुन सिंह तो स्वतन्त्र पथ के ऐसे पथिक थे जो न तो एक ही लीक पर चलने वाले थे और न ही एक चारदीवारी में कैद रहने वाले। वह ऐसे महामानव

थे जिन्होंने अपने स्वतन्त्र चिन्तन को अपने जीवन के व्यवहार में उतारने में ही आनन्द का अनुभव किया था।

'सत्यार्थ प्रकाश' (आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के प्रमुख ग्रन्थ) के प्रति उनकी अपार श्रद्धा थी। उस ग्रन्थ से उन्होंने स्वराज्य प्रेम की प्रेरणा ली थी। यही स्वराज्य भावना उनके तीनों पुत्रों श्री किशन सिंह, श्री अजीत सिंह और श्री स्वर्ण सिंह में कूट-कूट कर भरी गयी थी। स्वराज्य के लिए तीनों पुत्रों ने कारावास भोगा, जेल की यातनाएं सहीं। जैसे ही भगतसिंह के पिता श्री किशन सिंह, चाचा अजीत सिंह तथा स्वर्ण सिंह जी के जेल से रिहा होने की खबर पहुँची, उसी दिन भगत सिंह का जन्म (२८ सितम्बर १९०७) हुआ था। उनकी दादी अर्थात् अर्जुन सिंह की पत्नी ने प्रसन्न होकर उन्हें (भागों वाला) भगत सिंह नाम दिया। बचपन से ही उनका पालन-पोषण दादा जी की छत्र-छाया में हुआ। भगत सिंह की दादी भी एक धार्मिक महिला थीं। यही संस्कार एवं परम्पराएँ भगत सिंह में भी आयीं। तीन वर्ष की अवस्था में भगत सिंह ने गायत्री मन्त्र स्मरण कर लिया था। भगत सिंह व उनके बड़े भाई जगत सिंह का यज्ञोपवीत संस्कार पं. लोकनाथ तर्कविद्यावाचस्पति जी ने कराया। इस अवसर पर भगत सिंह के दादा श्री अर्जुन सिंह जी ने अपने दोनों पोतों को बाहों में भरकर संकल्प किया, ''मैं अपने दोनों वंशधरों को इस यज्ञवेदी पर खड़ा होकर देश के लिए दान करता हूँ।''

सिख मत के अनुयायी होते हुए भी आर्य समाज के प्रबल समर्थक थे-गुरुद्वारा आन्दोलन में भाग लेने से पूर्व भगत सिंह न तो सिर पर केश रखते थे और न ही पगड़ी बाँधते थे। इसका कारण संभवत: उनके दादा सरदार अर्जुन सिंह का सिख होते हुए भी बहुत कुछ आर्य समाजी होना था। वे नियमित रूप से यज्ञ करते थे और सत्यार्थ प्रकाश का स्वाध्याय भी करते थे। इस सम्बन्ध में श्री यशपाल जी ने 'सिंहावलोकन' में एक रोचक प्रसंग का उल्लेख किया है जिसका शब्दश: यहाँ उल्लेख किया जा रहा है। इससे सरदार अर्जुन सिंह जी की आर्यसमाज के प्रति आस्था अच्छी तरह स्पष्ट हो जायेगी।

''सन् १९२५ के जाड़ों की बात है। सरदार किशन सिंह एक इंश्योरेंस कम्पनी की एजेन्टी कर रहा था। एजेंसी का यह दफ्तर हमारे लिए आराम का डेरा बना हुआ था। मैं उन दिनों लाहौर के नेशनल स्कूल में पढ़ रहा था। नेशनल कॉलेज समाप्त होकर नेशनल हाई स्कूल ही रह गया था। भगतसिंह अनिच्छा से थोड़ा बहुत समय करोबार में लगाता। शेष समय पढ़ता और संगठन के लिए भूमि को तैयार करने में लगा रहता। सुखदेव कभी लायलपुर अपने घर पर चला जाता। वहाँ उसके परिवार ने आटे की चक्की लगवा दी थी। लाहौर आता तो भगत सिंह के साथ ही बना रहता। हमारे सहपाठी झंडासिंह और जयदेव गुप्ता भी वहीं थे।

एक दिन स्कूल में छुट्टी थी। दूसरे लोग मकान पर मौजूद नहीं थे। मैं अपनी सनक में मेज़ पर बैठा कोई लेख या कहानी लिख रहा था। मेज़ के नीचे टीन की क्या चीज पड़ी है, वह ख्याल न कर उस पर जूते जमाकर रख दिये थे। संभव है अचेतन रूप से यह धारणा रही हो कि रद्दी की टोकरी के तौर पर कोई डिब्बा है। लिखते समय विचारों को ठेलने के लिए मेज़ के नीचे उस टीन की चीज़ को जूते से एड़ किए जा रहा था।

जीने पर भारी कदमों से धम-धम करते हुए एक सिख सज्जन अपने ग्रामीण वेश में ऊपर दफ़्तर में आ गए। मैंने एक दफ़ा नजर उठाकर उनकी तरफ़ देखा और लिखने में तन्मय रहा। सरदार जी के ऐसे अनेक सम्बन्धी गाँवों से आते-जाते रहते थे। इस सज्जन की दाढ़ी खूब प्रशस्त, बर्फ की तरह श्वेत और चेहरा खूब तेजोमय गुलाबी रंग का था। मैंने उनकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया, आगन्तुक भी मुझसे आदर की प्रतीक्षा न कर एक कुर्सी खींचकर चुपचाप दीवार के पास बैठ गए। मैं मालिक बना बैठा लिखता रहा और मेज़ के नीचे टीन की चीज़ पर जूते की ठोकरें भी जमाता रहा।

अचानक वज़नी गालियों से भरी एक करारी डाँट सुनकर आँख उठाकर देखा कि वयोवृद्ध भव्यमूर्ति की आँखें लाल और चेहरा क्रोध से तमतमा उठा है और वे हाथ में थमी मोटी लाठी को फर्श पर ठोक रहे हैं।

''गधा, उल्लू, नास्तिक, बदमाश, सिर तोड़ दूँगा।'' उनके हाथ में लाठी मेरे सर पर पड़ना ही चाहती थी। वृद्ध

ने अपने आवेश को कठिनता से वश में कर मेज़ के नीचे संकेत करते हुए फटकारा-''उल्लू, यही तेरी तमीज़ है।''

मेज के नीचे झाँककर देखा तो अपने जूतों के बीच पाया एक औंधा पड़ा हवनकुण्ड। सब कुछ समझ में आ गया। उपेक्षा के कारण पहचानने में भूल हुई थी। भगतसिंह से सुन रखा था कि दादा जी नित्य हवन करते हैं। जहाँ जाते हैं, पोटली में हवन कुण्ड और हवन सामग्री साथ बाँध ले जाते हैं।''

इस घटना से यह तो स्पष्ट हो ही जाता है कि सरदार अर्जुनसिंह सिख धर्म के अनुयायी होते हुए भी आर्य समाज के प्रबल समर्थक थे।

सन् १९२३ में भगत सिंह नेशनल कॉलेज लाहौर के विद्यार्थी बने थे। जन-जागरण के लिए वे ड्रामा क्लब में भी भाग लेते थे। क्रांतिकारी अध्यापकों और साथियों से नाता जुड़ गया था। भारत को आज़ादी कैसे मिले, इस बारे में लम्बा-चौड़ा अध्ययन और बहसें जारी थीं। घर में दादा श्री अर्जुनसिंह जी ने पोते (भगतसिंह) के विवाह की बात चलाई। उनके सामने अपना तर्क न चलते देख पिताजी के नाम यह पत्र लिखा और घर छोड़ दिया। पिताजी के नाम लिखा गया भगतसिंह का यह पत्र घर छोड़ने संबन्धी उनके विचारों को सामने लाता है-

पूज्य पिताजी, नमस्ते।

मेरी ज़िन्दगी मकसदे आला (उच्च उद्देश्य) यानि आज़ादी-ए-हिन्द के असूल (सिद्धान्त) के लिए वक़्फ़ हो चुकी है। इसलिए मेरी ज़िन्दगी में आराम और दुनियाबी ख्वाहिशात (सांसारिक इच्छाएँ) वायसे कोशिश (आकर्षण) नहीं है।

आपको याद होगा कि जब मैं छोटा था तो बापू जी (दादा श्री अर्जुन सिंह जी) ने मेरे यज्ञोपवीत के वक्त ऐलान किया था कि मुझे खिदमते वतन (देश-सेवा) के लिए वक़्फ़ (दान) कर दिया गया है। लिहाज़ा (अत:) मैं उस वक्त की प्रतिज्ञा पूरी कर रहा हूँ। उम्मीद है मुझे माफ़ करेंगे।

आपका ताबेदार (सेवक)

भगतसिंह

यह उपर्युक्त पत्र दर्शाता है कि भगतसिंह के दादा श्री अर्जुन सिंह जी ने अपनी संतानों में देश-प्रेम को कितना गहरे तक उतार दिया था।

सरदार अर्जुन सिंह जी के समय में आर्य समाज का जो रूप था, उसमें विद्रोह के तत्त्व अधिक थे। उस समय आर्य समाज का अर्थ था स्वदेशाभिमान। सम्भवत: इसी कारणवश लाला लाजपत राय, सूफी अम्बाप्रसाद और अर्जुनसिंह जी आदि सभी आर्य समाज से प्रभावित थे। अर्जुन सिंह सिख से आर्य समाजी बने, इससे पता चलता है कि वे किस सीमा तक स्वतन्त्र चिन्तक थे। वे आर्य समाज के इतने भक्त बन गये कि जहाँ से जितना भी आर्य समाज का साहित्य उन्हें मिला, वह सारा का सारा पढ़ डाला। उन्होंने आर्य समाज के मंच से भाषण देना भी प्रारम्भ कर दिया था।

सरदार अर्जुन सिंह के व्यक्तित्व में अद्‌भुत अन्तर्द्वन्द्व का समावेश हो गया था। वे परम्परा से बिल्कुल कटना नहीं चाहते थे, परन्तु आवश्यकता पड़ने पर परम्पराओं की धज्जियाँ उड़ाने में भी पीछे नहीं हटते थे। जो बात उनकी तर्क की तुला पर खरी नहीं उतरती थी, उसको त्यागने एवं नई राह खोजने और फिर उस पर चलने का साहस उनमें था। वह आर्य समाज के उस नियम ''सत्य को ग्रहण करने और असत्य को त्यागने में सर्वदा उद्यत'' रहते थे। यही बुनियादी तत्त्व उनको क्रान्तिकारी बना रहा था।

अर्जुन सिंह जी केवल विचारों से ही परिवर्तनवादी थे, ऐसी बात नहीं थी। जीवन में मुख्य निर्णय लेने में उन्होंने कभी विलम्ब नहीं किया। एक बार सरकार ने वनक्षेत्र को बसाने का निर्णय लिया कि जो लोग वहाँ बसना चाहेंगे, उन्हें सरकार २५ एकड़ भूमि प्रति-परिवार देगी। इस निमन्त्रण से आकृष्ट होकर वे बंगा गांव में आ बसे, जहाँ भगत सिंह का जन्म हुआ।

सरदार अर्जुन सिंह के दो भाई और थे- सरदार बहादुर सिंह और सरदार दिलबाग सिंह। दोनों ने ब्रिटिश सरकार की खूब चापलूसी की और बहुत अधिक धन कमाया। वे दोनों अर्जुन सिंह को मूर्ख समझते थे और कहा करते थे कि अर्जुन सिंह ने यदि दूरदर्शिता से काम नहीं लिया तो उन्हें एक दिन भीख माँगनी पड़ेगी, परन्तु सरदार अर्जुन सिंह पर ऋषि दयानन्द की छाप पड़ चुकी थी। वे ब्रिटिश

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में वर्ष २०१२ से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ निःशुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर (**PAROPKARINI SABHA AJMER**)

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार**, अजमेर।

बैंक बचत खाता (**Savings**) संख्या-**10158172715**

IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम-**आई.डी.बी.आइ**, पावर हाउस के सामने,

जयपुर रोड, अजमेर।

बैंक बचत खाता (**Savings**) संख्या-**091104000057530**

IFSC-IBKL0000091

email : psabhaa@gmail.com

आस्था भजन (चैनल) पर आर्य विद्वानों के प्रवचन

स्वामी रामदेव जी जन-जन के कल्याण को ध्यान में रखते हुए वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए 'आस्था-भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे तक दो घण्टे के बीच वैदिक विद्वानों के प्रवचनों को प्रसारित करवा रहे हैं।

इस कार्य में परोपकारिणी सभा द्वारा भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रवचनों की आपूर्ति के लिए ऋषि उद्यान में रिकॉर्डिंग-यूनिट चल रही है और लगातार नित नये प्रवचनों की रिकॉर्डिंग की जा रही है। परोपकारिणी सभा ये प्रवचन आस्था-भजन (चैनल) को प्रदान कर रही है।

इन दिनों 'आस्था-भजन' (चैनल) पर प्रतिदिन सायं ७ से ७.२० बजे तक **आचार्य धर्मवीर** जी के वेद-प्रवचन, ७.३० से ७.५० तक **स्वामी विष्वङ् जी** के योगदर्शन प्रवचन, ८.३० से ८.५० तक **आचार्य सत्यजित्** के प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं।

धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

'आस्था-भजन' (चैनल) डिश-टी.वी. और डी.टी.एच. पर उपलब्ध है, किन्तु टाटा-स्काई, वीडियोकोन, बिग-टी.वी. आदि पर नहीं आ रहा है। जिनके पास ये नहीं आ रहा है, वे अपने प्रसारक (सर्विस प्रोवाइडर) को बार-बार कह कर प्रेरित करते रहें, जिससे कि ये भी आस्था भजन को प्रसारित करने लगें। ऐसा करके वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार में आप भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। जो केबल से देखते हैं, वे भी अपने केबल ऑपरेटर को कह कर आस्था भजन आरम्भ करवा सकते हैं।

मैंने अपने घर से निकाल दी है। आप जिस तरह कहें मैं उसी तरह अपने मकान को शुद्ध करने के लिए तैयार हूँ।'' इस घटना को किसी भी अर्थ में लिया जा सकता है, परन्तु इससे यह तथ्य तो उजागर होता है कि अर्जुन सिंह जी जन्म से ही विद्रोही स्वभाव के थे। भवभूति के शब्दों में उन्हें ''वज्रादपि कठोराणि'' की संज्ञा दी जा सकती है।''

मृदूनि कुसुमादपि-३ मार्च १९३१ का दिन वह अन्तिम दिन था जिस दिन भगत सिंह अपने परिवार के सदस्यों से अन्तिम बार मिले। उस दिन भगत सिंह के पिता श्री किशन सिंह, माता श्रीमती विद्यावती, भाई कुलबीर, चाची और दादा श्री अर्जुन सिंह जी आये थे, जिन्होंने इस परिवार में ऋषि दयानन्द जी की प्रेरणा से क्रान्ति का बीज बोया था।

सरदार अर्जुन सिंह भगतसिंह के पास जैसे-तैसे साहस बटोरकर आये और भगतसिंह के सिर पर उसी प्रकार हाथ फेरने लगे जैसे बचपन में स्नेहवश फेरा करते थे। उन्होंने उस समय बोलने का पूरा प्रयास किया, परन्तु कण्ठ अवरुद्ध हो गया और मुख से एक भी शब्द न निकला। वे सोच रहे थे कि सम्भवत: इसके पश्चात् इस प्रिय भगतसिंह का मुख देखने का अवसर नहीं मिलेगा। वे परिवार से दूर जाकर खड़े हो गये। भगतसिंह ने देखा कि दादा जी जितना भी आंसुओं को छिपाने का प्रयास कर रहे थे, उतने ही वेग से वे निकल जाना चाहते थे। भगतसिंह ने स्वयं को संयत करते हुए कहा था-दादाजी! आपने तो मुझे बहुत समय पूर्व मेरे यज्ञोपवीत के समय राष्ट्र को दान कर दिया था, फिर आज उस दान दी हुई सम्पत्ति को अलग करने में यह मोह कैसा? आप जैसा व्यक्ति, जो वज्र की तरह कठोर है, वह आज मुरझाये हुए फूलों की तरह अच्छा नहीं लगता। मुझे लगता है कि अब आप बूढ़े हो गये हैं। क्योंकि आपके आँसु इस बुढ़ापे को दर्शा रहे हैं, परन्तु मुझे विश्वास है कि आप ऋषि दयानन्द के शिष्य हो। ऋषि दयानन्द जी ने मृत्यु से कुछ क्षण पूर्व कहा था, ''हे ईश्वर! तेरी इच्छा पूर्ण हो, तूने अच्छी लीला की।'' उनके शिष्य कभी घबराया नहीं करते। इस प्रकार परिवार का यह अन्तिम मिलन था उसके पश्चात् २३ मार्च १९३१ को इस शहीदे आजम भगतसिंह को फाँसी दे दी गई और अंग्रेज़ सरकार ने अपने नाम एक काला अध्याय और जोड़ दिया।

भगतसिंह अपनी प्रत्येक बात अपने दादा श्री अर्जुनसिंह से किया करते थे। १४ नवम्बर १९२१ को केवल १४ वर्ष की आयु का भगतसिंह अपने दादा श्री अर्जुनसिंह को एक पत्र लिखता है-परिवार का हाल-चाल जानने के पश्चात् वह अपनी सक्रियता को दादा जी के साथ किस प्रकार बाँटता है, उसका उदाहरण पत्र की ये पंक्तियाँ हैं-

मेरे पूज्य दादा साहब जी, नमस्ते।

''आजकल रेलवे वाले हड़ताल की तैयारी कर रहे हैं। उम्मीद है कि अगले सप्ताह के बाद जल्दी शुरु हो जाएगी।''

आपका ताबेदार (सेवक)
भगतसिंह

दादाजी को लिखे इस पत्र से पता चलता है कि उस समय चल रहे चर्चित असहयोग आन्दोलन का प्रभाव किस तरह जनता में जोर मार रहा था, जिसका प्रभाव भगतसिंह पर भी हुआ। वे उससे अनजान न रह सके। साथ ही दादा जी को भी यह बताए बिना न रह सके कि जल्दी आरम्भ होने वाली रेल-हड़ताल की भी उन्हें सूचना है। वे अपनी पूरी गतिविधि के बारे में अपने दादा श्री अर्जुन सिंह जी को अवगत कराते रहते थे। इससे सिद्ध होता है कि भगतसिंह के विचारों में क्रान्तिकारी परिवर्तन का कितना श्रेय सरदार अर्जुन सिंह जी को है। ये श्री अर्जुन सिंह जी ही हैं, जिन्होंने भगतसिंह को शहीदे आज़म भगत सिंह बना दिया था।

मनुष्यों को चाहिये कि सदा यज्ञ का आरम्भ और समाप्ति को करें और संसार के जीव को अत्यन्त सुख पहुँचावें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६२

जो विद्या की वृद्धि के लिए पठन-पाठन रूप यज्ञकर्म्म करने वाला मनुष्य है वह अपने यज्ञ के अनुष्ठान से सब की पुष्टि तथा संतोष करने वाला होता है इस से ऐसा प्रयत्न सब मनुष्यों को करना उचित है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.२७

सरकार की चापलूसी की बात तो सपने में भी नहीं सोच सकते थे। उन्होंने आत्म सम्मान, निर्भीकता, स्पष्टवादिता और देशभक्ति के जिस मार्ग को चुना, आजीवन उसी मार्ग के पथिक बने रहे।

सरदार अर्जुन सिंह के यहाँ तीन पुत्र-सरदार किशन सिंह, सरदार अजीत सिंह और सरदार स्वर्ण सिंह उत्पन्न हुए। तीनों पिता की तरह वीर, निर्भीक, देशभक्त और स्पष्टवादी थे। तीनों पुत्र साक्षात् उन्हीं के प्रतिरूप थे। इनके परिवार पर अंग्रेजों का कहर टूटता ही रहता था। श्री अजीत सिंह स्वतन्त्रता के युद्ध को आगे बढ़ाने के लिए विदेश चले गए। वहाँ (ब्राजील) से वे सन् १९४७ ई. में ही लौट सके, परन्तु स्वतन्त्रता की पहली ही प्रात: (१५ अगस्त १९४७ ई.) को ४ बजे उन्होंने देश के विभाजन से दु:खी होकर किसी योगी की भाँति स्वेच्छा से शरीर त्याग दिया। भगत सिंह के दूसरे चाचा सरदार स्वर्ण सिंह भी अंग्रेज सरकार के अन्यायों से मात्र २३ वर्ष की आयु में चल बसे। सरदार किशन सिंह जी का क्रान्तिकारी रासबिहारी बोस व करतार सिंह सराभा से निरन्तर सम्पर्क रहता था। इन तीनों भाइयों ने सूफी अम्बा प्रसाद, लाला हरदयाल, महाशय घसीटा राम, केदारनाथ सहगल आदि क्रान्तिकारियों के साथ मिलकर भारत माता सोसाइटी की स्थापना की। इनके उग्र भाषणों व कार्यों के कारण अंग्रेजी सरकार ने तीनों भाइयों को गिरफ्तार करके जेल में डाल दिया।

सरदार अर्जुन सिंह जी 'सत्यार्थ प्रकाश' के विरुद्ध कुछ न सुन सकते थे- सरदार अर्जुन सिंह जब ऋषि दयानन्द जी के सम्पर्क में आये, तो वे सर्वात्मना आर्य समाज के रंग में रंग गये। ऋषि दयानन्द जी द्वारा रचित 'सत्यार्थ प्रकाश' उनके लिए एक प्रकाश स्तम्भ बन गया। उन्होंने 'सत्यार्थ प्रकाश' का पूरा अध्ययन कर लिया था। यदि कोई भी व्यक्ति सत्यार्थ प्रकाश की आलोचना करता था, तो वह उनसे सहन न होती थी। ऐसी ही घटना उनके जीवन में आई। एक बार सरदार अर्जुन सिंह जी अपने गाँव से ६० मील दूर किसी विवाह में सम्मिलित होने के लिए गये। विवाह के अवसर पर सिख पुरोहित 'सत्यार्थ प्रकाश' के उदाहरण दे-देकर उसकी कटु आलोचना कर रहा था। अर्जुन सिंह जी ने देखा कि वह व्यक्ति झूठे उदाहरण सुना-सुना कर लोगों को भड़का रहा था। अर्जुन सिंह जी ने उसे टोकते हुए कहा कि आप लोगों को मिथ्या और कल्पित उदाहरण देकर सत्यार्थ प्रकाश के नाम पर सुना रहे हैं, ये बातें सत्यार्थ प्रकाश में नहीं हैं। आप सत्यार्थ प्रकाश को व्यर्थ बदनाम न करें। उसने कहा कि सत्यार्थ प्रकाश लाओ, मैं सारे उद्धरण दिखा दूँगा। उस समय कहीं-कहीं कोई-कोई पुस्तक मिलती थी। पुरोहित ने सोचा कि तेरी बात ऊपर रह जायेगी। यहाँ किसके पास सत्यार्थ प्रकाश मिलेगा? सत्यार्थप्रकाश के प्रति श्रद्धा रखने वाले श्री अर्जुन सिंह रात को ही ६० मील पैदल चलकर घर आये और सत्यार्थ प्रकाश लेकर सवेरे तक पैदल ही वापस विवाह स्थल पर पहुँच गये। जब पुरोहित को सत्यार्थ प्रकाश हाथ में थमाकर उद्धरण दिखाने के लिए कहा तो वह पुरोहित बगलें झाँकने लगा। अन्तत: पुरोहित ने अपनी भूल के लिए क्षमा माँग कर ही पीछा छुड़ाया।

जन्म से ही विद्रोही स्वभाव (वज्रादपि कठोराणि)- डॉ. सुभाष रस्तोगी जी ने अपनी पुस्तक 'क्रान्तिकारी भगत सिंह' में भी अर्जुन सिंह जी के विद्रोही स्वभाव की एक दृष्टान्त के द्वारा प्रस्तुति की है-

''यह उनके क्रान्तिकारी व्यक्तित्व का एक ज्वलन्त उदाहरण है कि उन्होंने सरकार से मिली भूमि में तम्बाकू की खेती करने का निर्णय लिया, क्योंकि यह भूमि तम्बाकू की खेती के लिए सर्वोत्तम थी। आसपास के गाँवों में जहाँ सिख नहीं थे, वहाँ के लोग तम्बाकू की खेती से खूब धन अर्जन कर रहे थे। इसलिए उन्होंने भी तम्बाकू की खेती करने का निर्णय ले लिया, परन्तु क्योंकि सिख मत में तम्बाकू सेवन निषेध है, अत: पूरे गाँव में इनका न केवल विरोध हुआ बल्कि उनको बिरादरी से निकालने की बात के साथ-साथ उनका बिरादरी से आना-जाना और पानी बन्द हो गया, परन्तु सरदार जी चट्टान की तरह अपने निर्णय पर अटल रहे। तम्बाकू ऊँचे दामों में बिका और काफी धन घर में आ गया। अब सरदार अर्जुनसिंह जी ने दबंग स्वर में घोषणा की,''गुरु जी ने उस युग की परिस्थितियों के अनुकूल तम्बाकू को शिष्यों में प्रचलन का निषेध करार दिया होगा, परन्तु यदि यह पाप है तो मैं अपना अपराध स्वीकार करता हूँ। अब वह घृणित वस्तु

सफलता के सहयोगी

-प्रकाश चौधरी

व्यक्ति के मन में प्रतिपल कामनाओं की तरंगें उठती रहती हैं, वह विकास चाहता है, उन्नति के पथ पर अग्रसर होना चाहता है, परन्तु अभाव के झोंके, प्रतिकूलताएँ, बाधाएँ राह को रोकती हैं। केवल जो संकल्पवादी है, वह सारी प्रतिकूलताओं से निकलता हुआ अपने उद्देश्य या मंजिल को पा लेता है। क्षेत्र कोई भी हो-लौकिक अथवा आध्यात्मिक, पथिक अपने रास्ते में बाधाओं का निराकरण करता हुआ प्रगति-पथ पर बढ़ता रहता है। शास्त्रों के अनुसार कुछ ऐसे सहयोगी हैं जो उसके मार्गदर्शन करने में सहायक हैं। व्यक्ति को उनका सहयोग लेना चाहिए-

(१) वैचारिक शुद्धिः- किसी भी शास्त्र एवं उत्तम पुस्तक का अध्ययन करते समय विचारों का महत्त्व सर्वोपरि माना गया है। विचार व्यक्ति की उन्नति एवं अवनति का मुख्य कारण है। सोच ही है जो मनुष्य का मनोबल बढ़ाती है या घटाती है। अच्छे विचारों का संग्रह प्रगतिशील बनाता है और बुरे विचार अर्थात् नकारात्मक सोच पतन की ओर ले जाती है। प्रगति के लिए वाणी, व्यवहार, धर्म-अधर्म, सुख-दुःख जैसे विषय गंम्भीरता से विचारने के विषय हैं। इनका शुद्ध होना अति आवश्यक है।

उत्तम गुणों का संग्रह बड़ा सौभाग्यशाली व्यक्ति ही कर पाता है लेकिन कुछ गुण ऐसे हैं, जिन्हें हर व्यक्ति प्रयत्न करने पर प्राप्त कर लेता है, उनसे युक्त रह सकता है। जैसे ''उचित वाणी का प्रयोग और अनुचित वाणी का निरोध'' नियन्त्रित एवं मधुर वाणी पराये को भी अपना बना लेती है। वाणी की मधुरता तो पशु-पक्षी भी समझते हैं और अपने सहायक और हितैषी बन जाते हैं। संसार वश में हो सकता है वाणी के बल पर। किसी जंगल को कुठाराघात से या जला देने से वह पुनः हरा हो जाता है, परन्तु चित्तरूपी वन वाणी के गलत प्रहार से, कठोर वचनों से आहत पुनः शान्त नहीं होता।

वाणी के चार गुण हैं और चार ही दोष हैं, मुख्य गुण-सत्य बोलना, हितकारी बोलना, प्रिय बोलना, स्वाध्याय करना आदि। झूठ बोलना, कठोर बोलना, निंदा करना, व्यर्थ बोलना दोष हैं।

व्यवहार को लें- उत्तम व्यवहार ही मनुष्य को यशस्वी बनाता है। ईमानदारी, पक्षपातरहित लेन-देन में कुशलता, संयमशील रहना, वाक्पटुता, शालीनता आदि बहुत सारे गुण व्यक्ति को व्यावहारिक बनाते हैं और प्रगति पर ले जाते हैं। इसी प्रकार धर्म-अधर्म को जानना, अत्याचारी न होना, पाप-मुक्त होना धर्म है। सत्य-असत्य का भान व्यक्ति को प्रगति-पथ पर ले जाता है। सुख-दुःख में सम रहना, द्वन्द्व में न होना यानी इन चारों की शुद्धि-वैचारिक शुद्धि है।

सांसारिक विषयों से व्यक्ति की आसक्ति होती है, आकर्षण होता है। यदि उनकी प्राप्ति में बाधा आ जाये तो क्रोध आता है। क्रोध से मोह उत्पन्न होता है, मोह से स्मृति नष्ट होती है। स्मृति नष्ट हो गयी तो बुद्धि कार्य नहीं करती, निर्णय नहीं ले सकती और यहीं से व्यक्ति का पतन आरम्भ होता है, इसलिए विचारों की शुद्धि अर्थात् अच्छी सोच रखना आवश्यक है।

व्यक्ति सोचता है हम दुनिया से अच्छे हैं। रहन-सहन अच्छा है, शान से परिपूर्ण हैं, आचार-विचार, पठन-पाठन सब अच्छा है लेकिन उसे सतर्क रहना चाहिए कि जब तक यह कारण हैं, तब तक ही प्रगति सम्भव है। क्योंकि भविष्य में यदि यह विचार, अच्छा आचरण, अच्छा खान-पान बदल गया तो पतन भी हो सकता है। आज सदाचारी है, कल दुराचारी हो सकता है। ईश्वर को भूल सकता है स्थिति व गुण बदलते रहते हैं इसलिए अपने विचारों के प्रति सजग और सावधान रहना चाहिए। इन्द्रियों पर नियन्त्रण आवश्यक है। संसार के विषयों को तो नष्ट नहीं किया जा सकता। वे सदैव थे और सदैव रहेंगे। व्यक्ति को अपने विचारों पर नियन्त्रण करना होगा, हर व्यक्ति ये कभी न सोचे कि-

१. मैं परिपक्व हूँ
२. मैं सर्वथा समर्थ हूँ
३. अन्दर-बाहर मेरा कोई शत्रु नहीं है

बल्कि ऐसा विचारे-

१. मैं निर्बल हूँ

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में वर्ष २०१२ से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ निःशुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर **(PAROPKARINI SABHA AJMER)**

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार,** अजमेर।

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**10158172715**

IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम-**आई.डी.बी.आइ**, पावर हाउस के सामने,

जयपुर रोड, अजमेर।

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**091104000057530**

IFSC-IBKL0000091

email : psabhaa@gmail.com

आस्था भजन (चैनल) पर आर्य विद्वानों के प्रवचन

स्वामी रामदेव जी जन-जन के कल्याण को ध्यान में रखते हुए वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए 'आस्था-भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे तक दो घण्टे के बीच वैदिक विद्वानों के प्रवचनों को प्रसारित करवा रहे हैं।

इस कार्य में परोपकारिणी सभा द्वारा भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रवचनों की आपूर्ति के लिए ऋषि उद्यान में रिकॉर्डिंग-यूनिट चल रही है और लगातार नित नये प्रवचनों की रिकॉर्डिंग की जा रही है। परोपकारिणी सभा ये प्रवचन आस्था-भजन (चैनल) को प्रदान कर रही है।

इन दिनों 'आस्था-भजन' (चैनल) पर प्रतिदिन सायं ७ से ७.२० बजे तक **आचार्य धर्मवीर** जी के वेद-प्रवचन, ७.३० से ७.५० तक **स्वामी विष्वङ् जी** के योगदर्शन प्रवचन, ८.३० से ८.५० तक **आचार्य सत्यजित्** के प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं।

धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

'आस्था-भजन' (चैनल) डिश-टी.वी. और डी.टी.एच. पर उपलब्ध है, किन्तु टाटा-स्काई, वीडियोकोन, बिग-टी.वी. आदि पर नहीं आ रहा है। जिनके पास ये नहीं आ रहा है, वे अपने प्रसारक (सर्विस प्रोवाइडर) को बार-बार कह कर प्रेरित करते रहें, जिससे कि ये भी आस्था भजन को प्रसारित करने लगें। ऐसा करके वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार में आप भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। जो केबल से देखते हैं, वे भी अपने केबल ऑपरेटर को कह कर आस्था भजन आरम्भ करवा सकते हैं।

संहारना आदि करती है। वह कर्मफल प्रदाता है-आनन्द का स्रोत है और वही जानने व मानने योग्य है।''

इन विचारों के संग्रह से उसे जानने के लिए, उसका साक्षात्कार करने की जिज्ञासा मन में उठती है। शान्ति व सुख पाने हेतु मनुष्य अपने अपने ढंग से पूजा-पाठ उपासना-प्रार्थना आदि करता है। प्राय: देखने में आता है कि पूजा-पाठ करने वाला उतनी सुख-शान्ति प्राप्त नहीं कर पा रहा होता, जितनी कि एक नास्तिक। जबकि ऐसे व्यक्ति अच्छे आचरण रहित पापी व प्रमादी होते हैं। क्या ईश्वर ही ये दुर्गुण उन्हें देता है? क्या पूजा-पाठ उपासना आदि केवल क्रिया-कलाप हैं, ऐसा विचार स्वाभाविक है। ऋषि इसका केवल एक उत्तर देते हैं, जो व्यक्ति वेद-शास्त्रों के प्रतिकूल आचरण करता है, चाहे वह कितना भी पूजा-पाठ करता हो, सुख शान्ति प्राप्त नहीं कर सकता, क्योंकि वह सच्चे ईश्वर को जानता ही नहीं उसकी आसक्ति, धार्मिकता, आराधना सब मिथ्या है। दिव्य गुणों का अभाव होता है उसमें। यह संभव नहीं कि सत्य पर आधारित भक्ति हो और ईश्वर का आशीर्वाद न मिले।

ईश्वरभक्ति का अर्थ जानना आवश्यक है, ''ईश्वरभक्ति अर्थात् ईश्वर की आज्ञा का पालन।''

वेद कहता है-आचरण शुद्ध है, सत्य पर, ज्ञान पर आधारित है तो उसे मालाएँ फेरने अथवा तीर्थों पर जाने की भी आवश्यकता नहीं। व्यक्ति की दिनचर्या, भोजन, यम-नियम, स्वाध्याय सत्संग-शुद्ध रूप में हैं, वेदानुसार आचरण है तो यही भक्ति है। ईश्वर की आज्ञानुसार जीवन हो। ''क्रोध मत करो।'' यह ईश्वर की आज्ञा है। यदि व्यक्ति क्रोध करता है- तो वह उसका साक्षात्कार नहीं कर सकता ''दान दो'' यह ईश्वर की आज्ञा है। ''सत्य को ग्रहण करना और असत्य को छोड़ना'' यह ईश्वर की आज्ञा है। जो इन आज्ञाओं को छोड़ मिथ्या-वचन, छल, कपट का आचरण करता है-वह कितनी भी उपासना, पूजा-पाठ करे उसका ईश्वर से सम्बन्ध नहीं हो सकता, जैसे विश्राम अथवा सही निद्रा के लिए शुद्ध एवं शान्त वातावरण की आवश्यकता होती है-वैसे ही ईश्वर प्राप्ति हेतु उचित भोजन, शुद्ध आचरण तथा उत्तम दिनचर्या की आवश्यकता होती है। उपरोक्त अपेक्षाएँ तो स्थूल हैं। यहाँ तो ईश्वर प्रणिधान जैसी कष्टमय सूक्ष्म अपेक्षाएँ भी साधनी पड़ती हैं।

आज तो अपनी सरलता के लिए ईश्वर के सच्चे स्वरूप को न जानकर उसे मूर्तिमान्, सुन्दर वस्त्रों से, आभूषणों सहित पत्नी-पुत्र सहित, कारोबारी युक्त बना दिया गया है, ऐसे लोगों को भला ईश्वर-प्राप्ति कैसे होगी। इसलिए कहा -भक्ति से पूर्व ज्ञान आवश्यक है, कि जिस ईश्वर को हम भज रहे हैं, वह ठीक भी है या नहीं। उसका वास्तविक स्वरूप क्या है। कोई व्यक्ति उसे माने या न माने, निष्ठा करे या न करे, प्रमाणित है कि वह अनादिकाल से प्राणिमात्र का हित करता आ रहा है।

चिन्तन-मनन से सच्चे ईश्वर का निर्णय करना आवश्यक है। वह अपने ज्ञान, बल, समर्थ से ही यह सारा जगत् , प्राणिमात्र, वनस्पति, सूर्य, पृथ्वी आदि को सत्ता में लाता है। भोजनादि सुख सामग्री उसी की देन है। उसी के द्वारा दी गयी बुद्धि से सारी वैज्ञानिक उन्नति संभव हो पायी है। ईश्वर समस्त रोगों का चिकित्सक है। कुछ रोग ऐसे हैं जो किसी व्यक्ति विशेष को नहीं, बल्कि सभी जाति, लिंग, भाषा, देशवासी सभी को समान रूप से होते हैं। बल, धन, रूप से कोई भेदभाव नहीं होता। ये मानसिक रोग हैं। काम, क्रोध, लोभ, मोह, राग-द्वेष, अहंकार जैसे रोगों की दवा केवल और केवल ईश्वर के पास है। किसी वैद्य के पास नहीं।

सच्चे ईश्वर की भक्ति करने वाला कभी चिंतित, हताश, निराश, निस्तेज, दु:खी, असमर्थ नहीं होता। ऐसा व्यक्ति किसी का अनर्थ नहीं करता। अपने व्यवहार से किसी को आहत नहीं करता। शिखा, यज्ञोपवीत, माला, जटाजूट धारण से कोई सच्चा उपासक नहीं हो जाता! ये तो बाह्य लक्षण हैं। दया, धर्म, ज्ञान, तपस्या, पुरुषार्थ, सेवा, निर्भीकता, एक सच्चे उपासक के लक्षण हैं। वही ईश्वर का सच्चा स्वरूप जानता है।

ईश्वर का जो आज रूप बना दिया गया है वे सब भ्रान्तियाँ हैं। दक्षिण वाले उत्तर में उसे ढूँढने जाते हैं और उत्तर दिशा वाले दक्षिण में। पूर्व वाले पश्चिम में और पश्चिम वाले पूर्व में। पर्वतों से नीचे नदी-समुद्र पर और कोई पर्वतों पर उसे ढूंढने जाते हैं। ईश्वर तो एक है, सर्वत्र है। उसका दर्शन बाहर नहीं अपने हृदय में होता है। जो ऐसा जान लेता है और विचार शुद्ध रखता है वही प्रगति-पथ पर बढ़ता है।

२. शत्रु अन्दर भी है और बाहर भी

३. आगे बढ़ने हेतु बहुत समाधान करने हैं- अच्छे संस्कारों एवं विचारों का संग्रह करना है। इन्द्रियों पर विजय पानी है आदि।

(2) अविद्यानिरास- उन्नति के पथ पर बढ़ने के लिए विद्या और अविद्या का अन्तर समझना होगा। अविद्या के लक्षण जानकर उन्हें दूर करना प्रत्येक व्यक्ति का कर्त्तव्य है। अधर्म, अन्याय, पाप, पीड़ा आदि अविद्या के लक्षण हैं। एक बार पढ़कर या सुनकर समझना कठिन होता है। इसे दूर करने के लिए तीव्र इच्छा, साधन, पूर्ण पुरुषार्थ एवं तप की आवश्यकता होगी। खाते-पीते, सोते-जागते अपने अन्दर की अविद्या को दूर करना होगा। तभी कोई व्यक्ति अपने उद्देश्य में सफल हो सकता है। भ्रम, मिथ्या सोच अविद्या है। हमारे कल्पित विचार जो तर्क एवं प्रमाणों से रहित हैं, विशेषकर प्रत्यक्ष, अनुमान और वेद रूपी शब्द प्रमाण से रहित हैं, वे अज्ञान तथा भ्रम हैं। यही अविद्या है।

(३) सुदृढ़ आधार:- जैसे निर्बल नींव पर बना भवन लंबे समय तक नहीं रह सकता, उसी प्रकार कोई भी व्यक्ति मज़बूत, पूर्ण पुरुषार्थ एवं कार्य के सिद्धान्तों को जाने बिना अपने कार्य में सफल नहीं हो सकता, चाहे वह लौकिक क्षेत्र हो या आध्यात्मिक।

१. अपनी स्थिति एवं सामर्थ्य का ज्ञान होना आवश्यक है। यदि नहीं है तो कार्य आरम्भ करने से पूर्व अपने सामर्थ्य का संग्रह आवश्यक है।

२. राह में आने वाली संभावित प्रतिकूलताओं का ज्ञान तथा उनके उन्मूलन के उपाय आदि का ज्ञान आवश्यक है। विपरीत घटनाएँ न भी हों फिर भी स्वयं को विचारशील बनाना चाहिए, इस प्रकार वह क्रूरता, विश्वासघात, आरोप जैसी स्थिति में स्वयं को बचा सकता है।

३. सुदृढ़ आधार है तो व्यक्ति न आन्तरिक न बाहरी कारणों से पतन को प्राप्त करता है। जीवन का निर्माण है अविद्या को दूर करना । वेदों में सब ज्ञान दिया ईश्वर ने, ऋषियों ने उनके अनुसार सिद्धान्त बनाए। अब व्यक्ति या योगी को देखना है कि वह किस प्रकार उनका उपयोग कर प्रगति करता है। ज्ञान पाने के लिए तो पुरुषार्थ ही करना पड़ेगा। प्रगति के लिए किये गए संकल्प को पूरा करने का प्रयत्न होना चाहिए।

कुछ पूर्व जन्म के शुभ संस्कारों की अग्नि को जलाये रखना, ईश्वर प्राप्ति के लिए आवश्यक है। ब्रह्मचर्यपूर्वक किसी अच्छे गुरु के निर्देशन में दृढ़तापूर्वक आगे बढ़ना चाहिए। संसार में कोई एक व्यक्ति ही आपके विचारों से सहमत होता है। यदि सुदढ़ आधार है तो ही आप निश्चय-पूर्वक प्रगति-पथ पर बढ़ सकते हैं।

(४) शुद्ध आचरण:- अध्यात्म मार्ग पर वही चल सकता है जो जीते जी मरे समान रह सकता हो। समस्त प्रतिकूलताओं का समाधान कर सकता हो। संघर्षशील हो, अपने अनुभवों से, अपने ज्ञान-बल तथा अनुभवों में वृद्धि कर रहा हो। पढ़े तथा सुने हुए ज्ञान को अपने आचरण में ला रहा हो। इस कठिन कार्य के लिए सतत संघर्षशील हो, आदर्शवादी हो। किसी द्वन्द्व अर्थात् यश, कीर्ति, सुख-दु:ख आदि में समभाव हो, कर्मठ हो। अवरोध में परित्याग नहीं करने वाला हो। गिरकर उठ जाना, आगे बढ़ना जिसका ध्येय हो। ऐसा व्यक्ति ही सफल होता है जो ज्ञान और कर्म का समन्वय कर अपने आचरण को सुदृढ़ बनाता है।

(५) आवास:- आज वह समय नहीं रहा जब कोई आध्यात्मिक व्यक्ति मानसिक प्रगति हेतु दूर पर्वतों या गुफाओं में शान्त वातावरण प्राप्त करता था। आज न तो पर्वत, न गुरुकुल, न आश्रम रहे-जहाँ अनुकूलता मिले। राग-द्वेष, विवाद, अनियमितता, यम-नियम का हनन आदि बाधाएँ सब ओर हैं। व्यक्ति कहीं भी भागना चाहे-सब ओर एक ही प्रकार का अशान्त वातावरण है। अगर उत्तम दिनचर्या है, विशेषकर उपासना, यज्ञ, स्वाध्याय, व्यायाम-नियमितता है, तो वही स्थान प्रगति के लिए उत्तम है। अच्छा संगतिकरण हो। सेवाभावी, राग-द्वेष से रहित स्वभाव वाले, यम-नियम का पालन करने वाले, अच्छे विषयों पर चर्चा करने वाले, कर्त्तव्य के प्रति सजग, चिंतनशील सहयोगी हों तो मानसिक प्रगति के साथ-साथ शारीरिक-बौद्धिक प्रगति होगी। लौकिक प्रगति होगी। विचारशील व्यक्ति की सदैव ईश्वर में श्रद्धा रहेगी। ऐसे वातावरण में यदि कोई व्यक्ति न भी पढ़े, न चर्चा करे, तो भी जीवन अच्छा बीतेगा और सफलता भी मिलेगी।

(६) सत्य ईश्वर की भक्ति:- ''अनादिकाल से मनुष्य अपने जीवन में यही सुनता आ रहा है कि ईश्वर नाम की कोई शक्ति है जो इस जगत् की रचना, पालना,

अतिथि यज्ञ के होता

(०१ से १५ अप्रैल २०१७ तक)

१. श्रीमती मीना सोनी, जोधपुर २. श्री किशोर काबरा, अजमेर ३. श्री देवमुनि, अजमेर ४. श्री रमेशमुनि, अजमेर ५. श्री एम.एल. गोयल, अजमेर ६. श्रीमती उर्मिला जयदेव अवस्थी, जोधपुर ७. श्रीमती प्रतिभा दुबे, जयपुर ८. श्री अनिल कुमार मिश्रा, छिन्दवाड़ा, म.प्र. ९. स्वस्तिकाम चैरिटेबल ट्रस्ट, अमरावती, महा.।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि-उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला की गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों में निःशुल्क किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौवों को उत्तम चारा मिले, इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चैक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएँगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि-उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

(०१ से १५ अप्रैल २०१७ तक)

१. श्री रामदेव प्रसाद भागलपुर २. कैप्टन सी.पी. त्यागी, रुड़की, हरिद्वार ३. श्री आशीष मदान, गुड़गाँव ४. श्रीमती कौशल्या अमरचन्द माहेश्वरी, अजमेर ५. श्री राधेश्याम शर्मा, अजमेर ६. श्री एन.के. नामदेव, रायसेन ७. श्रीमती वेदवती शर्मा, उदयपुर ८. श्री चाँदरतन दम्माणी, कोलकाता ९. श्री सुशील दम्माणी, कोलकाता १०. विमला कुमारी पटना ११. श्रीमती उर्मिला उपाध्याय, अजमेर १२. श्री रोशनलाल, अजमेर। **- परोपकारिणी सभा, अजमेर।**

जब तक मनुष्य सुख-दुःख, हानि और लाभ की व्यवस्था में परस्पर अपने आत्मा के तुल्य दूसरे को न जानते तब तक पूर्ण सुख को प्राप्त नहीं होते, इससे मनुष्य लोग श्रेष्ठ व्यवहार ही किया करें।**-महर्षि दयानन्द, यजु.,भा ५.४०**

पुस्तक - समीक्षा

पुस्तक का नाम - वैदिक इस्लाम
लेखक - प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'
प्रकाशक -वैदिक पुस्तकालय, परोपकारिणी सभा, अजमेर।
पृष्ठ संख्या -३२ **मूल्य** - १०.००रु.

प्रस्तुत पुस्तक के नाम की शब्द-रचना ही लेखक की प्रौढ़ता का पर्याय है। भला इस्लाम है तो वैदिक कैसा? और वैदिक है तो इस्लाम कैसा? यह बात मस्तिष्क को उलझन में डाल सकती है। पर स्मरण रहे कि इस उलझन को सुलझाना ही लेखक की चुनौती है और गहरा चिन्तन भी।

दयानन्द को समझने वाले इस बात को भली प्रकार जानते हैं कि दयानन्द हिन्दू, इस्लाम, ईसाइयत जैसे किसी दुमछल्ले के विरोधी नहीं थे। उनका विरोध तो असत्यता से था। उनका स्पष्ट मानना था कि इन सभी धर्मों में जो-जो सत्य बातें हैं वे सभी वेदों से ली गयी हैं और जो असत्य बातें हैं वे सब इन्होंने स्वयं गढ़ी हैं। अब अगर इस्लाम इन गढ़ी हुयी बातों से हटकर चलने की कोशिश करता है और सत्यता के निकट पहुँचता है तो निर्विरोध ही वह वैदिकता के दायरे में आ जाता है और दयानन्द की दिग्विजय स्वीकार कर लेता है। लेखक महोदय इसी दर्शन को उजागर करना चाहते हैं। गम्भीर पाठक इस दर्शन का आनन्द जरूर लेंगे।

पुस्तक देखने में छोटी लग सकती है पर इसके सार को समेटने में ऐसी सौ पुस्तकें भी असमर्थ जान पड़ती हैं। इस पुस्तक को सत्यार्थ प्रकाश के चौदहवें समुल्लास की सफलता कहा जाये तो अतिशयोक्ति न होगी। मेरे ख्याल में आर्य समाज की ओर से इस्लाम पर लिखी गयी यह पहली पुस्तक होगी जो महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज की जयघोष का डंका बजाती है। इस पुस्तक के लेखक आर्य जगत् के गौरव और आदर्श आदरणीय राजेन्द्र 'जिज्ञासु' जी हैं। ये उन लेखकों में से हैं जिनके कारण पं. लेखराम के अन्तिम शब्द सफल होते दिखते हैं। हम धन्य हैं कि हमें आज भी ऐसी कृतियों को पढ़ने का सौभाग्य मिल रहा है जिनकी नींव पं. चूमपति और स्वामी दर्शनानन्द जी जैसे विद्वानों ने रखी थी। लेखक ने आर्य समाज के लिये अपना जीवन दिया है इसलिये उनका धन्यवाद करना मेरे अधिकार क्षेत्र से बाहर की बात है। इस पुष्प को पाकर आर्य जगत् महक उठेगा। आगे भी ऐसे पुष्प प्राप्त होते रहें ताकि सदियों तक आर्य जगत् महकता रहे। ऐसी हम आशा करते हैं और निवेदन भी।

-सोमेश पाठक

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एकमात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रात: एवं सायं दैनिक यज्ञ- प्रवचन, वेद-पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***- आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति नि:शुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***- अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्णरूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था नि:शुल्क की जाती है। ***गोशाला***- गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का नि:शुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***- वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा नि:शुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***- इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोधकर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ नि:शुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***- योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में नि:शुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों में भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युक्त पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाखे जलाकर व्यय करते हैं, असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी-छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थित होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अत: आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

आमन्त्रित कर आर्यसमाज के सिद्धान्तों का डंका बजा दिया। साथ ही अपने अध्ययन को और प्रखर बनाया। उनके अध्यापक पं. हरिनाथ जी थे जिन्होंने उन्हें मुख्यत: दर्शनों का अध्ययन कराया। इसके पश्चात् उन्होंने पूर्णकालिक आर्यप्रचारक बनने तथा अपनी वैराग्यवृत्ति को सार्थकता प्रदान करने के उद्देश्य से सन् १९०१ में शान्त स्वामी अनुभवानन्द जी से पुन: संन्यास लिया और 'दर्शनानन्द' नाम धारण किया। वे अन्य शास्त्रों के अतिरिक्त विशेषत: वैदिक दर्शनों एवं सिद्धान्तों के अत्यन्त मर्मज्ञ थे। उनके शास्त्रार्थों एवं लेखन से इसकी पुष्टि होती है।

संन्यास ग्रहण के पश्चात् स्वामी जी ने आर्यसमाज की जो सेवा की वह अपने आप में एक कीर्तिमान है। वाणी, लेखनी और भ्रमण के द्वारा स्वामी जी दिन-रात धर्म-प्रचार में ही लगे रहे। अथक परिश्रम था उनका।

उनका अध्ययन इतना विशद् और प्रशस्त था कि वे किसी भी प्रतिपक्षी से एकाकी शास्त्रार्थ कर सकते थे, तर्कणाशक्ति ऐसी प्रबल थी कि विरोधी अवाक् रह जाते थे। सिद्धान्तों के पोषक अनेक नए तर्क उन्होंने आर्यजगत् को प्रदान किए।

स्वामी जी अपने ढंग के विचित्र संन्यासी थे। वे लेखक, सम्पादक, शास्त्रार्थकर्त्ता और उपदेशक तो थे ही, साथ ही अनेक गुरुकुल भी उन्होंने संस्थापित किए। निरन्तर भ्रमणशील रहते हुए जितना विपुल एवं बहुमुखी कार्य उन्होंने किया, उसको देखते हुए तो वैसा उदाहरण दुर्लभ ही प्रतीत होता है। पौराणिकों, जैनों, मुसलमानों, ईसाइयों से उन्होंने अनगिनत शास्त्रार्थ किए एवं विजय प्राप्त की। लेखक के रूप में उन्हें 'ट्रैक्ट लिखने की मशीन' तो कहा ही जाता था, साथ ही दर्शनों (न्याय, वैशेषिक, सांख्य और वेदान्त) के भाष्य, उपनिषदों (ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक और माण्डूक्य) के भाष्य, मनुस्मृति का भाष्य, कुरान की छानबीन, जीवनियाँ, कथा पच्चीसी इत्यादि अनेक ग्रन्थ उनकी लेखकीय प्रतिभा को प्रदर्शित करते हैं। उनके द्वारा रचित ट्रैक्ट लगभग तीन सौ और सम्पादित एवं प्रकाशित पत्रिकाएँ (ज्ञात) अठारह हैं।

गुरुकुलों की स्थापना उनके नि:शुल्क शिक्षा-अभियान, का प्रदर्शन है। वे मानते थे कि गुरुकुलों की शिक्षा और पद्धति के प्रचार-प्रसार के बिना न तो वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार हो सकता है और न अच्छे समाज का निर्माण। उनकी दृष्टि में शिक्षा समाज-निर्माण का अनिवार्य अंग है, अत: इसे नि:शुल्क ही होना चाहिए। वे जहाँ जाते, वहाँ बहुधा एक गुरुकुल स्थापित कर देते। आर्य जगत् में सबसे प्रथम गुरुकुल की स्थापना उन्होंने ही की थी-सन् १८९९ ई. में सिकंदराबाद (बुलन्दशहर) में। इस दृष्टि से उनकी 'गुरुकुल' 'नि:शुल्क शिक्षा' तथा 'विचित्र ब्रह्मचारी' नामक लघु पुस्तिकाएँ विशेषत: पढ़ने योग्य हैं। गुरुकुल की स्थापना कर उसके प्रबन्धन को वे अन्य आर्यों को सौंपकर आगे प्रस्थान कर जाते थे। उनका मानना था कि अच्छे कार्य करने में सोच-विचार की जरुरत नहीं, ईश्वर ऐसे पुण्य के कार्यों में स्वत: सहायता देता है। 'परोपकार दर्शन' लेख में उन्होंने लिखा, **''जिन लोगों का विचार है कि गुरुकुल नहीं चल सकता तथा धर्म के कार्य भी धन से ही चल सकते हैं, वे भूल करते हैं।''** ऐसे थे वे ईश्वर-विश्वासी तथा कर्मफल-भोग को मानने वाले।

'गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर' उनके द्वारा स्थापित गुरुकुलों में शीर्ष पर रहा, जिसने अनेक ऐसे विद्वानों का निर्माण किया जो वैदिक धर्म के प्रचारक और प्रख्यात् विद्वानों के रूप में जगत्प्रसिद्ध हुए। आधुनिक कपिल कहे जाने वाले श्रीमान् पं. उदयवीर शास्त्री इसी गुरुकुल की देन थे। ध्यातव्य है कि पंडित पद्मसिंह शर्मा के संपादकत्व में 'भारतोदय' नामक प्रसिद्ध पत्रिका इसी महाविद्यालय से प्रकाशित होती थी।

अहर्निश धर्मप्रचार की धुन लिए स्वामी जी ने घनघोर परिश्रम किया। ग्रन्थों का प्रणयन, गुरुकुलों की स्थापना, शास्त्रार्थों का आयोजन, उपदेशों द्वारा धर्म-प्रचार, इसके अतिरिक्त अनाथ-रक्षा, गौ-सेवा, पत्र-पत्रिका-संपादन इत्यादि उनके महनीय कार्य थे। इससे आर्यसमाज का डंका चहुँदिशि बजने लगा। वे आर्यसमाज की विश्वविजयिनी चमू के प्रमुख दिग्गज महारथी थे। विरोध के झंझावातों को वे तृण के समान समझते थे। आलोचनाओं की उन्हें चिन्ता नहीं रहती थी, क्योंकि उनका अन्तस्, ऋषिभक्ति, निष्ठा, निस्पृहता, परोपकार-भावना तथा आर्ष-ज्ञान की दिव्य ज्योति से आप्लावित था। साधनों की वे कभी चिन्ता नहीं करते थे। अभाव और असुविधाएँ उनके मार्ग में कभी बाधक नहीं बने, मानापमान में सदैव सम रहने वाले वे स्थितप्रज्ञ

तर्कशिरोमणि महामुनि स्वामी दर्शनानन्द जी

डॉ. वेदप्रकाश विद्यार्थी

जिन महामनस्वी और नि:स्वार्थी महापुरुषों ने महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों को आत्मसात करके संसार में वैदिक धर्म का नाद गुँजाया और आदर्श स्थापित किया, उनमें वाग्मिप्रवर श्रीमान् स्वामी दर्शनानन्द महाराज का नाम अग्रगण्य है। ऋषिवर दयानन्द ने जिस आर्यभवन का निर्माण किया, उसकी साज-सँवार और भव्यता के लिए जिन महानुभावों ने प्राणपण से सर्वस्व (तन-मन-धन) न्यौछावर किया, उन जाज्वल्यमान नक्षत्रों में स्वामी जी उच्च स्थान पर विराजमान हैं।

पंजाब की उर्वर धरा के जगरावाँ, जिला लुधियाना नामक स्थान पर माघ मास की दशमी के दिन विक्रम संवत् १९१८ को पं. रामप्रताप जोशी के यहाँ स्वामीजी का जन्म हुआ। उनका बाल्यावस्था का और बाद में भी जगत्प्रसिद्ध नाम कृपाराम था। स्वामी जी का परिवार बहुत समृद्ध था। जन्मना पौराणिक ब्राह्मण होते हुए भी उनके परिवार में मुख्यत: कपड़े का बड़ा व्यवसाय था।

प्रारम्भ से ही सांसारिक कार्यों व्यापार इत्यादि में स्वामी जी की अरुचि थी, परन्तु लोक-रीति में परिवार वाले विवाह को एक अनिवार्य परम्परा मानते हैं, सो स्वामी जी का विवाह भी संवत् १९२९ में अर्थात् मात्र ग्यारह वर्ष की वयस् में करा दिया गया, परन्तु स्वामी जी की प्रवृत्ति मुख्यत: वैराग्योन्मुखी ही रही।

अस्तु, स्वामी जी का पारिवारिक जीवन उनके मार्ग में बाधक नहीं बन सका और स्वामी जी सन् १८७८ के आस-पास संन्यासी हो गए। संन्यास ग्रहण कर आपने नित्यानन्द नाम धारण किया।

श्रीमन्महर्षि दयानन्द के दर्शन स्वामी जी ने इसी संन्यास की अवस्था में अमृतसर में किए और विभिन्न स्थानों पर महर्षि के सैंतीस व्याख्यान उन्होंने सुने। कहा जाता है कि नित्यानन्द के रूप में स्वामी जी गए तो थे महर्षि से शास्त्रार्थ करने, परन्तु उनके व्याख्यानों के श्रवण मात्र से उनकी शंकाओं का समाधान हो गया और वे ऋषिभक्ति के रंग में रंग गए। इसके पश्चात् का उनका सम्पूर्ण जीवन आर्य समाज की सुदृढ़ता और आर्ष सिद्धान्तों के प्रचार का इतिहास है।

उनके यशस्वी परिवारीजन उन्हें पुन: गृहस्थी में पकड़ लाए, परन्तु वे इस शर्त पर घर वापस आए कि बैठक में रहूँगा, ऋषि दयानन्द के सारे ग्रन्थ मँगाकर देने होंगे, भगवा वस्त्र नहीं उतारूँगा और आर्यसमाज के प्रचार के लिए प्रतिदिन दो रुपये लिया करूँगा। घर वालों ने उनकी सारी शर्तें मान लीं। अब वे अहर्निश महर्षि के ग्रन्थों के स्वाध्याय तथा आर्यसमाज के प्रचार में लग गए। घर वालों ने व्यवसाय करने को कहा, तो अपनी दुकान का नाम 'सच्ची दुकान' रखा और व्यवसाय में भी सत्य व्यवहार का उच्च मानक स्थापित किया। कहना न होगा कि यहाँ भी वे आर्य समाज के प्रचार को ही प्रमुखता देते थे।

तत्कालीन शिक्षा-व्यवस्था के कारण स्वामी जी को उर्दू, अरबी, फारसी इत्यादि का तो ज्ञान था, परन्तु संस्कृत भाषा विधिवत् उनके अध्ययन का विषय नहीं बनी थी, अत: परिवार के आग्रह और विशेषत: संस्कृत भाषा के अध्ययनार्थ स्वामी जी काशी गए और वहाँ भी आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार को ही अपना मुख्य उद्देश्य बनाया। यहाँ उन्होंने 'तिमिरनाशक' प्रेस स्थापित किया, जिसमें काशिका, महाभाष्य इत्यादि ग्रन्थ मुख्यत: छापे जाते थे, जिससे कि विद्यार्थियों को अल्प मूल्य पर पुस्तकें देकर उनकी सहायता की जा सके। इस कार्य में उन्हें बहुत घाटा सहना पड़ा, परन्तु वे भौतिक धन-संपदा की सार्थकता उसे धर्म-प्रचार के लिए लगा देने में ही मानते थे। लाभ के लिए व्यापार करना उनका उद्देश्य रहा भी नहीं था।

उनका काशी-प्रवास आर्यसमाज के लिए वरदान सिद्ध हुआ। महर्षि जी के पश्चात् काशी के विद्वानों ने उनके इस वीतरागी, तपस्वी और विद्वान् शिष्य का प्रताप देखा। तिमिरनाशक प्रेस के साथ ही इसी नाम से आर्य-सिद्धान्तों की प्रचारक पत्रिका का भी प्रकाशन उन्होंने किया। पौराणिक पंडितों से शास्त्रार्थ किए, आर्य विद्यार्थियों के लिए पाठशाला स्थापित की, आर्यसमाज के विद्वानों को

संभाग स्तरीय आर्यवीर व आर्य वीरांगना शिविर

युवक व युवतियों के संस्कार निर्माण का सुनहरा अवसर

आर्यवीर दल जिला अजमेर का

जिला स्तरीय जूडो-कराटे, आसन-प्राणायाम, व्यायाम प्रशिक्षण एवं संस्कार शिविर

छात्रों हेतु दिनांक 14 मई से 21 मई 2017 तक तथा

छात्राओं हेतु दिनांक 28 मई से 04 जून 2017 तक

स्थान : ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

आयोजक

परोपकारिणी सभा, अजमेर एवं आर्यवीर दल, राजस्थान (अजमेर सम्भाग)

शिविर में प्रवेश हेतु आवश्यक नियम

* पंजीयन शुल्क 500/- रु. देना अनिवार्य है।
* शिविरार्थियों के आवास,भोजन की व्यवस्था, परोपकारिणी सभा द्वारा रहेगी।
* शिविरार्थी की आयु कम-से-कम 13 वर्ष से कॉलेज स्तर तक हो तथा वह पूर्ण रूप से स्वस्थ होना/होनी चाहिये।
* शिविरार्थी अपने साथ सफेद टी-शर्ट, नीला लोअर, सफेद पी.टी. शूज, सफेद मोजे, मौसम के अनुकूल पहनने के कपड़े, दो नए फोटो, पैन, टार्च, तेल व साबुन इत्यादि अनिवार्य रूप से लावें।
* प्रत्येक शिविरार्थी को शिविर की दिनचर्या व अनुशासन का पालन करना होगा। अनुशासनहीनता करने पर शिविर से पृथक् कर दिया जायेगा।

आवश्यक निवेदन एवं अपील

इस विशाल शिविर के प्रबन्धन, भोजन, आवास, विज्ञापन, मार्गव्यय, मानदेय आदि पर पर्याप्त व्यय होगा। अतः आप सभी दानी महानुभावों एवं आर्यसमाजों से निवेदन है कि अपनी सहायता राशि नकद/चैक/ड्राफ्ट आदि परोपकारिणी सभा, अजमेर-305001 के पते पर भेजने की कृपा करें।

विशेषः भामाशाह दानी महानुभाव एक दिन अथवा एक समय के भोजन का व्यय अथवा भोजन सामग्री देकर भी सहयोग कर सकते हैं।

सम्पर्क सूत्र

डॉ. विश्वास पारीक-09460016590, श्रीमती रीना चौधरी-08823945956,

श्री वासुदेव आर्य-9460112092, ऋषि उद्यान - फोन : 0145-2621270

थे।

ऐसे महामनस्वी, ऋषि-पथ के पथिक ने ११ मई सन् १९१३ ई. को हाथरस में यह कहते हुए अपने प्राणों का त्याग किया-''भद्र पुरुषो! हमारा अन्तिम नमस्ते स्वीकार कीजिए। ऋषि दयानन्द के सैंतीस व्याख्यान हमने सुने थे, सैंतीस वर्ष ही (धर्म-प्रचार का) कार्य किया। ईश्वर आप लोगों को साहस दे कि आप अपने धर्म को समझें।''

जैसा कि धर्मधुनी सज्जनों के साथ होता है, वैसा ही स्वामी जी के साथ हुआ कि शरीर की चिन्ता कभी नहीं की। उन्होंने अपने साध्य को प्रमुख समझा, धर्म-प्रचार एवं शास्त्रार्थ के आह्वान को वे सदैव तत्पर रहे। वे 'भोगवाद' (कर्मफल-भोग) पर विश्वास करते थे, अत: औषधि-सेवन को नकारते रहे। नतीजा यह कि अल्प आयु में ही मोक्षगामी हुए। वैसे भी वे अकाल मृत्यु को नहीं मानते थे, अत: उनका 'भोग' यहीं तक था, यह मानना चाहिए।

स्वामी जी का कार्य इतना बहुमुखी है, उनकी प्रतिभा इतनी उच्चकोटि की है, उनका पांडित्य इतना दुर्धर्ष है कि इस छोटे से लेख में उसे लिख पाना असंभव है। हाँ, जो उनके साहित्य-सागर में श्रद्धा और लगन से अवगाहन करेंगे वे उनकी मेधा, प्रतिभा और वैदुष्य से परिचित हो सकेंगे। श्रीमान् प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु द्वारा लिखित स्वामी जी का जीवन-चरित भी उनके व्यक्तित्व और कृतित्व के विभिन्न पक्षों से भली-भाँति परिचित कराता है।

जिस प्रकार महर्षिवर्य ने तपश्चर्यापूर्वक विभिन्न शास्त्रों के सम्यक् स्वाध्याय से 'सद्-असद्-ग्रन्थ-विवेक' की शक्ति प्राप्त की थी, उसी प्रकार स्वामी जी ने भी यह विवेक शक्ति प्राप्त की थी। किसी भी विषय में द्विधाग्रस्त नहीं होते थे। दर्शनों के प्रायोगिक रूप उनके लेखन, व्याख्यान और शास्त्रार्थों में पदे-पदे परिलक्षित होते हैं। हाँ, कुछ विषय अवश्य ऐसे हैं जिन पर आर्य विद्वानों ने असहमति व्यक्त की है। जैसे- भोगवाद अर्थात् कर्मफल सिद्धान्त एवं काल-अकाल-मृत्युविचार, वृक्षों में (अहंकारी) जीव का अस्तित्व, शरीर में जीवात्मा की व्यापकता अथवा आत्मा का स्वरूप (विभु, अणु या मध्यम परिमाण)। परन्तु इन विषयों पर उनके तर्क बड़े प्रबल हैं और उन्हें आसानी से खंडित नहीं किया जा सकता। अस्तु, विद्वानों द्वारा ये सिद्धान्त विचारणीय थे, हैं और रहेंगे भी, परन्तु हमारा कथन है कि स्वामी जी का शास्त्रीय ज्ञान निर्विवाद है और भारत के दार्शनिक संप्रदायों ने उसकी उपेक्षा की है। आर्यजगत् में अनुसंधान की आधुनिक प्रवृत्तियों के प्रवर्त्तक पंडित भगवद्दत्त जी ने लिखा, ''स्वामी दर्शनानन्द जी जैसा तत्त्वदर्शी व्यक्ति यदि यूरोप देश में उत्पन्न हुआ होता, तो वहाँ वह फिलॉसफरों का शिरोमणि कहके पूजा जाता और सर्वभूमण्डल उन्हें वैसा ही प्रतिष्ठित मानता।''

स्वामी जी के समान सहयोगियों में पं. लेखराम, महात्मा मुंशीराम, पं. मुरारीलाल शर्मा, श्रीमान् नारायण प्रसाद, स्वामी सर्वदानन्द, पं. आर्यमुनि इत्यादि अग्रगण्य तो थे ही, कनिष्ठों में सम्पादकाचार्य पं. पद्मसिंह शर्मा एवं नरदेव जी शास्त्री 'वेदतीर्थ' जैसे महानुभाव भी थे। पं. नरदेव जी का कथन उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व का एक चित्र प्रस्तुत करने हेतु पर्याप्त है-''स्वामी दयानन्द के पश्चात् आर्यजगत् में जितना प्रचार हुआ है उसके आधे से अधिक प्रचार का श्रेय स्वामी दर्शनानन्द जी को ही है। स्वामी दर्शनानन्द जी क्या थे? उत्साह, जागृति एवं स्फूर्ति की ज्वलन्त मूर्ति थे। इतना निर्लोभ, नि:स्पृह व्यक्ति आर्य जगत् में दूसरा देखने को नहीं मिलेगा। सहस्रों छात्रजनों को सहायता पहुंचाने वाले, कितने ही गरीबों का उद्धार करने वाले स्वामी दर्शनानन्द जैसे और कहाँ मिलेंगे।''

यद्यपि उनके तत्कालीन आलोचक बहुत से थे, परन्तु वे सब उनकी कार्यपद्धति के आलोचक थे, उनके चरित्र के नहीं। यही कारण था कि स्वामी जी अजातशत्रु जैसे रहे और वैसे ही प्रयाण कर गए। उनके प्रति विस्तृत श्रद्धाञ्जलियों के लिए श्री जिज्ञासु जी द्वारा रचित उनका खोजपूर्ण जीवन-चरित पठितव्य है।

अन्त में पं. लेखराम द्वारा रचित ये काव्य-पक्तियाँ प्रस्तुत हैं, जो स्वामी जी को बहुत प्रिय थीं तथा जो उनके द्वारा प्रकाशित 'वैदिक धर्म' के ध्येयवाक्य के रूप में छपतीं थीं। ये चुनौतीपूर्ण पंक्तियाँ आज भी आर्यसमाज के और स्वामी जी के ध्येय की सम्यक् अभिव्यक्ति में समर्थ हैं-

नक़्क़ारा वेद का बजता है, आए जिसका जी चाहे।
सदाक़त वेद अक़दस आजमाए, जिसका जी चाहे।।
(सदाक़त=सच्चाई, वेद अक़दस=परम पवित्र वेद की)

लिए प्रेरित करते हैं, जिससे हम अपने जीवन में उन्नति कर सकें। वर्तमान में वैदिक वाङ्मय से पुनः परिचित कराने वाले महर्षि दयानन्द जी 'विश्वानि देव सवितर्दुरितानि.......' मन्त्र द्वारा ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना करते हुए यही कामना करते थे कि हमारे सब दोष दूर हों और हम सद्‌गुणों को धारण करें। सद्‌गुणों से सुख और दुर्गुणों से दुःख होता है। हमारे सद्‌गुण विकसित होकर हमारा कल्याण करें। शारीरिक, मानसिक और आत्मिक विकास के बिना हमारा जीवन सुखी नहीं हो सकता। इसीलिये आर्य समाज के छठे नियम में महर्षि दयानन्द जी ने शारीरिक उन्नति को सबसे पहले लिखा। शारीरिक उन्नति से ही आत्मिक और सामाजिक उन्नति हो सकता है। स्वास्थ्य के नियमों का पालन तथा उचित व्यायाम करना आवश्यक है। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का निवास होता है।

प्रातःकालीन प्रवचन में **स्वामी सोमानन्द जी** ने कहा कि दूसरों को आदर्शों का उपदेश करना सरल है, किन्तु उसे व्यवहार में लाना कठिन होता है और कुछ मनुष्यों के लिए तो असम्भव भी होता है। दूसरों को उपदेश करने से पहले उन आदर्शों का स्वयं पालन करना आवश्यक है। जीवन में आदर्शों का पूर्ण रूप से पालन करने वाले संसार के लिए महापुरुष बन जाते हैं।

शनिवारीय सायंकालीन प्रवचन में **डॉ. रश्मि प्रभा शास्त्री जी** ने कहा कि उपासक अपने हृदय में जब ईश्वर का ध्यान करना चाहता है तो उसे उसके अनुकूल बनना ही पड़ेगा। जैसे हम घर में अतिथि के आगमन से पहले साफ-सफाई और आवश्यक वस्तुओं का प्रबन्ध करते हैं वैसे ही अन्तर्यामी महान् परब्रह्म की उपासना से पहले शरीर और मन के दोषों को दूर करें। अविद्या आदि क्लेशों को दूर करें। श्रद्धापूर्वक आत्मा का समर्पण करें। जैसे अग्नि में तपाने से स्वर्ण के मल दूर होते हैं वैसे ही प्राणायाम से हृदय की शुद्धि और मन की स्थिरता होती है, चित्त शान्त होता है। मन से तप करते हुए हम उसके अनुकूल बनें। यम, नियम का पालन करें। **बहन रेणु जी** ने बताया कि संविधान और सरकार द्वारा स्वीकृत जिस भाषा में प्रशासनिक कार्य होता है उसे राजभाषा कहते हैं। किसी भी देश के बहुसंख्यक लोग बोलचाल और व्यवहार में जिस भाषा प्रयोग करते हैं, वह मातृभाषा कहलाती है। जिस भाषा में समृद्ध साहित्य लिखा गया हो, जिसका सुनिश्चित व्याकरण हो, जो देश की संस्कृति को वहन करती हो, वह राष्ट्रभाषा है। हमारे देश की राजभाषा और राष्ट्रभाषा दोनों हिंदी ही है। हिंदी को राजभाषा बनाने में आर्य समाज, अन्य सामाजिक संगठन, अनेक विद्वानों और राजा शिव प्रसाद सितारे हिन्द का बहुत बड़ा योगदान है।

रविवारीय सायंकालीन प्रवचन में **ब्रह्मचारी दिलीप जी** ने बताया कि सृष्टि के आदि से लेकर अब तक चारों वेद मूल रूप में उपलब्ध हैं। वेद को छोड़कर अन्य ग्रन्थों में प्रक्षेप होना, पूर्णतः नष्ट होना सम्भव है। संहिता पाठ, पद पाठ, क्रम पाठ (ये तीनों प्रकृति पाठ कहलाते हैं), जटा पाठ, माला पाठ, शिखा पाठ, रेखा पाठ, ध्वज पाठ, दण्ड पाठ, रथ पाठ और घन पाठ (क्रम पाठ के ही ये आठ प्रकार हैं)- ऐसे ग्यारह प्रकार से वेदों का सस्वर पाठ होने के कारण यह सुरक्षित रहता है। **ब्र. तीर्थराम जी** ने व्याकरण शास्त्र के विषय में चर्चा करते हुए बताया कि जिससे शब्दों के विभाग किये जाते हैं, उसे व्याकरण कहते हैं। व्याकरण पढ़ने के १८ प्रयोजन हैं। वेदों की रक्षा और अर्थ जानने के लिये व्याकरण का अध्ययन किया जाता है। महर्षि पाणिनि की अष्टाध्यायी, महर्षि कात्यायन का वार्तिक और महर्षि पतञ्जलि का महाभाष्य, ये तीनों ग्रन्थ एक दूसरे के पूरक हैं। वेद, गोपथ ब्राह्मण, वाल्मीकि रामायण आदि अन्य ग्रन्थों में भी व्याकरण के कुछ संकेत मिलते हैं। सारस्वत, चंद्रिका, कातन्त्र आदि व्याकरण ग्रन्थों की अपेक्षा महर्षि पाणिनि की अष्टाध्यायी को सभी विद्वान् सर्वश्रेष्ठ मानते हैं। पाणिनि अष्टाध्यायी में आपिशल, गार्ग्य, गालव, काश्यप, शाकल्य, शाकटायन, भारद्वाज एवं अन्य ऋषियों के भी नाम आये हैं।

रामनवमी पर्व सम्पन्न - इस अवसर पर **आचार्य सत्यजित् जी** ने कहा कि यह पर्व भारत देश के साथ-साथ आज पूरे विश्व में मनाया जा रहा है। रामायण की घटनाएं सब जगह सुनी-सुनायी जाती हैं। महर्षि वाल्मीकि ने एक बार तपस्वी नारद से पूछा- इस समय संसार में

संस्था - समाचार

- लेखराम आर्य

प्रात:कालीन प्रवचन में ऋग्वेद के ३६वें सूक्त के मन्त्रों की व्याख्या करते हुए **आचार्य सत्यजित् जी** ने कहा कि विद्यार्थियों को वे ही विद्वान् पढ़ावें, जो अपनी विद्या के अनुकूल कर्म करने वाले हों। जैसे चिकित्सा विज्ञान के विद्यार्थियों को वे ही विद्वान् पढ़ावें, जो चिकित्सा कार्य से जुड़े हुए हों अर्थात् चिकित्सा का अनुभव हो। इसी प्रकार अन्य विद्याओं को भी उस विषय के व्यावहारिक ज्ञान रखने वाले-अनुभवी विद्वान् ही पढ़ावें। वे सब विद्वान् न्यायकारी और धार्मिक हों। बुद्धिमानों, विद्वानों को प्रशंसनीय शिल्पविद्या बढ़ाने के लिये हमेशा प्रयास करना चाहिये, जिससे व्यावहारिक और पारमार्थिक सुख प्राप्त होवे। वे ही विद्वान् उत्तम हैं जो विद्यार्थियों को उत्तम करते हैं। वे ही मनुष्य सुखी होते हैं जो विद्या और धन को पाकर धर्मात्मा होते हैं। अपने कार्य में कुशल, किन्तु जो नास्तिक और अधर्मी रहकर अन्याय से धन कमाते हैं, वे बुद्धिमान् नहीं हैं। विद्यार्थी केवल नौकरी और व्यवसाय करने के उद्देश्य से न पढ़े, अपितु धर्म सम्बन्धी श्रेष्ठ कार्यों के सम्पादन के लिए पढ़े।

रविवारीय प्रात:कालीन सत्संग में सभा मंत्री **श्री ओम्मुनि जी** ने बताया कि ब्यावर के आर्य समाज में स्वामी शान्तानन्द जी रहते थे, जो कहते थे कि भोजन अपना करना चाहिये और काम समाज का करना चाहिये। उन्होंने बताया कि महात्मा आनन्द भिक्षु जी भी वहाँ उपदेश करने आते थे। आज भी वह परम्परा चल रही है। प्रतिवर्ष गर्मी के दिनों में कार्यक्रम होता है। उस समय शंकराचार्य, आदि पौराणिक पंडित महिलाओं की शिक्षा का विरोध करते थे। ब्यावर में आर्य समाज ने महिलाओं के लिये कॉलेज खोला। शंकराचार्य की पोती उसमें संस्कृत पढ़ने आई। आर्यसमाज के कार्यक्रमों का प्रभाव ईसाइयों, मुसलमानों, जैनियों, पारसियों पर भी पड़ा।

प्रात:कालीन प्रवचन में **स्वामी आशुतोष जी** ने कहा कि देवयज्ञ-अग्निहोत्र से वायु शुद्ध होती है, किन्तु इसे करते समय मन में राग-द्वेष, ईर्ष्या, अहंकार, दिखावा आदि नहीं होना चाहिये। तभी इसका पूरा लाभ होता है। अन्यथा केवल बाहरी वायु-शोधन का लाभ मात्र होता है आन्तरिक लाभ अर्थात् मानसिक लाभ नहीं होता है। यज्ञ में उत्तम सुगन्धित औषधियों का प्रयोग करने से मेधा और आयु बढ़ती है, जीव पंचकोषों की शुद्धि होती है। जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त सभी संस्कारों में यज्ञ ही होता है। प्राप्त धन के अधिकांश भाग का उपयोग यज्ञ के लिये करना चाहिये। यज्ञ से शरीर की धातुओं का संतुलन होता है, भोजन देवकोटि का हो जाता है, मृत्यु रोग दूर हो जाता है। देवों का भोजन हवि है। हमारा जीवन वैदिक हो और हम यज्ञशेष का भोजन करें। थोड़ा लेकिन पौष्टिक भोजन करना चाहिये। गाय का दूध संसार का सर्वोत्तम भोजन है। उसी से परमात्मा का पूजन अर्थात् ध्यान उपासना करने में सहायता मिलती है। हमारा भोजन शरीर और प्राणों को ऊर्जा देने वाला हो। आहार की शुद्धि से चित्त की शुद्धि होती है। चावल और जौ से बने भोजन करें। भोजन ऐसा हो जो शरीर के दोषों को बाहर फेंके और प्राणशक्ति को धारण कराये। संयमपूर्वक भोजन करने से १०० वर्ष से अधिक स्वस्थ रहते हुए जीवित रह सकते हैं।

प्रात:कालीन प्रवचन में **आचार्य सोमदेव जी** ने कहा कि ब्रह्माण्ड के सब पिण्ड अपने कक्ष में गतिमान रहते हैं कभी असंतुलित होकर मार्ग भटककर एक दूसरे से टकराते नहीं। मन, मस्तिष्क का संतुलन बने रहने से किसी भी प्रकार का संकट आने पर व्यक्ति का संतुलन नहीं बिगड़ता। संतुलित व्यक्ति आगे बढ़ता है अमृतत्व को प्राप्त कर लेता है। राजतिलक की घोषणा होने के दूसरे दिन वनवास का आदेश मिलने पर भी श्रीरामचन्द्र जी का शारीरिक, मानसिक संतुलन नहीं बिगड़ा। वे आदर्श मर्यादा पुरुषोत्तम थे, इसीलिये लोगों के मन में उनके प्रति श्रद्धा थी और आज भी है।

प्रात:कालीन प्रवचन में **आचार्य कर्मवीर जी** ने कहा कि वेद की ऋचाएँ, दर्शनों के सूत्र हमें अपनी न्यूनताओं, उन्नति में बाधक दुर्गुणों, दुर्व्यसनों को दूर करने और श्रेष्ठ गुण, कर्म, स्वभावों को अपने जीवन में धारण करने के

शङ्का - समाधान - १

- डॉ. वेदपाल

शङ्का-शरीर में श्वास लेते समय प्राणवायु ऑक्सीजन प्रवेश करती है, अत: श्वास लेने को प्राण कहना ही युक्तिसंगत है।श्वास छोड़ते समय हानिकारक गैस कार्बन-डाइऑक्साइड शरीर से बाहर निकलती है, इसलिये श्वास छोड़ने को अपान कहना युक्तिसंगत है। वैसे भी पान का अर्थ है, ग्रहण करना। अत: अपान शब्द पान शब्द का विलोम हुआ। इस कारण अपान का अर्थ हुआ छोड़ना। अत: श्वास छोड़ने को ही अपान तथा श्वास लेने को प्राण कहना तार्किक एवं सही है। महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के 'वेदोक्त धर्म-विषय' में अथर्ववेद के मन्त्र-१२/५/९ की व्याख्या करते हुये प्राण और अपान के सम्बन्ध में जो उल्लेख किया गया है, वह इससे उलटा है। इसमें श्वास छोड़ने को प्राण और श्वास लेने को अपान कहा है। अथर्ववेद के मन्त्र-४/१३/२ एवं ३ की व्याख्या करते हुये श्री क्षेमकरणदास त्रिवेदी और पण्डित हरिशरण सिद्धान्तालंकार ने श्वास लेने को प्राण और छोड़ने को अपान ही लिखा है। ऋग्वेद के मन्त्र-१०/१३७/२ एवं ३ में भी ऐसा ही लिखा है। पण्डित गंगाप्रसाद उपाध्याय ने अपनी पुस्तक 'जीवात्मा' में भी पृष्ठ-५६ पर श्वास लेने को प्राण और छोड़ने को अपान ही लिखा है।

अत: ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के वेदोक्त धर्म-विषय में उपरोक्त त्रुटि 'लेखन-त्रुटि' ही प्रतीत होती है। विद्वानों द्वारा गहन विचार-विमर्श उपरान्त एकमत होकर इस लेखन-त्रुटि को ठीक कर देना चाहिये।

- जगदीश प्रसाद शर्मा, भोपाल

समाधान- सर्वप्रथम अथर्व १२.५.९ 'आयुश्च रूपं च नाम च कीर्तिश्च प्राणश्चापानश्च चक्षुश्च श्रोत्रं च'-मन्त्रस्थ प्राण-अपान की महर्षि कृत व्याख्या को लें-''शरीराद् बाह्यदेशं यो वायुर्गच्छति स 'प्राण:' बाह्यदेशाच्छरीरं प्रविशति स वायुरपान:''(ऋ.भा.भू.)।

शर्मा जी का अभिमत कि महर्षिकृत व्याख्या अन्य विद्वानों द्वारा अनुमोदित नहीं है। अत: लेखन-त्रुटि मानकर ठीक कर देना चाहिए के सन्दर्भ में निम्न बिन्दु विचारणीय हैं-

१. शर्मा जी द्वारा अपान शब्द को पान शब्द का विलोम मानना उचित नहीं है। पान शब्द पा धातु से ल्युट् प्रत्यय होकर निष्पन्न हुआ है, जबकि अपान शब्द अप उपसर्ग पूर्वक अन प्राणने (अदादि.) धातु (पा नहीं)से अच् प्रत्यय होकर निष्पन्न होता है। इसका अर्थ है- अपानयति मूत्रादिकम् (अप+आ+नी+ड वा)।

यदि दुर्जनतोष न्याय से अपान शब्द को पान शब्द से नञ् समास का अवशिष्ट अ पूर्वक मान भी लें तो नञ् (अ) केवल निषेधार्थक ही नहीं है। नञ् के छ: अर्थ हैं-

तत्सादृश्यं तदन्यत्वं तदल्पत्वं विरोधिता।
अप्राशस्त्यमभावश्च नञर्थाः षट् प्रकीर्तिताः।।

वामन शिवराम आप्टे (संस्कृत हिन्दी कोष, प्रकाशक-मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली) ने अपान शब्द के निम्न अर्थ किए हैं-

''श्वास बाहर निकालना, श्वास लेने की क्रिया, शरीर में रहने वाले पांच पवनों में से एक जो कि नीचे की ओर जाता है तथा गुदा के मार्ग से बाहर निकलता है''-पृ. ६२

२. प्राण शरीर में रहते हुए क्रिया भेद के आधार पर प्राण-अपान-व्यान-समान-उदान कहा जाता है। तद्यथा- **''प्राणोऽन्तः शरीरे रसमलधातूनां प्रेरणादिहेतुरेकः सन् क्रियाभेदादपादानादिसंज्ञां लभत''**- प्रशस्तपाद (द्रव्ये वायु प्रकरणम्) सम्पूर्णानन्द-संस्कृतविश्वविद्यालय: वाराणसी, द्वि.सं. पृ. १२१

उपर्युद्धृत प्रशस्तपाद पर कन्दली भी द्रष्टव्य है- **''मूत्रपुरीषयोरधोनयनादपानः, रसस्य गर्भनाडीवितननाद् व्यानः, अन्नपानादेरूर्ध्वं नयनादुदानः, मुखनासिकाभ्यां निष्क्रमणात् प्राणः, आहारेषु पाकार्थमुदरस्य वह्नेः समं सर्वत्र नयनात् समान इति न वास्तव्यमेतेषां पञ्चत्वमपितु कल्पितम्।''**

३. वेद के प्रसिद्ध भाष्यकार सायण का अथर्ववेद के १२ वें काण्ड पर भाष्य उपलब्ध नहीं है, किन्तु अथर्व १८.२.४६ 'प्राणो अपानो व्यानः.........' मन्त्र की सायण

गुणवान्, तेजस्वी, पराक्रमी, धर्मज्ञ, कृतज्ञ, अहंकाररहित, सदाचारी, सब प्राणियों के कल्याण में तत्पर, सत्यवक्ता, अपने व्रत में दृढ़, तपस्वी, दयालु, सेवाभावी, अक्रोधी, विद्वान् और देखने में सुन्दर महापुरुष कौन है? तब नारद ने इक्ष्वाकु वंश में उत्पन्न श्री रामचन्द्र जी का नाम लिया। राजा होते हुए भी वे त्यागी और तपस्वी थे। उनका चरित्र सबके लिए अनुकरणीय है।

अतिथि- पिछले पन्द्रह दिनों में लगभग ३३ अतिथिगण भ्रमण एवं प्रचार हेतु ऋषि उद्यान पधारे। जिनमें स्वामी कृष्णानन्द जी, स्वामी आशुतोष जी, हेमन्त मुनि जी, स्वामी राजानन्द सरस्वती जी, स्वामी हरीश मुनि जी, वेदमुनि जी, वल्लभ मुनि जी, डॉ. रामचन्द्र जी एवं आचार्य ज्ञानेन्द्र जी प्रमुख रहे। इसी क्रम में वायुसेना, नासिक में तेरह वर्षों से कार्यरत उड़ीसा निवासी श्री विजय प्रसाद उपाध्याय जी भी यहाँ पधारे। महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों को पढ़कर पं. शिवकर बापू तलपदे जी ने सर्वप्रथम विमान बनाया, यह जानकर आप विद्यार्थी जीवन में ही वैदिक विचारधारा से जुड़ गये। गुरुकुल आमसेना में कुछ समय रहकर संस्कृत भाषा, सत्यार्थ प्रकाश एवं अन्य वैदिक साहित्य का अध्ययन किया। वर्तमान में आप वैदिक विमान विद्या पर शोध-कार्य कर रहे हैं। आपने बताया कि तलपदे जी की १००वीं पुण्य तिथि पर परोपकारिणी सभा द्वारा उनकी चार पुस्तकों का प्रकाशन किया जायेगा।

शोध कार्य एवं स्वाध्याय- परोपकारिणी सभा के अन्तर्गत दयानन्द आश्रम केसरगंज, अजमेर में वैदिक पुस्तकालय एवं अनुसन्धान केन्द्र संचालित किया जाता है। यहाँ पर वेद, धर्म, संस्कृत भाषा, चिकित्सा, योग आदि अनेक विषयों के अत्यन्त दुर्लभ पुरानी-नई पुस्तकों का विशाल संग्रह है। यह पुस्तकालय सुबह १० बजे से शाम ५ बजे तक खुला रहता है। यहाँ विभिन्न विषयों में पीएच.डी. करने वाले विद्वान्, व्याख्याता, प्रवक्ता, चिकित्सक, इंजीनियर, बी.एड. पढ़ने वाले विद्यार्थी, स्कूल-कॉलेज के छात्र-छात्राएं, सेवानिवृत्त कर्मचारी, व्यवसायी, वैदिक विद्वान्, संन्यासी, ब्रह्मचारी अपना ज्ञान बढ़ाने के लिए आते रहते हैं।

*** आचार्य सोमदेव जी का प्रचार कार्यक्रमः-**

सम्पन्न कार्यक्रमः-

(क) १७-२३ अप्रैल २०१७: आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश-१, नई दिल्ली।

आगामी कार्यक्रमः-

(क) ६-७ मई २०१७: मढाणा आर्यसमाज मंदिर, नारनौल।

(ख) १९-२० मई २०१७: उमाही कलां, सहारनपुर में आर्यसमाज सम्मेलन।

(ग) २५-३१ मई २०१७: मलारना चौड़, जि. सवाई माधोपुर।

आगामी ऋषि मेला

२७, २८, २९ अक्टूबर २०१७, शुक्र, शनि, रविवार

को ऋषि उद्यान, अजमेर में होगा

वैदिक पुस्तकालय, अजमेर की पुस्तकों की राशि ऑनलाइन जमा कराने हेतु

बैंक का नाम - **पंजाब नेशनल बैंक, कचहरी रोड, अजमेर।**

बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - **0008000100067176**

IFSC - PUNB0000800

आप क्यों चल दिए

- सावित्री आय

आचार्य धर्मवीर जी आर्य आप क्यों चल दिए,
इतनी जल्दी क्या थी जाने की, क्यों चल दिए।
आप तो वैदिक धर्म की तकदीर थे, क्यों चल दिए,
आप तो ऋषि-मिशन की सच्ची तस्वीर थे, क्यों चल दिए?

आप तो धर्म थे और वीर थे, धर्म-रक्षक थे और धीर थे
परोपकारी पत्रिका के सम्पादक,
सारे आर्यों के दिलों का संगीत थे, आप क्यों चल दिए?
आज आर्य जगत रो रहा है और पूछ रहा है, क्यों चल दिए
धर्मवीर जी आपके काम बाकी थे,
आस्था भजन पर वेद के व्याख्यान बाकी थे।

भारतीय संस्कृति-सभ्यता के अनुसंधान बाकी थे,
फिर आप क्यों चल दिए
हॉलैण्ड, अमेरिका की यात्रा पर कौन जाएगा,
वहाँ के दृश्यों को पत्रिका में कौन दर्शाएगा,
हम आपसे जाने का कारण पूछ रहे हैं, क्यों चल दिए?
शायद आप भी ऋषि की भाँति, ईश्वर की इच्छा से चले गए
इतना वक्त न मिला, बिन बुलाए चल दिए।

जब शाम के ७ बजेंगे, नजरें आस्था चैनल पर ढूँढेंगी आपको
आत्मा कहेगी तुम जिसे ढूँढ रहे हो,
वह ईश्वर के पास चल दिए।
जीवन की इस यात्रा को पूर्ण कर
शायद एक नया संसार-परिवार बनाने चल दिए
पर यह दिल फिर भी पूछ रहा है, हाय तुम क्यों चल दिए?

अपने प्यारे पूरे परिवार को छोड़ा,
भारत के सभी आर्यों से नाता तोड़ा,
आप तो सच्चे और अच्छे विद्वान् थे,
इसलिए सच्चे परमपिता परमात्मा से नाता जोड़ा।
क्या इसलिए चल दिए, आप क्यों चल दिए?
ईश्वर से करती हूँ पुकार, खुलें आपके मोक्ष के द्वार
पीछे शान्त रहें आर्य एवम् आपका परिवार,
क्यों आप चल दिए?

पाठकों की प्रतिक्रिया

१. सम्मानीय डॉ. दिनेशचन्द्र जी शर्मा, सादर नमस्ते।

परोपकारी फरवरी (द्वितीय) २०१७ की एक प्रति १७ फरवरी को प्राप्त हुई। यह देखकर प्रसन्नता हुई कि डॉ. धर्मवीर के समय में पत्रिका का जो स्वरूप रहा है, उसमें कुछ भी परिवर्तन नहीं हुआ है। डॉ. धर्मवीर जी को भी भुलाया नहीं गया है। उनका भी लेख पढ़ने को मिल रहा है। स्थाई शीर्षकों से लिखा जाने वाला समस्त पदार्थ भी यथावत् लिखा जा रहा है। आर्यसमाज के पूर्व लब्ध-प्रतिष्ठित विद्वानों यथा स्वामी मुनीश्वरानन्द जी, भाई परमानन्द जी तथा पं. नारायण प्रसाद के लेखों एवं काव्य-रचना को भी इस अंक में आपने स्थान दिया है, जो स्तुत्य है। आत्मनिवेदन के रूप में आपका सम्पादकीय लेख आपकी विनम्रता, गुणग्राह्यता तथा अपने से बड़ों के प्रति श्रद्धाभाव व्यक्त कर रहा है। ऐसा लेख तो आप जैसा कोई विनम्र विद्वान् ही लिख पाता है। मेरी दृष्टि से पत्रिका उसी प्रकार पाठकों को आकर्षित करती रहेगी जैसी डॉ. धर्मवीर जी के समय करती थी। अन्त में परोपकारी परिवार के लिए शुभकामना करता हूँ। आपका शुभाकांक्षी

- शिवनारायण उपाध्याय, कोटा, राज.

२. माननीय सम्पादक महोदय जी।

मैंने अप्रैल प्रथम परोपकारी की पत्रिका में पहली बार आपका सम्पादकीय लेख पढ़ा, वर्तमान की समस्या को लेकर आपने विचार प्रकट किए हैं, इसीलिए आप धन्यवाद और बधाई के पात्र हैं।

- सावित्री आर्य, करनाल

३. आदरणीय डॉ. दिनेशचन्द्र शर्मा जी, सादर नमस्ते।

आपने सम्पादक का कार्य बहुत अच्छे प्रकार से सम्भाल लिया है। इसके लिए आप उत्साह और लग्न से काम कर रहे हैं, अत: धन्यवाद एवं बधाई के पात्र हैं। आपकी कार्य कुशलता पत्रिका में स्पष्ट झलकती है। आप द्वारा लेखों का सम्पादन, चयन और निर्धारण उत्तम प्रकार का होता है। परोपकारी पत्रिका में आपका चित्र देखने को भी नहीं मिला है, यह आपके निस्वार्थ भाव एवं त्याग और समर्पण को प्रदर्शित करता है। माह मार्च प्रथम अंक विशेष रूप से प्रेरणादायक, शिक्षाप्रद एवं जानकारी देने वाला अंक तो है ही, परन्तु यह आर्यसमाजों के लिये भी विशेषरूप से पथप्रदर्शक है।

- सत्यपालसिंह आर्य, मेरठ

व्याख्या द्रष्टव्य है-

''**मुख्य प्राणस्य तिस्रो वृत्तयः प्राणाद्याः। मुखनासिकाभ्यां बहिर्निःसरन् वायुः प्राणः। अन्तर्गच्छन् अपानः। मध्यस्थः सन् अशितपीतादिकं विविधम् आनयति कृत्स्नदेहं व्यापयतीति व्यानः।**''

आचार्य सायण भी प्राण अपान का वही अर्थ करते हैं जो ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में उपलब्ध है।

४. अथर्व ११.४.८ '**नमस्ते प्राण प्राणते नमो अस्त्वपानते**'- मंत्र का पं. जयदेव कृत अर्थ- हे (**प्राण प्राणते नमः**) प्राण! प्राणक्रिया करते, श्वास त्यागते हुए तुझे नमस्कार है।

(अपानते नमः अस्तु) श्वास ग्रहण करते हुए तुझे नमस्कार है।

इसी प्रकार अथर्व ११.४.१४ पर भी पं. जयदेव एवं सायण भाष्य भी द्रष्टव्य हैं।

५. वैशेषिक दर्शन ३.२.४- '**प्राणापाननिमेषोन्मेषजीवनमनोगतीन्द्रियान्तरविकाराः सुखदुःखेच्छाद्वेषप्रयत्नाश्चात्मनो लिङ्गानि**' सूत्र पर पं. हरिप्रसाद वैदिक मुनिकृत प्राण-अपान की व्याख्या- '**मुखनासिकाभ्यां बहिर्निष्क्रमणशीलः ऊर्ध्वगतिकः शरीरान्तः सञ्चारी वायुः प्राणः। मूत्रपुरीषयोरधोनयनहेतु वाग्गतिकः शरीरान्तः सञ्चारी वायुरपानः।**'

उक्त सूत्र पर पं. तुलसीराम स्वामी -''मुख और नासिका से बाहर निकलने वाला, ऊपर को चलने वाला, **शरीरस्थ वायु प्राण कहाता है**, मूत्र और विष्ठा को नीचे निकालने वाला शरीरस्थ वायु अपान कहाता है।''

६. सत्यार्थप्रकाश सप्तम समुल्लास पृ. १२६ पर जीव के गुणों के वर्णन में महर्षि दयानन्द वैशेषिक के पूर्व उद्धृत सूत्र ३.२.४ की व्याख्य '(प्राण) प्राण वायु को बाहर निकालना (अपान) प्राण को बाहर से भीतर को लेना करते हैं।'

७. वाचस्पत्यम् शब्दकोष में भी-**प्राणः वायुस्तस्य कर्म नासाग्रतो बहिर्गतिः** (भाग-६, पृ. ४५०८) नासाग्र से बाहर जाने वाले वायु को प्राण कहा है।

उक्त सभी सन्दर्भों को दृष्टिगत रखकर यह कहा जा सकता है कि महर्षि दयानन्दकृत अर्थ की सम्पुष्टि आचार्य सायण, महर्षि द्वारा मान्य वैशेषिक के भाष्यकार प्रशस्तपाद के कन्दली टीकाकार श्रीधर, पं. हरिप्रसाद वैदिक मुनि, संस्कृत के प्रसिद्ध कोष वाचस्पत्यम्, कोषकार आप्टे, पं. जयदेव तथा पं. तुलसीराम आदिकृत भाष्य से होती है। अतः परम्परा द्वारा स्वीकृत होने से महर्षिकृत अर्थ त्रुटिपूर्ण नहीं है।

परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित आगामी कार्यक्रम

१. १४ से २१ मई, २०१७ आर्यवीर शिविर, सम्पर्क- ०९४६००१६५९०

२. २८ मई से ०४ जून, २०१७ आर्य वीराङ्गना शिविर, सम्पर्क- ०८८२३९४५९५६

३. १८ से २५ जून, २०१७- योग-साधना शिविर, सम्पर्क- ०१४५-२४६०१६४

जब तक सब की रक्षा करने वाला धार्मिक राजा वा आप्त विद्वान् न हो तब तक विद्या और मोक्ष के साधनों को निर्विघ्नता से पाने के योग्य कोई भी मनुष्य नहीं होता है और न मोक्षसुख से अधिक कोई सुख है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५२

मनुष्यों को चाहिये कि अपने पुरुषार्थ से सुवर्ण आदि धन को इकट्ठा कर घोड़े आदि उत्तम पशुओं को रक्खें क्योंकि जब तक इस सामग्री को नहीं रखते तब तक गृहाश्रमरूपी यज्ञ परिपूर्ण नहीं कर सकते इसलिये सदा पुरुषार्थ से गृहाश्रम की उन्नति करते रहें।

- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६३

आर्यजगत् के समाचार

१. प्रवेश प्रारम्भ- आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय होशंगाबाद, म.प्र. में कक्षा ६ व ७ में योग्य विद्यार्थियों हेतु प्रवेश प्रारम्भ हो चुके हैं। दि. १५ जून से १५ जुलाई २०१७ के बीच में आने वाले प्रत्येक रविवार में मौखिक व लिखित परीक्षा दिलवाकर छात्रों को प्रवेश करवा सकते हैं। **सम्पर्क सूत्र- ०९४२४४७१२८८, ०९९०७०५६७२६**

२. प्रवेश प्रारम्भ- आर्ष कन्या गुरुकुल, भुसावर, जि. भरतपुर, राज. में महर्षि कृत आर्ष पाठविधि तथा राज.मा.शि. बोर्ड की दोनों पाठ विधि अनिवार्य रूप से पढ़ाई जाती हैं। संगीत एवं वाद्ययन्त्र, कम्प्यूटर, सिलाई प्रशिक्षण का अनिवार्य विषय के रूप में अभ्यास कराया जाता है। कम्प्यूटर का आरएस-सीआईटी का डिप्लोमा भी कराया जाता है। कक्षा ५ से ७ में प्रवेश प्रारम्भ हो रहे हैं। आर्य महिला भजनोपदेशिका विद्यालय में भी प्रवेश प्रारम्भ हो गये हैं। भजनोपदेशिका बनने की इच्छुक छात्रा शीघ्र सम्पर्क करें। **सम्पर्क सूत्र- ०९६९४८९२७३५, ०८४४१०८७४०८**

३. भजनोपदेशक प्रशिक्षण- गुरुकुल कुरुक्षेत्र, हरियाणा में 'आर्य भजनोपदेशक प्रशिक्षण केन्द्र' की स्थापना की गई है। इस प्रशिक्षण केन्द्र पर विधिवत् प्रशिक्षण प्रारम्भ हो चुका है। जो भी प्रशिक्षण प्राप्त करने का इच्छुक है, उसके आवास, प्रशिक्षण एवं भोजन की व्यवस्था गुरुकुल की ओर से नि:शुल्क रहेगी। प्रशिक्षण के बाद गुरुकुल के माध्यम से ही उचित मानदेय पर अपनी सेवा भी प्रदान कर सकेंगे। **सम्पर्क सूत्र- ०९४६६४३६२२०, ८६८९००१२२०**

४. स्थापना दिवस मनाया- आर्यसमाज नई मण्डी, मुजफ्फरनगर, उ.प्र. में दि. २९ मार्च २०१७, चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को नवसृष्टि सम्वत् पर्व व आर्यसमाज का १४३वाँ स्थापना दिवस समारोहपूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम का संचालन मन्त्री आर.पी. शर्मा ने किया। अध्यक्षता बाबू राजपालसिंह चाहल ने की।

५. वेद प्रचार- आर्यसमाज मन्दिर, गंगाविहार कॉलोनी, ग्वालियर, म.प्र. ने वेद प्रचार, वार्षिकोत्सव एवं आर्यसमाज स्थापना दिवस दि. २९ व ३० मार्च २०१७ को मनाया। कार्यक्रम में स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती, नवसम्वतसर व वेदों की महिमा पर प्रकाश डाला। उपप्रधान श्री केशवसिंह परमार ने आभार व्यक्त किया।

६. बलिदान दिवस मनाया- आर्यसमाज मानसरोवर, न्यू सांगानेर रोड, जयपुर, राज. द्वारा २३ मार्च को मोहाना मण्डी रोड स्थित जी.एन. सैनी मैमोरियल कॉलेज ऑफ नर्सिंग के छात्रों ने संस्कार भवन में ८७वें बलिदान दिवस पर अमर हुतात्मा भगतसिंह को भावभीनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

७. आर्ष नववर्ष मनाया- आर्यसमाज नागदा, जि. उज्जैन में नवसम्वत्सर महोत्सव व आर्ष नववर्ष मनाया गया। कार्यक्रम में धर्माचार्य डॉ. पं. लक्ष्मीनारायण सत्यार्थी ने नवसम्वत्सर महोत्सव पर आयोजित देवयज्ञ के समापन पर अपने विचार व्यक्त किये। देवयज्ञ अग्निहोत्र से पूर्व ब्रह्मयज्ञ कर समारोह का शुभारम्भ किया, जिसमें यज्ञ के यजमान जगदीश पांचाल थे।

८. १०१ कुण्डीय यज्ञ- भारतीय नव सम्वत्सर २०७४ वैक्रमाब्द पर २८ मार्च २०१७ को आर्यसमाज श्रृंगारनगर, लखनऊ, उ.प्र. द्वारा १०१ कुण्डीय यज्ञ किया गया। इसमें लखनऊ नगर के सैकड़ों आर्य नर-नारियों ने भाग लिया तथा आहुतियाँ दीं। प्रत्येक वर्ष की भाँति चार व्यक्तियों को शाल ओढ़ाकर, माल्यार्पण करके सम्मानित किया गया। यज्ञ के संचालक डॉ. रूपचन्द्र दीपक रहे।

९. वार्षिकोत्सव मनाया- आर्यसमाज रामनगर, रुड़की, जनपद हरिद्वार, उत्तराखण्ड का वार्षिकोत्सव दि. ७ से ९ अप्रैल २०१७ को बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर रणवीरसिंह शास्त्री व भजनोपदेशक राजवीरसिंह महतौली पधारे।

चुनाव समाचार

१०. आर्यसमाज रावतभाटा, राज. के चुनाव में **प्रधान**- श्री योगेश आर्य, **मन्त्री**- श्री रमेशचन्द्र भाट, **कोषाध्यक्ष**- श्री शैलेश कुमार को चुना गया।

आर्य-साहित्य के प्रकाशन में क्रान्ति करने वाले श्री सत्यानन्द नैष्ठिक नहीं रहे

-डॉ. सुरेन्द्र कुमार (कुलपति गु. कां. वि., हरिद्वार)

आचार्य सत्यानन्द नैष्ठिक अब इस संसार में नहीं रहे। दिनांक ०२.०४.२०१७ को उन्होंने 'हिमालयन हॉस्पिटल, जौलीग्रांट' देहरादून में अन्तिम सांस ली। वे गत एक-दो वर्षों से यकृत् की व्याधि से सामान्यतया ग्रस्त थे, जो बढ़कर पिछले दो-तीन मास से गम्भीर हो गई थी। पन्द्रह-बीस दिन पूर्व उन्होंने चिकित्सा के लिए 'योगग्राम हरिद्वार' में प्रवेश लिया था। स्वास्थ्य दिनानुदिन सुधार की ओर अग्रसर था कि देहान्त से दो दिन पूर्व अचानक स्वास्थ्य बिगड़ गया। जब वे बेसुध होने लगे तो योगग्राम के प्रबन्धकों ने उनको आपात्कालीन चिकित्सा हेतु देहरादून भेजा, किन्तु डॉक्टर उनको बचा नहीं सके। लगभग ७८-७९ वर्ष की अवस्था में उनका निधन हो गया। उनकी इच्छा के अनुसार ३ अप्रैल को गुरुकुल झज्जर में उनका अन्तिम संस्कार हुआ। संस्कार के साथ ही वे स्मृतिशेष रह गये।

वे आर्यसमाज के नेता नहीं थे, अधिकारी भी नहीं थे, अपितु वे आर्यसमाज के सेवक थे, संघर्षशील व्यक्ति थे, संकल्प के धनी थे, लग्नशील थे। परिवार की परम्परा के अनुसार लगभग तीस वर्ष की अवस्था तक उन्होंने कृषि और पशुचारण का कार्य किया। आर्यसमाज के संपर्क से उन्हें एक दिन बोध हुआ कि निरक्षर रहते हुए जीवन व्यतीत करना मानव जीवन को निष्फल करना है। तब वे घर को त्यागकर ऐसे निकले कि फिर मुड़कर उन्होंने न घर की ओर देखा ओर न घरवालों की ओर। गुरुकुल घरोंडा, गुरुकुल सिंहपुरा, गुरुकुल झज्जर, गुरुकुल कांगड़ी आदि शिक्षा-संस्थानों में रहकर उन्होंने प्रथम कक्षा से लेकर आचार्य, एम.ए.(द्वय) और आयुर्वेदाचार्य तक शिक्षा प्राप्त की ओर साथ ही नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा लेकर आर्यसमाज की सेवा के लिए समर्पित हो गये और आर्य साहित्य के प्रकाशन के माध्यम से वे समाज के प्रचार-प्रसार में संलग्न हो गये। उन्हें आर्यसमाज के प्रचार की धुन थी।

सत्यानन्द जी ने आर्य-साहित्य के प्रकाशन में एक नयी क्रान्ति उपस्थित की। 'सत्यधर्म प्रकाशन' के नाम से उन्होंने अपना प्रकाशन स्वरचित 'नित्यकर्म एवं पञ्चमहायज्ञ विधि' नामक एक पुस्तक के प्रकाशन से आरम्भ किया और लगभग एक दर्जन स्वरचित तथा आर्य विद्वानों द्वारा रचित अनुपलब्ध दो सौ पुस्तकों का प्रकाशन अपने जीवनकाल में किया। उनके प्रकाशन से पूर्व आर्यसमाज में साधारण कागज पर साधारण साजसज्जा के साथ पुस्तकों का प्रकाशन होता था। उन्होंने सबसे पहले उत्तम कागज पर आकर्षणयुक्त साज-सज्जा के साथ आर्य साहित्य प्रकाशित करके नये इतिहास का सूत्रपात किया। उनके प्रकाशन को देखकर आर्यसमाज में उत्तम स्तरीय प्रकाशन की परम्परा आरम्भ हो गई। इस प्रकार सत्यानन्द जी आर्यसमाज में उत्तम प्रकाशन के प्रवर्तक के रूप में स्मरण किये जाते रहेंगे।

सत्यानन्द जी सच्चे गृहत्यागी थे। गृहत्याग करने के बाद उन्होंने घर से मोह सर्वथा त्याग दिया था। मुझे स्मरण है कि चालीसों वर्षों के सम्पर्क में उन्होंने न तो कभी अपने जन्म-स्थान की चर्चा की, न परिवार के सदस्यों की। चर्चा आरम्भ करने पर भी वे कोई उत्तर नहीं देते थे। आज के समाज में ऐसे विरक्त गृहत्यागी विरले ही मिलते हैं।

उन्होंने कंवरपुरा (कोटपुतली, राजस्थान) में आर्ष शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिए गुरुकुल भी खोला और संचालित किया, किन्तु योग्य अध्यापकों के अभाव में उसे बन्द करना पड़ा। यह कार्य उनकी ऋषि-भक्ति का प्रतीक था। आर्ष शिक्षा के प्रति उनकी श्रद्धा का द्योतक था।

इधर-उधर परिभ्रमण करते हुए उन्हें जो दक्षिणा मिलती थी, उस राशि से उन्होंने एक निजी बृहत् पुस्तकालय का निर्माण किया जिसमें प्राचीन दुर्लभ साहित्य का संग्रह था। बाद में उसका कुछ भाग गुरुकुल कुरुक्षेत्र को और अधिकांश पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार को प्रदान कर दिया था। उस पुस्तकालय की सहायता से अनेक विद्यार्थियों ने अपने शोध-प्रबन्ध पूर्ण किये। कुछ विद्यार्थियों को उन्होंने छात्रवृत्ति भी दी।

खोज करने पर ज्ञात हुआ कि सत्यानन्द जी के पिताश्री का नाम श्री रिखीराम था और उनका जन्मस्थान हरियाणा प्रान्त के जिला करनाल का कत्तलहेड़ी गाँव था। उनके निधन से आर्यसमाज में एक नि:स्वार्थ सेवी, ऐसे समर्पित आर्य का अभाव हो गया, जिसके जीवन का लक्ष्य आर्यसमाज ही आर्यसमाज था। उनको हार्दिक श्रद्धाञ्जलि।।

-कार्यकारी प्रधान, परोपकारिणी सभा।

हार्दिक श्रद्धाञ्जलि

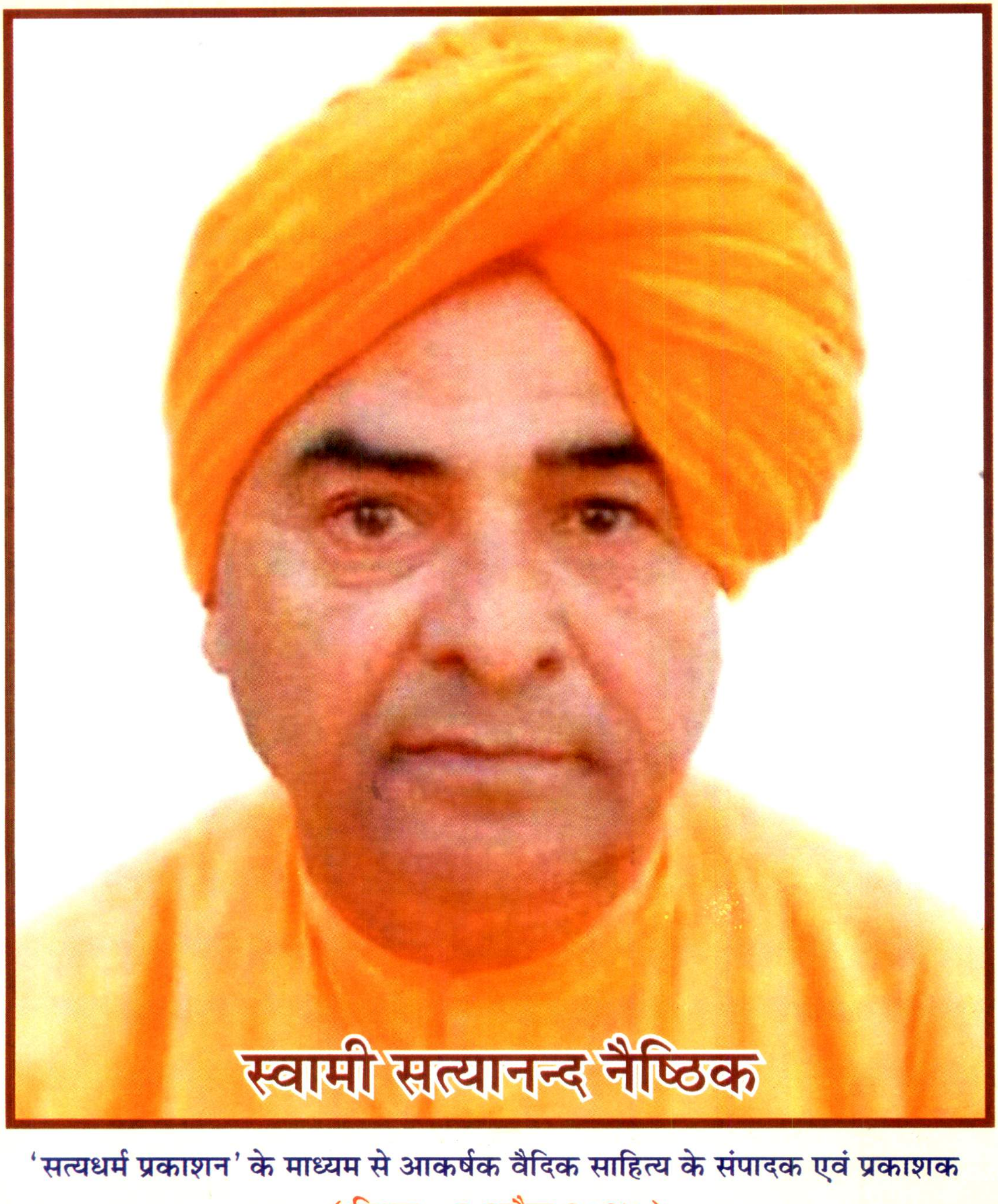

'सत्यधर्म प्रकाशन' के माध्यम से आकर्षक वैदिक साहित्य के संपादक एवं प्रकाशक

(निधन - २ अप्रैल २०१७)

परिचय-पृष्ठ संख्या ४१

आर जे/ए जे/80/2015-2017 तक प्रेषण : ३० अप्रैल, २०१७ आर.एन.आई. ३९५९/५९

'आचार्य डॉ. धर्मवीर अनुसंधान भवन'

परोपकारिणी सभा के अधिवेशन में ऋषि उद्यान स्थित गुरुकुलीय भवन का नाम
'आचार्य डॉ. धर्मवीर अनुसंधान भवन' रखा गया।

प्रेषकः
परोपकारिणी सभा
दयानन्द आश्रम, केसरगंज,
अजमेर (राजस्थान) ३०५००१

सेवा में,